नूतन वर्षाभिनन्दन 2015

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 65 | अंक : 7 | जनवरी, 2015 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

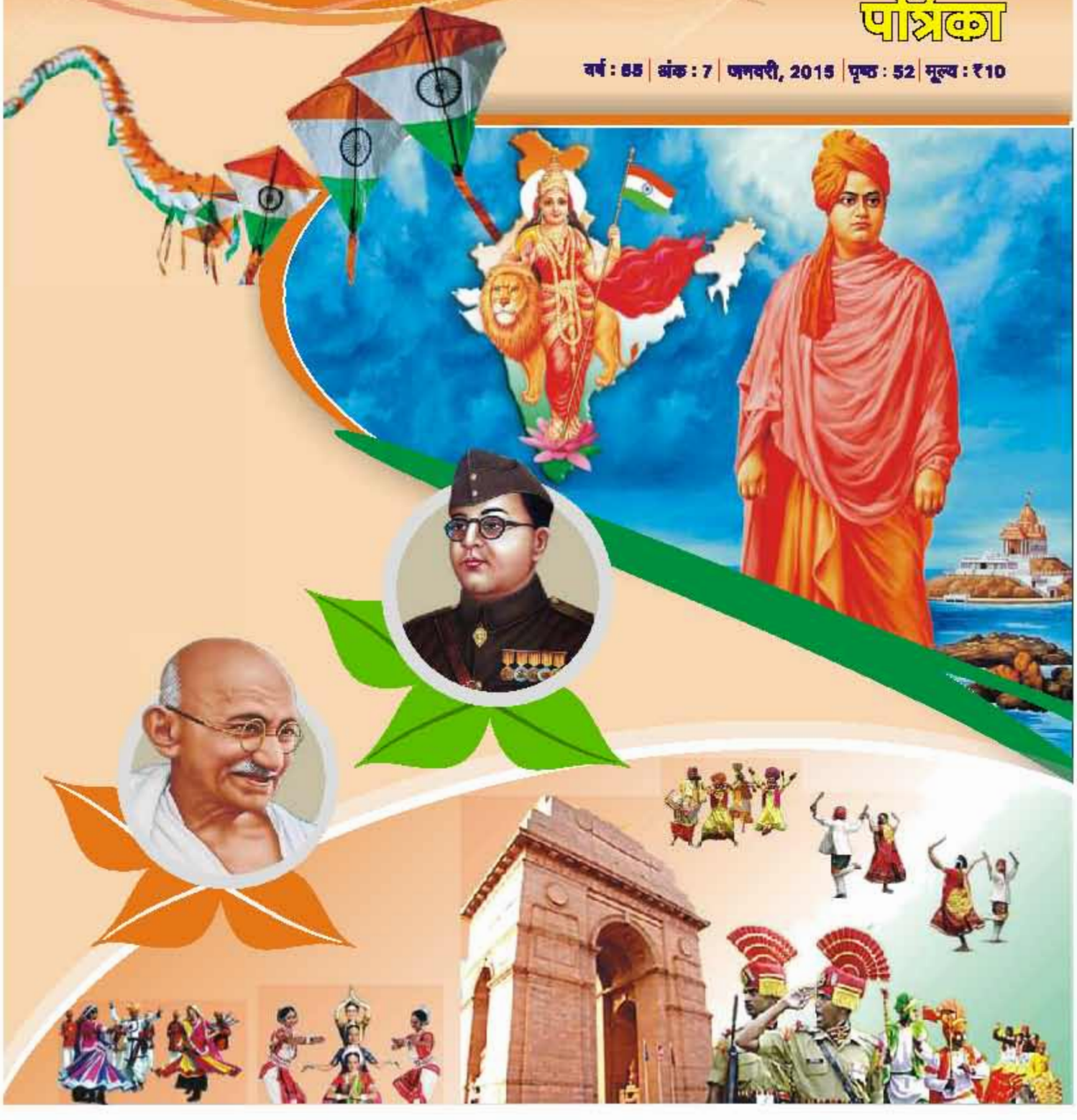

शिविरा, जनवरी, 2015
चित्र समाचार

जयपुर

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा आयोजित एकलव्य एवं मीरा पुरस्कार समारोह में पुरस्कृत विद्यार्थियों के साथ माननीय शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी (मध्य में), (बाएं) श्री दयाराम महरिया, सचिव एवं (दाएं) श्री अंतर सिंह नेहरा, निदेशक राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल।

जयपुर

रा.बा.उ.मा. विद्यालय, चौड़ा रास्ता, जयपुर की छात्राओं ने एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित जनसंख्या शिक्षा योजनान्तर्गत लोक नृत्य प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय, जयपुर और प्रान्त का गौरव बढ़ाया

सीकर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डाँडण का बोर्ड परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहने एवं विद्यालय में आदर्श शैक्षिक परिवेश के कारण ग्रामीणजन ने एक समारोह आयोजित कर प्रधानाचार्य श्री नागीरमल को कार एवं 22 शिक्षकों को चाँदी के मेडल भेंट कर सम्मानित किया।

बीकानेर

राजकीय मॉडल माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर, बीकानेर को मामाशाह श्री बजरंग लाल सारड़ा द्वारा वाटर कूलर भेंट किया गया।

जयपुर

तुर्की के आर्टिस्ट तुर्गट उकबैस के साथ रा.से.आ.ला.पो. मूक बधिर उ.मा.वि. जयपुर के ख्यातनाम चित्रकला योगेन्द्र सिंह नरुका व शिष्य।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 66 | अंक : 7 | पौष–माघ २०७१ | जनवरी, 2015

प्रधान संपादक
सुवालाल

●

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश भारद्वाज

●

सहायक
एस. के. सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाबोध : मेरा पृष्ठ

- शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा 5
  आलेख
- महासेतु थे स्वामी विवेकानन्द 6
  लक्ष्मी नारायण रंगा
- स्वामी विवेकानन्द के आर्थिक विचार 11
  डॉ. जमना लाल बायती
- विवेकानन्द नामकरण 12
  साधना गर्ग
- सत्य, शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी 13
  प्रह्लाद शर्मा
- मातृ–पितृ देवो भवः 14
  अचलचन्द जैन
- प्रकाश–स्तंभ बुझ गया 15
  पं. जवाहर लाल नेहरू
- सुभाषचन्द्र बोस के जीवन दर्शन में 'शिक्षा' 17
  नरेश शर्मा
- युवा वर्ग राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी 20
  जसवन्त सिंह चौहान
- लेखक का सच 21
  रूपनारायण काबरा
- पल–पल नूतन क्षण 32
  मोहन लाल जांगिड़
- बहुत पावन है मकर संक्रान्ति 34
  रामदेव बाबू यादव
- भारत ही तन–हृदय तिरंगा 35
  उमेश चन्द्र गुप्ता
- आदर्श शिक्षक का गुरुत्व 37
  रामचन्द्र स्वामी
- वास्तविक शक्ति 38
  स्वामी विवेकानन्द
- आओ, सार्थक रंग भरें जीवन में 41
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- शिक्षक अधिगम का दर्पण है गृहकार्य 42
  सुनीता चावला
- स्वाधीन भारत की तरुण पीढ़ी अपनी कर्मा पहिचाने 43
  द्वारकेश भारद्वाज
- माफ कर देना हमें, ए बच्चों! 45
  सुमन भाटिया

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- नागौर : एक परिचय 44
  रानीम परिहार

उन्नयन

- आदेश–परिपत्र 22–31
- शिविरा पंचांग 33
- मेरे अनुभव–मेरे विचार 39
- एपट 46

हम चाहें एक नीति

- वीर हृदय! दृढ़ रहो कभी मत विचलित होना 16
  स्वामी विवेकानन्द

पुस्तक समीक्षा 47–49

- तीजी रूप : पवन पहाड़िया
  समीक्षक : डॉ. कृष्णा आचार्य
- फ़ने तालीम और नफ़्सियात :
  अकमल नईम सिद्दीकी
  समीक्षक : डॉ. मोहम्मद हुसैन
- भारतीय संस्कृति के उन्नायक : डॉ. सत्यकाम महरिया
  समीक्षक : जानकी नारायण श्रीमाली
- सांवत सतसई : सांवतराम कासणियां 'प्रेमी'
  समीक्षक : शंकरसिंह राजपुरोहित

प्रतिध्वनि

- स्वामी विवेकानन्द और राजस्थान 50

आवरण :
अभिलाषा कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

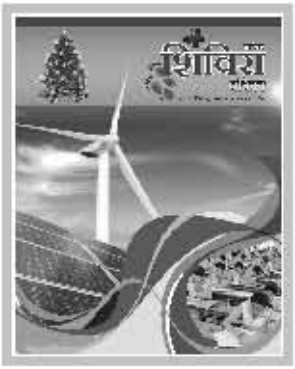

▼ **विचारार्थ**

"हमें ऐसे मानवों का निर्माण करना है जिनके चेहरों पर आत्मा, बुद्धि में पांडित्य, शरीर में बल, मन में प्रचण्ड इच्छाशक्ति, जीवन में स्वाभिमान, हृदय में शिवा, प्रताप, शुभ, प्रह्लाद की जीवन गाथाएँ अंकित हों और जिन्हें देखकर महापुरुषों की स्मृतियां जाग्रत हो उठें।"

–स्वामी विवेकानन्द

पाठकों की बात

- हमारे विद्यालय में शिविरा मासिक पत्रिका नियमित रूप से आती है। दिसम्बर 2014 की शिविरा हमारे प्रधानाध्यापक जी व स्टाफ ने मुझे पढ़कर सुनाई। माध्यमिक–शिक्षा निदेशक और प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक महोदय के पदभार ग्रहण व परिचय की जानकारी मिली। साथी अध्यापकों की दृष्टि से मुख पृष्ठ बहुत ही सुंदर कलेवर लिए है। सम्पूर्ण पत्रिका पाठकों की बात से लेकर प्रतिध्वनि तक उत्तम व सारगर्भित विचारधारा प्रवाहित करती हुई प्रतीत होती है। दिशाकल्प में शिक्षक की संवेदनशीलता तथा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की शांति व भाईचारा दृष्टि प्रेरणाप्रद लगे।

–विनय सिंह (नेत्रहीन शिक्षक)
रा.उ.प्रा.वि. मायलों की ढाणी, फलोदी (जोधपुर)

- दिसम्बर, 2014 के अंक में "दिशाकल्प–मेरा पृष्ठ" में माननीय निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री सुवालाल के विचारों ने मेरी अंतरात्मा को छू लिया। वास्तव में निदेशक महोदय के विचारों के अनुसार शिक्षक यदि संवेदनशील होकर शिक्षण कार्य करें और समाज में अपनी विशिष्ट स्थिति को समझते हुए कर्तव्यों का निर्वहन करें तो समाज में मान सम्मान बढ़ने के साथ ही राजस्थान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का पथ प्रशस्त कर सकेंगे। –राजूराम खदाव
प्रधानाध्यापक, रा.मा. विद्यालय, गारासनी (जोधपुर)

- 'पत्रों का संसार' के अन्तर्गत वरिष्ठ सम्पादक श्री ओमप्रकाश सारस्वत जी के विचारों को पढ़कर प्रसन्नता हुई। मोबाइल के युग में पत्र लेखन की ओर प्रेरित करने के लिए हृदय से आभार।

–सत्यनारायण नागोरी
बागपाता का चौक, केलवाड़ा–313325

- दिसम्बर 2014 अंक में "शांति और भाईचारे की डगर पर" आलेख पढ़ा। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के ऐतिहासिक भाषण के अंश ज्ञानवर्द्धक और समाज हितकारी हैं। माननीय पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी की कविताएं भी राष्ट्र निर्माण में प्रेरणादायक हैं। –श्रीमती दक्षा दीक्षित
व.अ., रा.मा.वि. सेमलिया पण्ड्या (सागवाड़ा)

- दिसम्बर 2014 शिविरा अंक में 'दिशाकल्प' स्तम्भ में निदेशक महोदय का संवेदनशील होकर कार्य करने का संदेश अनुकरणीय है। शिक्षकों एवं कर्मचारियों को इसका गहरा अर्थ समझना चाहिए। गीता के बारे में दी गई जानकारी मनन करने योग्य है। नए वर्ष 2015 की हार्दिक शुभकामनाएं।

–हेतराम मील, स. कार्या. अधीक्षक
राज.बा.उ.मा.वि. अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)

- शिविरा दिसम्बर–2014 में निदेशक महोदय ने शिक्षकों को उनके कर्तव्य की याद दिलाते हुए 'संवेदनशील होकर करें कार्य' दिशाकल्प स्तम्भ में शिक्षा का महत्व बताया है। साथ ही शिक्षा प्रशासन अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील की है कि वे योजनाबद्ध ढंग से शिक्षकों की समस्याओं का समाधान संवेदनशील होकर करें। सारांश में कह सकते हैं पूरा दिशाकल्प ही 'गागर में सागर' भरने जैसा है।

–देवकी नन्दन शर्मा, भगेगा

- दिसम्बर 2014 अंक में निदेशक जी ने शिक्षकों से संवेदनशील हो शिक्षण कार्य करने हेतु दिशा निर्देशित किया है। संवेदनशीलता उच्चमत मानवीय गुण है मनस्वी पं. मदनमोहन मालवीय व माननीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन 25 दिसम्बर पर प्रस्तुत सामग्री प्रशंसनीय है। संपादक मंडल को बधाई।

–टेकचन्द्र शर्मा
पूर्व शिक्षाधिकारी, झुन्झुनूं

नव वर्ष 2015 की हार्दिक शुभकामनाएं

- हमारे नए निदेशक महोदय श्री सुवालाल जी का दिशाकल्प मन को अन्दर तक छू गया। आपने शिक्षकों को संवेदनशील होकर कार्य करने का संदेश दिया जो अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सामयिक है। शिक्षकों के लिए उत्तम उपमा देते हुए कर्तव्य पालन की जो अपेक्षा की है वह प्रशंसनीय है।

–करणीदान कच्छावा
प्राध्यापक, रा.फोर्ट उ.मा.वि., बीकानेर

- शिविरा के दिसम्बर 2014 अंक में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का भाषण दिल को छू गया। श्री गुरमीत सिंह बरार ने पत्रों के महत्व के बारे में बहुत ही सटीक लिखा है। उन्हें बहुत बधाई। शिविरा इसी प्रकार विभाग को प्रेरणा देती रहे, यही मनोकामना है। शिविरा प्रत्येक शिक्षक को पढ़नी चाहिए। –रतनलाल शास्त्री
सिणधरी (बाड़मेर)

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा

सुवालाल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

शिविरा पत्रिका के माध्यम से नव वर्ष 2015 के शुभागमन अवसर पर शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को बधाई एवं शुभकामनाएं। नूतन वर्ष आप सभी के लिए मंगलकारी एवं यशप्रदायक हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक पूर्ण मनोयोग से कार्य करते हुए इस वर्ष बेहतर परीक्षा परिणाम देंगे। मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं सर्वतोमुखी सफलता के लिए पुनः कामना करता हूँ।

इस माह में स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती है। यह दिवस हम युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। शिविरा के इस अंक में विवेकानन्द जी के जीवन एवं दर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। आशा है कि उसका अध्ययन कर हम विवेकानन्द के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लेंगे। इस अवसर पर राष्ट्र निर्माता शिक्षकों, संस्था प्रधानों एवं विद्यार्थियों से मेरी निम्न अपेक्षाएं हैं–

1. विद्यार्थी, समयपरक/अर्द्धवार्षिक परीक्षा के अंकों के आधार पर अपने शैक्षणिक स्तर का स्वयं आकलन कर आगामी तीन माह की अध्ययन योजना बना कर कठिन परिश्रम करें।
2. विद्यार्थी, विज्ञान एवं अन्य प्रयोग आधारित विषयों में पर्याप्त प्रायोगिक कार्य करें।
3. संस्था प्रधान, कार्यरत अध्यापकों की अविलम्ब बैठक आहूत कर अध्यापकों एवं विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाएं तथा कठिन विषयों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं लगाने हेतु योजना बनाकर पालना सुनिश्चित करें।
4. संस्था प्रधान, शाला प्रबन्धन एवं विकास समिति की बैठक बुलाकर मनोनीत सदस्यों एवं अभिभावक प्रतिनिधियों को अतिरिक्त शैक्षणिक व्यवस्था हेतु जानकारी उपलब्ध कराकर, स्थानीय योग्यताधारक युवक/युवती को शाला प्रबन्धन कोष से रखकर कठिन विषयों का बकाया शिक्षा पाठ्यक्रम पूर्ण कराने की दिशा में प्रभावी कार्यवाही करें।
5. संस्था प्रधान, विद्यालयों के एकीकरण के पश्चात् प्राप्त अतिरिक्त मानव संसाधनों के आदर्श एवं अधिकतम उपयोग की दिशा में प्रभावी कार्यवाही करें।

शिक्षक विकास के सूत्रधार होते हैं। विद्यार्थियों के लिए शिक्षण का औपचारिक कार्य करते हुए अनौपचारिक रूप से उनमें उत्तम संस्कारों का बीजारोपण शिक्षक ही करते हैं। श्रम के प्रति साधना एवं जन-जन के प्रति सद्भावना के मंगल भाव बच्चे अपने गुरुजन से ही सीखते हैं और ये संस्कार एवं भाव उनके सफल व सुखदायी भविष्य के आधार बनते हैं। ऋषियों के पावन देश भारत में ऐसे गुणी शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा रही है जिसके उत्तराधिकारी आज की पीढ़ी के शिक्षक हैं। उन्हें अपनी इस शानदार विरासत पर गर्व करते हुए श्रेष्ठ आचरण करना चाहिए।

इस माह में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्मदिन एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का शहादत दिवस भी है। हमें इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर उत्तरदायी नागरिक बनने का संकल्प लेना चाहिए। शिक्षा विभाग एवं शिक्षक बन्धुओं की इस दिशा में अग्रिम भूमिका होती है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान के शिक्षक अपना यह उत्तरदायित्व निभाने में सदैव आगे रहेंगे।

शुभकामनाओं के साथ...

(सुवालाल)

> “ऋषियों के पावन देश भारत में गुणी शिक्षकों की उज्ज्वल परम्परा रही है जिसके उत्तराधिकारी आज की पीढ़ी के शिक्षक हैं। उन्हें अपनी इस शानदार विरासत पर गर्व करते हुए श्रेष्ठ आचरण करना चाहिए।”

विवेकानन्द दर्शन

महासेतु थे स्वामी विवेकानन्द

❑ लक्ष्मी नारायण रंगा

भारत के "विश्वगुरु", अमेरिका के "योद्धा संन्यासी", रोमाँरोलाँ के "परमात्मा की अनुपम संगीत रचना" महर्षि अरविन्द के 'अवेकनिंग सोल ऑफ इन्डिया' और स्वामी श्री रामकृष्ण का 'बिना खोट का खरा सिक्का' थे स्वामी विवेकानन्द। उनके मानवतावादी, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारों से अभिभूत होकर महर्षि अरविन्द ने कहा-"**हम कहते हैं-देखो! मातृभूमि की जाग्रत आत्मा में, विवेकानन्द आज भी जीवित है। भारत माता की सन्तानों के हृदय में विवेकानन्द आज भी अधिष्ठित हैं।**" महर्षि का यह निष्कर्ष सत्य ही नहीं, शाश्वत है। जब तक भारत है, उसका अध्यात्म है, विवेकानन्द अमर रहेंगे। विवेकानन्द भारतीय अध्यात्म, दर्शन और संस्कृति के महासेतु थे। श्रीमती एनीबिसेंट ने उन्हें भारत के सूर्य और सिंह स्वरूप स्वीकारा। बाल गंगाधर तिलक ने विवेकानन्द को 'अति मानव' संबोधन दिया। महात्मा गांधी ने विवेकानन्द को पढ़-समझने के बाद कहा- "इससे मेरा देश के प्रति प्रेम हजार गुणा बढ़ गया।" चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने स्वीकारा-"**उनके (विवेकानन्द के) बिना हम अपना धर्म गँवा चुके होते तथा अपनी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर पाते। हम विवेकानन्द के ऋणी हैं।**" श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सम्मान दर्शाते हुए कहा-"वे स्वामी विवेकानन्द ही थे, जिन्होंने नये भारत के पुनर्निर्माण हेतु हमें मार्ग एवं उपाय बताये। "लालबहादुर शास्त्री ने अपनी श्रद्धा यों प्रकट की "उनका प्रभाव मेरे मस्तिष्क पर इतना ज्यादा था कि मेरी समझ पूरी तरह बदल गई है। मैं जीवन को एक अलग नजरिये से देखने लगा हूँ।" सुभाषचन्द्र बोस ने विवेकानन्द को "अपने प्रकार का योद्धा" कहा। लाहौर में विवेकानन्द के प्रभाव एवं स्पर्श से प्रोफेसर तीर्थराम गोस्वामी-स्वामी रामतीर्थ बन गए। जयप्रकाश नारायण ने स्वीकारा "हमारे महान् देश के इतिहास में उनके समक्ष शायद महान्

शंकराचार्य के सिवाय कोई दूसरा दिखाई नहीं देता।" विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने रोमाँरोलाँ से कहा था, "**यदि आप भारत को समझना चाहते हैं, तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए, उनमें सब कुछ विधेयात्मक है, निषेधात्मक कुछ भी नहीं।**"

आज के भौतिकतादग्ध एवं आतंक व तनावग्रस्त विश्व की समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए विश्वकवि की बात को हम इस तरह प्रतिपादित कर सकते हैं कि अगर आप विश्व तथा उसकी समस्याओं को समझना तथा उनका सकारात्मक समाधान चाहते हैं, तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए। वस्तुतः वेदान्तयुक्त मानवतावाद के इस उद्घोषक विवेकानन्द ने मानव-जाति, राष्ट्र एवं विश्व-कल्याण के लिए, जो चिन्तन-मनन और कर्म किया, वह कल भी सार्थक था, आज भी समयानुकूल है और कल भी, सदियानुकूल रहेगा।

इस भविष्यद्रष्टा एवं क्रान्तिसृष्टा ने चालीस वर्ष से भी कम उम्र और दस वर्ष के कार्यकाल में मानव-जाति को शाश्वत विचार एवं सार्वकालिक विचारधारा प्रदान की है, उसे विकसित करने व क्रियान्वित करने में अभी विश्व को कई शताब्दियां लगानी पड़ेगी। इन्हीं गुणों का मूल्यांकन करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू ने 'डिस्कवरी ऑफ इन्डिया' में लिखा- "प्राचीन भारत के मूल में पले तथा भारतीय परम्परा के प्रति गर्वान्वित विवेकानन्द का दृष्टिकोण जीवन की समस्याओं के प्रति अति आधुनिक था और वे प्राचीन तथा अर्वाचीन भारत के बीच एक सेतु समान थे।" वास्तव में विवेकानन्द पूर्व एवं पश्चिम, आध्यात्मिकता व भौतिकता, पुरातन व अर्वाचीन तथा सैद्धान्तिकता एवं व्यावहारिकता के बीच विवेक-सेतु व मिलन-सेतु थे।

विवेकानन्द भारतीय सभ्यता-संस्कृति एवं अध्यात्म के साधक थे। वे विश्व-मानवता, विश्व-प्रेम, विश्व-बंधुत्व के पुजारी थे। विवेकानन्द सर्व-धर्म-समभाव एवं सद्भाव के अप्रतिम प्रचारक थे, साम्प्रदायिक एकता के उपासक थे। वे आध्यात्मिक एवं नैतिक गुणों एवं मूल्यों के संदेशवाहक थे। वे राष्ट्रीय गौरव, जातीय स्वाभिमान, समानता एवं स्वतंत्रता के सिंहनाद थे। स्वामी जी देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक-चेतना तथा राष्ट्रीय उत्थान के क्रान्तिदृष्टा थे। वे कट्टरता, रूढ़िवादिता, संकीर्णता एवं अन्धविश्वासों के प्रबल विरोधी थे। वे जात-पांत, छुआछूत, बाल-विवाह,दहेज, नशाखोरी आदि कुप्रथाओं के कट्टर शत्रु थे। विवेकानन्द अदम्य साहस, निर्भयता एवं आत्म-निर्भरता के उपदेशक थे। वे दीन-हीन, दलित, निरक्षर एवं गरीब जनता के मसीहा थे। नारी उत्थान के प्रवक्ता थे

विवेकानन्द।

विवेकानन्द ने गुलामी की बेड़ियों में जकड़े, अज्ञान के अन्धकार में डूबे, आत्महीनता की पराकाष्ठा तक पहुँचे गुलाम देश को स्वतंत्रता का मूल्य समझाया, सोये आत्मगौरव को जगाया। उनके अथक् प्रयासों से परतन्त्र एवं पद-दलित भारत में आत्मगौरव की चेतना जाग्रत हुई और अपनी महान सभ्यता एवं संस्कृति तथा प्राचीन गौरवशाली परम्परा को जानने की भावना जागी। उन्होंने विश्व को भारत की महान्, सनातन एवं मानवीय तथा सार्वकालिक सभ्यता-संस्कृति तथा मानवता, अध्यात्म एवं दर्शन से परिचित कराया। विवेकानन्द की राष्ट्रवादी तथा समाजवादी विचारधारा ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए वैचारिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार की। यदि विवेकानन्द नहीं होते तो भारत शायद एक लम्बे समय तक परतन्त्र, पराश्रयी, पद-दलित और आत्महीनता की स्थिति में रहता। उनके ओजस्वी एवं ऊर्जावान विचारों ने जन-जन में समानता, स्वतन्त्रता व बंधुत्व की भावना संचेतन कर दी। उनके मानव-प्रेम, देशभक्ति, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक एवं दार्शनिक विचारों ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महर्षि अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, सुभाषचन्द्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू आदि महापुरुषों को बहुत गहराई से प्रभावित किया था।

इस महान् विचारक ने भारत के अध्यात्म, अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता, सर्वधर्म समभाव, मानव-प्रेम, समन्वय एवं सहयोग की भावना तथा अद्वैत दर्शन से पश्चिम को परिचित कराया और पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान से, प्रबन्ध-व्यवस्था एवं भौतिक-उपलब्धियों से भारत को पहचान कराके दोनों के बीच मैत्रीपूर्ण एवं सर्जनात्मक सेतु स्थापित करने की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। **विवेकानन्द पूर्व-पश्चिम की सभ्यता के बीच, भौतिकता-अध्यात्म के बीच और भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक विवेक-सेतु की तरह प्रतिष्ठित हैं।**

विवेकानन्द बहुप्रतिभा के धनी थे। वे चिन्तक, तार्किक, दार्शनिक, उपदेशक, व्याख्याकार, प्रखरवक्ता, संगीतज्ञाता, कवि, खेलप्रेमी, शरीर-सौष्ठव में रुचिशील, अध्यात्म में प्रवृत्त तो थे ही, साथ ही देशप्रेमी, समाज-सुधारक, गरीबों के मसीहा, युवाशक्ति-उद्बोधक भी थे। अज्ञान, गरीबी,शोषण तथा गुलामी के गर्त में छटपटाते दीन-हीन-दलित समाज के लिए वे करुणा-सागर थे। उन्होंने सोये भारत को जगाने के लिए सिंहनाद किया। उन्होंने भारत तथा विश्व के लिए जो चिन्तन-मनन किया और गंभीर समस्याओं के सकारात्मक समाधान सुझाए, वे उनके विदेशों तथा भारत में दिए गए भाषणों में प्रतिध्वनित होते हैं। विचारों के महासागर में से कतिपय अमृत बून्दें प्रस्तुत हैं।

विवेकानन्द का आध्यात्मिक-फलक बहुत व्यापक था। उन पर धर्म विशेष का लेबल चस्पा करने वाले गौर फरमायें- **''मैं मुसलमानों के साथ मस्जिद जाउंगा, ईसाइयों के साथ गिरजे में जाकर क्रूस-ईसा के सामने घुटने टेकूंगा, बौद्धमन्दिर में प्रवेश कर बुद्ध और संघ की शरण लूंगा और अरण्य में जाकर हिन्दुओं के पास बैठ ध्यान में निमग्न हो, उनकी भांति सबके हृदय को उद्भाषित करनेवाली ज्योति के दर्शन करने में सचेष्ट होउंगा। केवल इतना ही नहीं, जो पीछे आएंगे, उनके लिए भी हम हृदय उन्मुक्त रखेंगे।''** स्पष्ट है कि आज हम जिस सर्व-धर्म समभाव की बातें करते हैं, उसे तो विवेकानन्द ने अपने जीवन में ढाल ही लिया था। उन्होंने सभी धर्मों का मर्म समझ लिया था। उन्होंने ससम्मान कहा, ''संसार की यह आध्यात्मिक अनुभूति एक अद्भुत पुस्तक है। बाईबिल, वेद, कुरान तथा अन्य धर्मग्रन्थ समूह मानो उसी पुस्तक में से एक-एक पृष्ठ हैं, और उसके असंख्य पृष्ठ अभी भी अप्रकाशित हैं। मेरा हृदय उन सबके लिए उन्मुक्त रहेगा। सभी धर्मों एवं भावी धर्मों के प्रति उनका दृष्टिकोण कितना व्यापक, सम्मानजनक तथा स्पष्ट था। आज का युग ऐसे ही दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दे रहा है।''

हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख-ईसाई-पारसी आदि सभी धर्मों के अनुयायी तथा पाश्चात्य देशों के नागरिक उनके मित्र या सहयोगी थे। वे सबके साथ समान व्यवहार करते थे-सब का सम्मान करते थे। वे दलितों-अछूतों के यहां खान-पान करते थे तथा ईसाइयों व मुसलमानों के यहां भोजन करते थे। वे अपने देश के दुःखी-पीड़ित लोगों के लिए जितने चिन्तित रहते थे, उतने ही चिन्तित रहते थे- अफ्रीका के निग्रोज के लिए। उनके लिये मानव ही ईश्वर था। वे मानव को रंग-रूप, जाति, राष्ट्र, धर्म, नस्ल के दायरों में नहीं बाँटते थे।

भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म के इस अग्निपुत्र ने मानवता की इस अमूल्य निधि का पुनरुत्थान एवं विश्व-स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने के लिए अथक प्रयास किए। अपनी मातृभूमि तथा उसकी महान सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्पराओं के लिए कितना सम्मान तथा साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता तथा युद्ध-जर्जरित पीड़ित मानवता के लिए कितनी पीड़ा थी, यह 11 सितम्बर, 1893 के दिन विश्व-धर्म-परिषद् शिकागो में दिए गए युगान्तकारी भाषण से स्पष्ट परिलक्षित हो जाता है। उन्होंने आर्ट इन्स्टीट्यूट के विशाल सभाभवन में सात हजार श्रोताओं तथा विश्व के समस्त धर्मों के प्रतिनिधियों के समक्ष सिंहनाद किया, **''अमेरिका निवासी बहिनो एवं भाइयो।'' अमेरिकावासियों के लिए यह सम्बोधन पूर्णतया नया तथा आह्लादकारी था। वे सभी भावविभोर होकर उठ खड़े हुए और एक लम्बे समय तक तालियां बजाते ही रहे।** विवेकानन्द ने आगे कहा-''...संसार के प्राचीन महर्षियों के नाम पर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ तथा सब धर्मों की मातास्वरूप हिन्दू धर्म एवं भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के लाखों-करोड़ों हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद प्रकट करता हूँ। ...मुझे ऐसे धर्मावलम्बी होने का गौरव है, जिसने संसार को ''सहिष्णुता'' तथा ''सब धर्मों को मान्यता प्रदान'' करने की शिक्षा दी। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, अपितु समस्त धर्मों को सच्चा मानकर ग्रहण करते हैं। ...मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों व धर्मों के बहिष्कृत मतावलम्बियों को आश्रय दिया।''

इसी भाषण में उन्होंने धर्मान्धता एवं कट्टरता का प्रबल विरोध करते हुए जिस विश्व-शान्ति, विश्व-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की कल्पना की, वह आज ही नहीं, भावी

सदियों के लिए भी सन्दर्भित एवं प्रेरक सिद्ध होगी-''साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं, बारम्बार धरती को मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को विनष्ट करती रहीं हैं तथा समस्त देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि वे वीभत्स दानवी न होतीं, तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका भी समय आ गया है और मैं आन्तरिक रूप से पूर्ण आशा करता हूँ कि आज सुबह जो घंटे इस सभा के सम्मान में बजाये गये, वे समस्त धर्मान्ध कट्टरताओं, तलवार या लेखनी के बल पर किए जाने वाले समस्त अत्याचारों तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारस्परिक कटुताओं के लिए मृत्यु-नाद सिद्ध होंगे।'' राष्ट्रभक्त एवं मानवता-प्रेमी विवेकानन्द के इस भाषण को सुनने के बाद तो अमेरिका के रूप में पाश्चात्य सभ्यता, भारतीय-संस्कृति के सम्मुख नत-मस्तक हो गई।

19 सितम्बर, 1893 को विवेकानन्द ने सार्वभौम धर्म पर प्रकाश डाला-**''यदि कभी कोई सार्वभौमिक धर्म होना है, तो वह किसी देश या काल से सीमाबद्ध नहीं होगा, वह असीम ईश्वर की तरह ही असीम होगा। ...जो न तो ब्राह्मण होगा, न बौद्ध, न ईसाई, और न इस्लाम, वरन् इन सबकी समष्टि होगा।''** इस प्रकार नई सदी के लिए मंगल-स्वर झकृंत किये थे, विवेकानन्द ने। एक ऐसे धर्म की कल्पना की थी, जिसकी आज हमें और आने वाली अनेक पीढ़ियों को जरूरत महसूस होगी। 27 दिसम्बर, 1893 को उन्होंने कहा-**''...यदि कोई ऐसा स्वप्न देखे कि कोई विशेष धर्म समय आने पर एक मात्र धर्म हो जाएगा अथवा कोई विशेष धर्म ही ईश्वर-प्राप्ति का एकमात्र उपाय है और दूसरे धर्म भ्रान्त हैं, तो वास्तव में वे दया के पात्र हैं। ...प्रत्येक जाति, प्रत्येक धर्म दूसरों के साथ भावों का आदान-प्रदान करेगा, परन्तु प्रत्येक अपनी-अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करेगा और अपनी अन्तर्निहित शक्ति के अनुसार उन्नति की ओर अग्रसर होगा। आज से सभी धर्मों के झण्डों पर अंकित कर दो-''युद्ध नहीं-सहायता'', ''ध्वंस नहीं, -परभाव ग्रहण'', ''भेद-द्वन्द्व नहीं -सामंजस्य एवं शान्ति।'' कितने दूरदर्शी एवं उदारमना थे विवेकानन्द।** विश्वधर्म सभा में कुल 17 सत्र आयोजित हुए, उनमें से 6 सत्रों में स्वामीजी ने भाषण भी दिए और सवालों के जवाब भी दिए।

विवेकानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व असाधारण एवं अत्याधुनिक था। उनके सोच में प्राच्य एवं पाश्चात्य तथा आदर्शवाद एवं व्यावहारिकता का संतुलित मिश्रण था। उनके विचारों में दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, बौद्धिकता, एवं राष्ट्रप्रेम तथा दलितों के प्रति प्यार हिलोरें लेता दृष्टिगत होता है। उनके चिन्तन का प्रसार आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनेक क्षेत्रों तक था। उनकी एकमात्र धुन थी-सत्य की खोज तथा मानव-कल्याण। विवेकानन्द ने महान् ''वेदान्त-दर्शन'' का विकास एवं प्रसार किया था। वेदान्त के मुताबिक भौतिक शिक्षा को ही अपने सूक्ष्मतमतलों एवं स्तरों तक जारी रखना आध्यात्मिक शिक्षा है। उन्होंने वेदान्तिक मानववाद के दर्शन पर बल दिया। उनका निष्कर्ष था कि एक व्यावहारिक सार्वभौम दर्शन के आधार पर ही विश्व-शान्ति एवं सहिष्णुता का विकास हो सकता है। वे एक नवीन मानव, नवीन भारत एवं नवीन विश्व रचना चाहते थे।

विवेकानन्द के विचार सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपने भाषणों, प्रवचनों, उपदेशों, संलापों, पुस्तकों, पत्रों, कविताओं तथा प्रश्नोत्तरों आदि में विभिन्न विषयों पर जो प्रेरक एवं चिन्तनपरक व मौलिक विचार अभिव्यक्त किए, वे स्तुत्य हैं। भौतिकतान्ध पाश्चात्य जगत् को उनकी चेतावनी आज भी उतनी ही सत्य हैः ''सावधान! मैं दिव्य दृष्टि से देख रहा हूँ, सारा पाश्चात्य जगत एक ज्वालामुखी पर स्थित है। वह किसी भी समय आग उगलकर पाश्चात्य जगत का विनाश कर सकता है।'' ऐसी आग भड़की, दो विश्व महायुद्ध हुए, भयंकर विनाश हुआ और आज भी भौतिकता की आग विश्व के अनेक देशों को झुलसा रही है। ऐसे में विवेकानन्द की वाणी और सार्थक हो जाती है-''अभी भी यदि तुम सावधान नहीं हो जाओगे, तो आगामी वर्षों में तुम्हारा नाश अवश्यम्भावी है।'' कितना सटीक कहा स्वामी जी ने।

भारत के पतन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय समाज के पतन का मुख्य कारण है- जात पाँत, साम्प्रदायिक-संकीर्णता, छुआछूत, श्रद्धा का अभाव, पाश्चात्य भौतिक सभ्यता के प्रति अंधप्रेम, भ्रष्टाचार, बेईमानी, हीनता की भावना, धर्म की उपेक्षा, संकीर्ण मनोवृत्तियां, मौलिकता एवं साहस की कमी, शारीरिक विकास की कमी, अशिक्षा, गरीबी आदि। इतने वर्ष पूर्व कहा गया उनका यह कथन आज भी कितना सत्य लगता है। उनके मानवतावादी विचारों की श्रेष्ठता दृष्टव्य है, **''मनुष्य समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ है, सारे देवताओं में श्रेष्ठ है, उससे श्रेष्ठ कोई नहीं। देवताओं को भी फिर से धरती पर नीचे आना पड़ेगा और मनुष्य शरीर धारण कर मुक्ति प्राप्त करनी होगी। केवल मनुष्य ही पूर्णता प्राप्त करता है, देवताओं तक के भाग्य में यह नहीं है। ...मनुष्य को पापी कहना पाप है, यह कहना मानव-स्वरूप पर लांछन है।** ...मानव स्वभाव की महिमा कभी न भूलो। हम सब सर्वोच्च ईश्वर हैं... मैं वह अपार सागर हूँ, जिसमें ईसा, बुद्ध आदि केवल तरंगें मात्र हैं।'' भारत के मानव तो उनकी दृष्टि में अमरता-पुत्र, ऋषि-सन्तान और श्रेष्ठ-मानव हैं। यह भारत की अनमोल थाती है।

धार्मिक दृष्टि से विवेकानन्द की अवधारणा बहुत ही स्पष्ट एवं व्यापक थी। उनका दृष्टिकोण पूर्णरूपेण समन्वयकारी था। यह बात सही है कि उन्हें भारत के अध्यात्म एवं धर्म पर अत्यधिक गर्व था, परन्तु वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने भारतीय धर्मों में फैले ढोंग, असहिष्णुता, कट्टरता, पाखण्ड और पतनशील, विचारों का डटकर विरोध किया। उन्होंने कहा, **''मैं उस धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता, जो विधवा के आँसू पोंछने या अनाथ को रोटी देने में असमर्थ है।'' ''जब तक ''मत छुओवाद'' तुम्हारा धर्म है और रसोई के बर्तन तुम्हारा ईश्वर है, तब तक तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो**

सकती।'' वे मानव-मानव के बीच भेदभाव, छुआछूत करने वाले धर्म और ईश्वर को नकारते थे। दरिद्रनारायण ही उनका ईश्वर था-दरिद्र देवो भवः- मूर्खों देवो भवः। वे दीन-हीन दलित के दुःखों-अभावों से बहुत पीड़ित थे। करुणा विगलित होकर उन्होंने कहा-इन स्वदेशवासियों के उत्थान के बदले मुझे लाख बार नरक जाना पड़े, तो मैं सहर्ष तैयार हूँ। एक व्यक्ति की वेदना काम करने के लिए मैं सहस्त्र बार जीवन लेने को तैयार हूँ। मैं अपनी मुक्ति नहीं चाहता। वे इसके लिए हजारों यातनाएं सहने को तैयार थे। उन्होंने कहा-हमारा महान राष्ट्रीय पाप है इस जनसमुदाय की उपेक्षा। ...मैं उस प्रत्येक मनुष्य को देशद्रोही मानता हूँ, जो उनके व्यय से शिक्षित हुआ है और उनकी और तनिक ध्यान नहीं देता। ''तुम्हें ईश्वर ढूंढ़ने कहां जाना है? क्या गरीब, दुःखी और निर्बल ईश्वर नहीं हैं? पहले दिन उन्हीं की पूजा क्यों नहीं करते? तुम गंगा के किनारे खड़े होकर कुआ क्यों खोदते हो?'' है कोई उदारमना साहसी धर्मावलम्बी जो अपने धर्म और ईश्वर की ऐसी आलोचना कर सकें?'' धर्म की यही उदारता और उसके अनुयायियों का ऐसा साहस ही किसी धर्म को सामयिक और शाश्वत बना सकता है। उनकी धार्मिक अवधारणा का भारत पालन कर ले, तो साम्प्रदायिक दंगे, जातीय-विघटन, मानवीय भेदभाव, धर्मान्तरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार तथा आतंकवाद की विषैली व सर्वनाशी आग से बचा जा सकता है। उनका धर्म और दर्शन आनेवाली अनेक सदियों तक मार्ग-दर्शक बना रहेगा।

आज भारत में फैली अशिक्षा एवं निरक्षरता को लेकर पूरा राष्ट्र चिन्तित है- पर विवेकानन्द तो उस समय भी देश की शिक्षा को लेकर बड़े दुःखी थे-''केवल शिक्षा! शिक्षा! शिक्षा! यूरोप के बहुतेरे नगरों में घूमकर और वहां के गरीबों के अमन-चैन और शिक्षा को देखकर हमारे गरीबों की याद आती थी और मैं आंसू बहाता था। यह अन्तर क्यों हुआ? जवाब पाया-शिक्षा।'' पर शिक्षा कैसी हो उसका स्वरूप क्या हो? उसका उद्देश्य क्या हो? इन सबके उन्होंने अपने गहन ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर व्यावहारिक सुझाव दिए-**''हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे।''...मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। मातृभाषा में शिक्षा ''...आज हमें आवश्यकता है वेदान्तयुक्त पाश्चात्य विज्ञान की।''** भारत के कम विकास का मुख्य कारण यही है कि देश की सम्पूर्ण विद्या-बुद्धि राजशासन और दम्भ के केवल मुट्ठी भर लोगों के एकाधिकार में रखी गई है।'' वस्तुतः आज भी हमें ऐसी ही शिक्षा-पद्धति की आवश्यकता है जो भौतिकता को आध्यात्मिकता से तथा विज्ञान को संवेदना से सम्पृक्त कर सके। वे शिक्षा को सर्वोपरि मानते थे। **जब गायकवाड़ ने मन्दिर या मठ बनवाने के लिए प्रस्ताव रखा तो उस संन्यासी का उत्तर विस्मयकारी था-''मन्दिर नहीं टैक्नीकल स्कूल और इन्जीनियरिंग कॉलेज खोलो।''** क्या कोई साधु ऐसी राष्ट्र व समाज हितैषी बात कह सकता है। हाँ, हमारे विवेकानन्द यह साहस रखते थे।

विवेकानन्द सामाजिक क्षेत्र में भी अनेक सुधारों के पक्षधर थे। वे नारी को देवी एवं शक्ति के रूप में देखते थे। नारी सुशिक्षित, गुणवती एवं आत्मनिर्भर हो तथा शक्ति का पुंज बनें यही उनकी कामना थी। उन्होंने नारी को सम्मानित स्थान दिलाने के दृष्टि से नारी-शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कहा, **''नारी को शिक्षा देना अनिवार्य है। यह समझना कठिन है कि इस देश में नारी और पुरुष के बीच इतना भेद क्यों रखा गया है?** ...मेरी समझ में नारी-शिक्षा भावात्मक हो तथा जिससे स्वाभिमान और श्रद्धा जागे। हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश की नारी व युवा शक्ति अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे। ...हमारे देश के पतन का मुख्य कारण यह है कि हमने शक्ति की इन प्रतिमाओं के प्रति आदर बुद्धि नहीं रखी। ...जो देश, जो राष्ट्र नारी का आदर नहीं करते हैं। वे कभी बड़े नहीं हो पाए हैं और न भविष्य में ही कभी बड़े होंगे। **...स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुए बिना संसार के कल्याण की कोई संभावना नहीं है। एक पक्षी का केवल एक ही पंख के सहारे उड़ना असंभव है।** हम आज नारी के प्रति जिस व्यवहार की बातें कर रहे हैं, जिस लिंग भेद पर चिंतित है उसके बारे में इस चिन्तक ने पहले ही स्पष्ट संकेत दे दिये थे।

वे बाल-विवाह के प्रबल विरोधी थे **''जिस प्रथा के अनुसार अबोध बालिकाओं का पाणिग्रह होता है, उसके साथ मैं किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना नहीं चाहता।** ...यदि बाल-विवाहों की संख्या घट जाए, तो विधवाओं की संख्या भी स्वतः घट जाएगी।'' वे अन्तर्जातीय विवाह के भी पक्षधर थे। पर समधर्म में वे चाहते थे कि भारत की नारी सुशिक्षित होकर स्वावलम्बी बने तथा आत्मरक्षा करे-परवश, असहाय न रहे। पर हम आज भी विचारों का पालन नहीं कर पाए हैं।

भारत के सर्वतोमुखी कल्याण एवं उत्थान के लिए वे युवा शक्ति को जाग्रत एवं प्रेरित करना चाहते थे। वे भारतीयों में आत्म-विश्वास पैदा करना अनिवार्य समझते थे। ''विश्वास, विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास। ''प्राचीन धर्मों ने कहा-नास्तिक वह है, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता। नया धर्म कहता है, वह नास्तिक है जो अपने आप विश्वास नहीं करता... यदि मानव जाति के आज तक के इतिहास में महान् पुरुषों और स्त्रियों के जीवन में सबसे बड़ी प्रवर्तक शक्ति कोई है, तो वह आत्मविश्वास ही है। ...शक्ति ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु। अपने स्नायु शक्तिशाली बनाओ। हम लोहे की माँस-पेशियों और फौलाद के स्नायु चाहते हैं। ...आज देश को आवश्यकता है, साहस और वैज्ञानिक प्रतिभा की। हम चाहते हैं-प्रबल साहस, प्रचण्ड शक्ति और अदम्य उत्साह। **...भाग्य-लक्ष्मी उसी के पास आती है, जो पुरुषार्थी है, जिसके सिंह का हृदय है। पीछे देखने का काम ही नहीं। आगे! आगे! बढ़े चलो। ...इस तरह काम करो कि मानो तुम में से हर एक के ऊपर सारा काम निर्भर है, भविष्य की पच्चास सदियां तुम्हारी ओर ताक रही हैं। भारत का भविष्य तुम पर निर्भर है।''** अपनी सिंह-गर्जना एवं ओजस्वी शब्दों से उन्होंने देश के जन-जन एवं युवकों में प्राण एवं जोश फूंका। आज भी राष्ट्रीय-एकता एवं राष्ट्र-निर्माण के लिए ऐसे ही जोश की आवश्यकता है और राष्ट्र के विकास एवं सुरक्षा व अखण्डता के लिए सदैव जरूरत रहेगी।

मातृभूमि उनके लिए सम्मानीय थी। भारत उनके लिए देवता था। वे वहां की माटी के कण-कण से और जन-जन से अपार प्रेम करते थे। ...हमारा भारत, हमारा राष्ट्र-केवल यही एक देवता है, जो जाग रहा है, जिसके हर जगह हाथ हैं, हर जगह पैर हैं, हर जगह कान हैं, हम क्यों इन व्यर्थ के देवताओं के पीछे भागें और उस देवता की, उस विराट की पूजा क्यों न करें, जिसे हम अपने चारों ओर देख रहे हैं। जब हम उसकी पूजा कर लेंगे, तभी हम सभी देवताओं की पूजा करने योग्य बनेंगे।" वे समानता के प्रबल पक्षधर थे। उनकी दृष्टि में भारत का हर नागरिक समान था। वे धर्म-जाति-वर्ग का भेदभाव नहीं मानते थे। ..."भूलना नहीं कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार, मेहतर तुम्हारे रक्त-मांस हैं, तुम्हारे भाई हैं। तुम चिल्लाकर कहो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं।" इससे बढ़कर मानवतावादी, समाजवादी तथा राष्ट्रीय-एकता संबंधी विचार और क्या हो सकते हैं? काश! हम विवेकानन्द का शतांश भी जीवन में ढाल लें। अगर देश उनकी शिक्षाओं का पालन कर लेता, तो आज जिन विध्वंसकारी शक्तियों एवं जातीय-संघर्षों की आग में से हम गुजर रहे हैं, शायद हमें नहीं गुजरना पड़ता। काश! हम अब भी जाग जाएं।

विवेकानन्द के सपनों का नया भारत था-"एक नवीन भारत निकल पड़े- निकले हल पकड़ कर किसानों की कुटी भेदकर, मछुआ-मोची-मेहतरों की झोंपड़ियों में से। निकल पड़े बनियों की दुकानों में से, भुजवा की भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से।" लोकतंत्र की सच्ची शक्ति, तथा वास्तविक स्वरूप यही है, जिसका संकेत विवेकानन्द ने उस समय ही दे दिया था। ये ही जनतंत्र के स्थायी आधार हैं। भारत के उत्थान के प्रति वे पूर्णतया आशान्वित थे। उनको आशा थी कि भारत का अध्यात्म ही विश्व के विध्वंस को बचा पाएगा। उन्होंने एक स्वप्न देखा- "मेरी वह प्राचीन मातृभूमि फिर से जग गई है, वह सिंहासन पर बैठी है। उसमें नव-शक्ति का संचार हुआ है और वह पहले से अधिक गौरवान्वित हो गई है। संसार के सम्मुख शान्ति एवं कल्याण की मंगलमयी वाणी से उसकी गौरव की घोषणा करो।" उन्होंने भारत भूमि की महानता-पावनता पर प्रकाश डालते हुए भविष्यवाणी की- "यहीं (भारत) से उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की चारों ओर दार्शनिक ज्ञान की प्रबल धाराएं प्रवाहित हुई हैं और यहीं से धारा बहेगी, जो आजकल की पार्थिव (भौतिक) सभ्यता को आध्यात्मिक जीवन प्रदान करेगी। विश्वास करो, मेरे मित्रों, यह होकर रहेगा।"

विवेकानन्द ने कहा था कि "मैं चिन्तन की स्वतंत्रता, व्यक्ति की गरिमा, नारी-जागरण, दलित-उद्धार, राष्ट्र-प्रेम, स्वाभिमान, देशवासियों की समग्र उन्नति, वेदान्तयुक्त मानवतावाद तथा विश्व-बन्धुत्व आदि विषयों में तो गहरी रुचि रखता हूं। परन्तु मैं न तो राजनीतिज्ञ हूं और न मैं राजनैतिक कार्यों में या आन्दोलनों में भाग लेना चाहता हूं।" पर गंभीरता एवं सूक्ष्मता से देखा जाए तो विवेकानन्द ही वह व्यक्तित्व था, जिसने भारत में आत्मविश्वास जगाया-भारत की श्रेष्ठता सिद्ध की, जन-जन को जगाया। इसका प्रतिफल भी शीघ्र ही देखने को मिला। विवेकानन्द के निधन के तीन वर्ष बाद ही बंग-विद्रोह हुआ, जिसने तिलक और गाँधी के जन-आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया। मद्रास के संदेश में "लाजारस आगे बढ़ो" की प्रेरणा ने ही जन-आन्दोलनों को जाग्रत किया। वही आन्दोलन बंगाल में 1905 में स्वदेशी आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ- बाद में क्रान्तिकारी आन्दोलन के रूप में उभरा, उसके बाद महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आन्दोलन तथा 1920 से 1947 तक "भारत छोड़ो आन्दोलन" की चरम सीमा तक पहुँचा। इस प्रकार सिद्ध होता है कि विवेकानन्द भारत के नव जागरण की नींव की ईंट थे। नव-भारत के निर्माण के आधार-स्तम्भ थे।

आज हम आतंक, विघटन, हिंसा, विनाश, साम्प्रदायिक-तनाव, राजनैतिक-भटकाव, धर्मान्धता, संकीर्णता, जातीय-संघर्ष, भ्रष्टाचार, अत्याचार, बलात्कार शोषण, आर्थिक एवं राजनैतिक अस्थिरता, सांस्कृतिक एवं मानवीय अवमूल्यन, नैतिकहीनता व अस्मिता-विहीनता, भौतिकतावादी सभ्यता के अन्धानुकरण, युवा-आक्रोश आदि जिन अग्नि-पथों से गुजर रहे हैं- उन सबके शीतल-चांदनी समाधान उस "आध्यात्मिक जगत् के नेपोलियन" के विचारों एवं सन्देशों में उपलब्ध हैं। भौतिकता के स्वर्ण-मरुस्थल की चकाचौंध में भटकते, प्रेम और शान्ति की प्यास से तड़पते, विघटित मूल्यों का बोझ ढोते, हिंसा तथा आग की राहों से गुजरते, खून और नशे में डूबे भारतीय समाज के लिए विवेकानन्द, ज्ञान व सत्य के सूर्य, अध्यात्म के आकाश, प्रेम तथा शान्ति के प्रकाश, सुख एवं मंगल के मार्ग हैं। सुलगते विश्व के लिए वे केसर-चन्दन की बदली हैं- भविष्य के लिए मंगल द्वार हैं।

युवाशक्ति के प्रतीक विवेकानन्द ने भारत के युवकों को अमर संदेश दिया-मेरा विश्वास आधुनिक युवा पीढ़ी में है। इन्हीं में से मेरे कार्यकर्ता आएंगे और सिंह के समान पुरुषार्थ कर सभी समस्याओं का समाधान करेंगे।" भारत के युवाओं को इस कसौटी पर खरा उतरना पड़ेगा, जागना पड़ेगा, उठना पड़ेगा। विवेकानन्दजी आह्वान कर रहे हैं-"उठो! जागो! लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।"

रंगा कोठी, सुखमलायतन, सेक्टर-डी/96-97,
मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर-334004
फोन 0151-2211060

लेखक परिचय

लक्ष्मीनारायण रंगा

शिक्षा एवं साहित्य के शीर्ष मनीषियों में श्री लक्ष्मीनारायण रंगा का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावकों की पावन त्रिवेणी-परस्पर सद्भाव, सम्मान व सहयोग से ही शिक्षा का भला सोचने वाले श्री रंगा अभिभावकीय उत्तरदायित्वों के कुशल निर्वहन के प्रबल पक्षधर हैं तथा अनेक राष्ट्रीय सेमीनारों में भाग लिया है। आपने लगभग 50 पुस्तकों का लेखन किया है। आप केन्द्रीय साहित्य अकादमी सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित हैं तथा वर्तमान में स्वाध्याय व लेखन के साथ शैक्षिक चिन्तन में निमग्न हैं।

विवेक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द के आर्थिक विचार

❒ डॉ. जमना लाल बायती

स्वामी विवेकानन्द केवल भारत के ही नहीं वरन विश्व के महान विचारक है। विभूति है। विश्व की परिवर्तनशील परिस्थितियों में भी उनकी विचारधारा अत्यन्त समीचीन परिलक्षित होती है। विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान और विचारों की स्पष्टता एवं समकालीन परिस्थितियों की विशिष्ट जानकारी एवं गहरी समझ ने उन्हें महान् भविष्य दृष्टा बना दिया। पश्चिमी देशों की यात्रा से वहाँ की समग्र संस्कृतियों का आत्मीकरण करते हुए अपनी विचारधारा को पुष्ट कर भारतीय परिवेश के अनुकूल अपने देश के विकास का चित्र प्रस्तुत किया।

विवेकानन्द कालीन अर्थव्यवस्था : उनके समय भारत की अर्थव्यवस्था अत्यन्त दयनीय थी। यह परिस्थिति उस समय के आंकड़ों से स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। दादा भाई नौरोजी के अनुसार (1825-1917) के अनुसार भारत के प्रति व्यक्ति की आय मात्र 20 रुपये थी जो दुनिया के सभ्य राष्ट्रों में सबसे कम थी। अंग्रेजी साम्राज्य की प्रगति एवं सम्पन्नता एवं शानदार उपलब्धियों के लम्बे इतिहास ने भारत को एक गरीब राष्ट्र बना दिया। भारत के कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों को नष्ट कर दिया। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारत की प्राचीन वैदिक एवं चरित्र प्रधान शिक्षा पद्धति को तहस-नहस कर दिया, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को झकझोर कर रख दिया।

आर्थिक मुद्दों पर स्वामीजी की अन्तर्दृष्टि : स्वामीजी जी को भारतीय आर्थिक स्थिति की प्रथम दृष्टया जानकारी थी। अपने व्यक्तिगत अनुभव एवं विचार विमर्श के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करके अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति की गहन समझ प्राप्त की। यद्यपि उन्होंने औपचारिक रूप से किसी महाविद्यालय में प्रवेश लेकर अर्थशास्त्र का अध्ययन नहीं किया था, लेकिन अपने स्तर पर उन्होंने जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे महान् राजनीतिक अर्थशास्त्री की कृतियों को पढ़ा, गहराई से अध्ययन किया। अर्थशास्त्र के विस्तृत ज्ञान का उपयोग उन्होंने अमेरीकन समाज विज्ञान संस्थान में 'भारत की चाँदी का उपयोग' विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान देने में किया।

स्वामीजी का बहुआयामी योगदान : स्वामीजी ने विश्व एवं भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए कई नवीनतम एवं मौलिक विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने पश्चिम की भौतिक प्रगति एवं पूर्व की आध्यात्मिक विचारधारा को एकीकृत रूप देकर समृद्धि और समग्र विकास पर जोर दिया। जब पश्चिमी राष्ट्र भौतिक सुख सम्पदा के पीछे भाग रहे थे तब स्वामीजी ने उन्हें जीवन संबंधी आध्यात्मिक सिद्धांतों का महत्व समझाया। इस समझ के बाद पाश्चात्य दुनियाँ की भौतिक व्याधियाँ, मुद्रा की भूख, विलासिता पूर्ण जीवन की जरूरतें कम होने लगी। पश्चिमी अर्थव्यवस्था में भौतिकवाद प्रमुख रहा परन्तु अन्ततः यह विचारधारा गलत साबित हुई। धीरे-धीरे यह विचारधारा बलवती होने लगी कि जीवन एक जटिल प्रक्रिया हैं जिसे केवल भौतिकता के सहारे जीवित नहीं रखा जा सकता है।

स्वामीजी की व्यवस्था में या उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों में विभिन्न आयाम निहित हैं। उन्होंने भौतिक समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास पर भी अत्यधिक जोर दिया। उन्होंने समाज के सभी वर्गों के लिए समग्र विकास की आवाज बुलन्द की। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास ही उनकी आर्थिक नीति का मूल आधार था।

शोषण के कारण का भारत का पतन : स्वामीजी को भारतीय एवं पश्चिमी देशों की आर्थिक स्थिति की गहन एवं पूर्ण जानकारी थी। अठारहवीं शताब्दी में भारतीय आर्थिक स्थिति अच्छी थी परन्तु यूरोपीय राष्ट्रों ने इनका शोषण किया एवं भारतीय स्त्रोतों के शोषण के कारण ही वे धनी बन गये। भारतीय व्यापार एवं कर प्रणाली अंग्रेजों के अधिकार में होने से भारतीय अपना शोषण समझ नहीं पाये। गहन अनुसंधान ने अध्ययन एवं पाश्चात्य इतिहासकारों ने भारतीय स्थिति का भ्रामक एवं तथ्यों से परे चित्र प्रस्तुत किया।

आत्म निर्भरता का पाठ : उस समय दादा भाई नौरोजी और रमेश दत्त जैसे महान विचारकों ने भारत के शोषण का भारी विरोध किया एवं तत्संबंधी तथ्य भी प्रस्तुत किए। अन्य राष्ट्रों की आर्थिक प्रगति से प्रभावित होकर स्वामी विवेकानन्द ने आर्थिक नीतियों पर प्रभावी और क्रान्तिकारी सुझाव दिए। वे पाश्चात्य राष्ट्रों की बढ़ती हुई आर्थिक समृद्धि एवं भारत की आर्थिक नीतियों के प्रति अज्ञानता को लेकर दुखी थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि विदेशों की आर्थिक स्थिति एवं समृद्धि सम्पन्नता के सामने भारतीयों की स्थिति कुत्तों जैसी थी। भारतीय कच्चे माल से विदेशी व्यापारी सोना कमा रहे है और भारतीयों की स्थिति भारवाहक गधों से ज्यादा अच्छी नहीं हैं और विदेशी व्यापारी भारतीय कच्चे माल का उपयोग करके सम्पन्न बन रहे हैं। अन्य बीसों प्रकार से लाभ उठा रहें हैं।

समग्र आर्थिक विकास के स्वप्न दृष्टा: स्वामी विवेकानन्द के अर्थशास्त्र संबंधी विचारों के अनुसार देश के हर वर्ग के लोगों का सम्पूर्ण सभी क्षेत्रों में विकास होना चाहिए। इस प्रक्रिया को उन्होंने गहन अर्थशास्त्र का नाम दिया, कई पाठक इसे सूक्ष्म अर्थशास्त्र भी कहते हैं। राष्ट्र की गरीबी हटाना उनकी सर्वोपरि प्राथमिकता थी। वे प्रत्येक वर्ग के हर सदस्य की प्रगति पर बल देते थे और हर वर्ग की गरीबी हटाना उनका ध्येय था। उन्होंने हर वर्ग की महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक विकास पर बल दिया। समाज के आधे हिस्से के योगदान के बिना वे प्रगति या आर्थिक विकास को अपूर्ण मानते थे।

भारतीय कृषि की श्रेष्ठता : भारत राष्ट्र एक कृषि प्रधान देश है। स्वामीजी को भारत के लिए कृषि के महत्व का, जीवन यापन में कृषि के स्थान का पूर्ण एवं ठोस ज्ञान था पर उन्होंने भारतीय कृषि के आधुनिक तरीकों के उपयोग पर जोर दिया और साथ ही लघु एवं सीमान्त कृषक भी उनके विचार क्षेत्र से पृथक नहीं हुए, उन्होंने उनकी दशा सुधारने के लिए स्वयं उन्हीं को प्रोत्साहन देना जरूरी समझा। आधुनिक भारत में स्वामीजी के ये विचार पूर्णतः समयानुकूल लगते हैं क्योंकि आज भी साठ प्रतिशत भारतीयों का

जीवन यापन प्रत्यक्षतः कृषि पर निर्भर हैं। आज हम देख रहे हैं कि कृषि की उपेक्षा के कारण किसान आत्महत्या कर रहे हैं फिर चाहे वे किसी एक क्षेत्र विशेष के ही क्यों न हो। युवा वर्ग कृषि संबंधी कार्यों के प्रति उदासीन होने से मानवता के छठे भाग का भरण पोषण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

औद्योगीकरण : स्वामीजी आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण की मुक्त हृदय से वकालत की थी और उत्साही उद्यमियों के प्रोत्साहन को अत्यधिक महत्व दिया। वे औद्योगीकरण की प्रकृति से भली भाँति परिचित थे। उन्होंने दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं के निर्माण करने और विदेशों पर निर्भरता को घटाने पर बल दिया। अपनी शिकागो यात्रा के समय उन्होंने जमशेदजी टाटा से वायुयान में इस संबंध में विस्तृत चर्चा की। वायुयान में उनकी यह वार्ता औद्योगिक विकास पर ही केन्द्रित रही। उन्होंने विभिन्न वस्तुओं के आयात की अपेक्षा घरेलू उत्पादन की वृद्धि पर बल दिया।

नये उद्योगपतियों को प्रोत्साहन तथा पारम्परिक उद्योगों का विकास : स्वामी विवेकानन्द जानते थे कि नये उद्योगपतियों को प्रोत्साहन देने पर बल दिया जाए क्योंकि हर स्तर पर नियोजन व्यवस्था का सुधार प्रथम स्थान पर आवश्यक है। वे ग्रामीणों द्वारा कलात्मक वस्तुओं का निर्माण पर सकारात्मक ढंग से सोचते थे। ग्रामीणों द्वारा निर्मित इन वस्तुओं के विपणन पर उन्होंने क्रांतिकारी व्यवस्था का समर्थन किया। कुटीर उद्योगों के विकास पर उन्होंने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए और उन्होंने बिना किसी प्रकार का विचार किए बड़े उद्योगों तथा वृहद स्तरीय औद्योगीकरण की हानियों से भारतीय नागरिकों को परिचित कराया।

विज्ञान तथा तकनीकी विकास पर बल : अपने समय की भारतीय समस्याओं के निराकरण के लिए उन्होंने तकनीक विकास पर न केवल समर्थन किया बल्कि पूरे साहस एवं जानकारी के साथ बल दिया। उनके सुझावों को महत्व देते हुए जमशेदजी टाटा ने कई बड़े उद्योगों की स्थापना की तथा प्रतिष्ठित भारती विज्ञान संस्थान (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स) की स्थापना की। वे भारतीयों को पाश्चात्य वैज्ञानिक प्रगति की जानकारी देना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने कहा कि भारतीयों के वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर उत्पादन बढ़ाने की दिशा में सक्रिय होना चाहिए। भारतीयों को विदेशियों की दासता से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया।

स्वदेशी तरीकों से विकास करने पर बल : स्वामीजी ने जापान का उदाहरण देकर भारतवासियों को भारतीय तरीकों को विकास करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जापान ने पाश्चात्य वैज्ञानिक प्रगति का लाभ उठाया लेकिन जापान के निवासियों ने अपनी जापानियत नहीं छोड़ी। इसी भाँति भारतीयों को भी अपना विकास करते हुए अपनी भारतीयता नहीं खोना चाहिए। अर्थात बिना भारतीयता खोये विकास कर सतत आगे बढ़ना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने गुलाम भारत में भी भारतीय आर्थिक विकास का आदर्श प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानन्द के सिद्धांतों की श्रेष्ठता या महत्व इसी में है कि जो भी उपाय उन्होंने सुझाये कि ये स्वयं उनके अनुभवों पर आधारित थे। उन्होंने जन सामान्य से जुड़कर ही भारतीय आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, औद्योगिक विकास की बात को आगे बढ़ायी। पर इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण कि वे आध्यात्मिक विकास नहीं भूले। वे भारत की सभी प्रकार की स्थितियों से भली भाँति परिचित थे। संक्षेप में उन्हें भारतीय दृष्टि से व्यावहारिक अर्थशास्त्री कहा जा सकता है।

जगद्गुरु स्वामी विवेकानन्द : विश्व में पश्चिमी देशों के उदय होने के बाद से 2008 तक पश्चिमी राष्ट्रों की प्रगति से यह स्पष्ट होने लगा है कि पश्चिमी आर्थिक आदर्श, रीति नीति से हमारी आर्थिक समस्याओं जो राष्ट्रीय स्वरूप की भी हो सकती हैं, का समाधान नहीं हो सकता। कई पश्चिमी अध्येता व विचारक स्वीकार करते हैं कि भारतीय तरीकों से ही भारतीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। स्वामी जी के अनुसार भारतीय साधनों व तरीकों से ही भारत का आर्थिक विकास संभव है। निश्चय ही भारत में जगद्गुरु बनने की क्षमता एवं योग्यता है एवं राष्ट्रीय केन्द्रित नीतियों से ही भारत का सर्वांगीण विकास संभव है। स्वामी विवेकानन्द ने पूर्ण विश्वास एवं दृढ़ता पूर्वक यह कथन प्रतिपादित किया है कि भारत की दरिद्रता समाप्त करने तथा सम्पन्न एवं खुशहाल राष्ट्र बनाने के लिए भारतीय दार्शनिक विचारधारा, कठोर परिश्रम, भारतीय कार्य पद्धति एवं सतत् कर्मशील बने रहकर ही एक सम्पन्न एवं खुशहाल राष्ट्र बनाया जा सकता है।

–बी–186, आर. के. कॉलोनी, भीलवाड़ा
मो. 9928188569

विवेकानन्द नामकरण

गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि के पश्चात् उनकी आज्ञा से नरेन्द्र नाथ ने संन्यास ले लिया। इसके पश्चात् उन्होंने कई बार अपना नाम बदला और इसके लिए एक नाम में न बँधकर कभी वे सच्चिदानंद तो कभी विविदिशानन्द बने। इस बीच उनका परिचय खेतड़ी नरेश राजा अजीतसिंह से हुआ। राजाजी ने सन्यासी नरेन्द्र नाथ से कहा, ''स्वामीजी, आपके इन नामों का वास्तविक अर्थ समझना तो रहा दूर, सही उच्चारण करने में भी हम असमर्थ हैं।''

''तो आप बताइये, क्या होना चाहिए मेरा नाम।'' संन्यासी नरेन्द्र नाथ ने सहजता से पूछा।

''आपका नाम तो विवेकानन्द जचता है, ज्ञान और आनन्द के पुंज जो हैं आप।'' राजा अजीतसिंह ने सम्मति प्रकट की।

''विवेकानन्द! तो ठीक है आज से मेरा यही नाम होगा मित्र। अब मैं विवेकानन्द नाम से ही कहलाऊँगा। ''अपने मित्र की इच्छा को मान प्रदान करते हुए स्वामीजी ने यह घोषणा की।

स्वामी विवेकानन्द और खेतड़ी के राजा अजीतसिंह की गहरी मित्रता और सच्ची आत्मीयता के किस्से जग जाहिर हैं।

–साधना गर्ग, प्रधानाचार्य
रा.मा.उ.मा.वि. आदर्श नगर, जयपुर
मो. 9414879597

गाँधी दर्शन

सत्य, शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी

❑ प्रहलाद शर्मा

सत्य, शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी विश्व पटल पर एक नाम नहीं है अपितु सत्य, शान्ति एवं अहिंसा का प्रतीक है। उन्होंने सत्याग्रह, शान्ति एवं अहिंसा के रास्तों पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। ऐसा कोई उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता है। इसी कारण गाँधीजी का विश्व इतिहास में अलग स्थान है। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि हजारों वर्ष बाद आने वाली नस्लें इस बात पर बहुत मुश्किल से विश्वास कर पायेगी की हाड मांस से बना ऐसा कोई इन्सान धरती पर कभी आया था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 में गाँधी जयन्ती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। अमेरिकी कांग्रेस ने गाँधी को दुनिया भर के स्वरूप और न्याय का प्रतीक बताते हुए प्रतिनिधि सभा में उनकी 140वीं जयन्ती मनाने संबंधी प्रस्ताव पास किया। निश्चिततः विश्व का यह दृष्टिकोण आज के युग में सत्य, शान्ति एवं अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के विचारों की प्राथमिकता को सिद्ध करता है।

गुजरात के पोरबन्दर में 2 अक्टूबर 1869 को जन्मे मोहनदास करमचन्द गाँधी ने सत्य, शान्ति एवं अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए 15 अगस्त, 1947 को भारत को अंग्रेजों से आजाद करवाया। इस प्रकार गाँधीजी ने आजादी प्राप्त कर समूचे विश्व को दिखा दिया कि सत्य, अहिंसा, एवं शांति के मार्ग पर चलकर कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

महात्मा गाँधी सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, स्वराज्य व रचनात्मक कार्यक्रम के कायल थे। इन सिद्धांतों को उन्होंने न केवल वैचारिक धरातल पर उतारा बल्कि उनमें अन्त सम्बन्ध भी स्थापित किया। गाँधीजी को महात्मा की उपाधि से सर्वप्रथम विभूषित करने वाले रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि गाँधीजी एक राजनीतिज्ञ, संगठनकर्ता, जनमानस के नेता और नैतिक सुधारक के रूप में महान हैं, परन्तु वह मनुष्य के रूप में उससे भी अधिक महान हैं। गाँधीजी सत्य

के बहुत बड़े प्रणेता थे और इसके लिये अहिंसा के तरीकों के पक्षपाती थे। सत्याग्रह उनके लिये मात्र नीति नहीं मिशन था। वस्तुतः सत्याग्रह के माध्यम से गाँधीजी ने महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर व तमाम महागुरुओं द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धांत को सामाजिक व राष्ट्रीय शक्ति में तब्दील कर दिया। स्वयं गाँधीजी का मानना था कि सत्याग्रह ऐसा आध्यात्मिक सिद्धांत है जो मानव मात्र के प्रेम पर आधारित है। इसमें विरोधियों के प्रति घृणा की भावना नहीं है। अहिंसा गाँधीजी का प्रमुख सत्याग्रही हथियार था। गाँधीजी के लिए अहिंसा हिंसा का निषेध मात्र नहीं थी बल्कि एक जीवन पद्धति थी। गाँधीजी की अहिंसा कायरता का प्रतीक नहीं बल्कि अन्तर्चेतना व आत्मा में विश्वास करने वाली वीरता का परिचायक है।

गाँधीजी स्वदेशी के प्रमुख समर्थक थे। वे जानते थे कि असली भारत गाँवों में बसता है जिसमें आर्थिक स्वावलम्बन की रीढ़ कुटीर व लघु उद्योग पर टिकी हुई है। गाँधीजी का चरखा कातना प्रतीकात्मक रूप में स्वदेशी व स्वावलम्बन का ही प्रतीक था। स्वदेश को बढ़ावा देने के लिये ही वे विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार कर आह्वान करते थे। गाँधीजी सिर्फ, राजनैतिक व्यक्ति नहीं बल्कि एक रचनात्मक समाज सुधारक भी थे। अस्पृश्यता, नारी सुधार, हिन्दु व मुस्लिम एकता के लिये उन्होंने बहुत कार्य किये।

गाँधीजी अस्पृश्यता को मानवता पर कलंक बताते हुये उन्होंने इसके उन्मूलन पर जोर दिया व तदनुसार अछूतों को सम्मानजनक हरिजन नाम देने, हरिजन सेवक संघ की स्थापना, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अस्पृश्यता के विरुद्ध लेख लिखना एवं देशव्यापी भ्रमणों के दौरान अछूतों की बस्तियों में जाकर उन्हें गले लगाकर अस्पृश्यता को अवैधानिक अमानवीय सिद्ध करने करने जैसे कदम उठाये।

गाँधीजी के मन में नारी के प्रति श्रद्धा थी। वे नारी को पर्दाप्रथा, बाल-विवाह व बहु-विवाह जैसी मान्यताओं से बाहर निकालना चाहते थे। नारी उत्थान हेतु गाँधीजी ने शिक्षा, अन्तर्जातीय विवाह व विधवा विवाह पर जोर दिया। उनका मानना था कि जब तक नारी अपने अधिकारों हेतु स्वयं आगे नहीं आयेगी तब तक उसकी स्थिति में परिवर्तन नहीं होगा। गाँधीजी धर्म एवं समुदाय में भेद करते थे। धर्म उनके लिये कर्मकाण्डों में नहीं अपितु मानवीय नैतिक गुणों में निहित था। वे राजनीति व धर्म के सह अस्तित्व को स्वीकारते हुए दोनों के सत्य, अहिंसा, विश्वबन्धुता, आत्मविश्वास एवं नैतिकता को जरूरी मानते थे। साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर जोर देते हुए वे किसी भी प्रकार के छलकपट को प्रकट नहीं करते थे। अंग्रेजों की फूट डालो एवं राज करो नीति के विपरीत गाँधीजी हिन्दु मुस्लिम एकता के समर्थक थे। हिन्दु मुस्लिम एकता के प्रति उनका लगाव इसी में समझा जा सकता है कि जब 15 अगस्त, 1947 को सारा देश आजादी के जश्न में डूबा था तो गाँधीजी साम्प्रदायिक दंगों को खत्म करने के लिए नोआखली में पद यात्रा कर रहे थे।

आज गाँधीजी सिर्फ भारत की भूमि तक ही सीमित नहीं बल्कि समग्र-विश्व-धारा में व्याप्त हैं। उनके दिखाए गए रास्ते पर चलकर न जाने कितने राष्ट्रों ने स्वाधीनता पाई है। यह अनायास ही नहीं है कि गाँधीजी को पांच बार 1937, 1938, 1939, 1947 एवं 1948 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया। यह एक अलग बहस का विषय है कि किन कारणों से उन्हें नोबेल पुरस्कार नहीं दिया गया

पर कालान्तर में गाँधीजी के सिद्धांतों पर चलकर उन्हें अपना प्रेरणास्त्रोत मानने वाले कई लोगों को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1989 में नोबेल शांति सम्मान के लिए दलाई लामा के नाम की घोषणा करते हुए नोबेल कमेटी के सदस्यों ने गाँधीजी को नोबेल सम्मान नहीं दिए जाने पर अफसोस जताया और कमेटी के अध्यक्ष ने कहा कि दलाई लामा को यह सम्मान दिया जाना गाँधीजी की स्मृति को श्रद्धांजलि देने का प्रयास है। इसी प्रकार 1984 व 1993 में क्रमशः डेसमण्ड टूटू व नेल्सन मण्डेला को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिन्होंने गाँधीजी को प्रेरणास्रोत मानते हुए दक्षिण अफ्रीका में वर्णभेद व रंगभेद की खिलाफत की थी।

वस्तुतः सत्य, प्रेम व सहिष्णुता पर आधारित गाँधीजी के सत्याग्रह, अहिंसा व रचनात्मक कार्यक्रम के अचूक मार्गों पर चलकर ही विश्व में व्याप्त असमानता, शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, दुराचार, नक्सलवाद, पर्यावरण असन्तुलन व दिन-ब-दिन बढ़ते अपराध को नियन्त्रित किया जा सकता है। गाँधीजी द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम के जरिए विकल्प का निर्माण आज पूर्वोत्तर भारत व जम्मू कश्मीर जैसी समस्याओं, नक्सलवाद व घरेलू आतंकवाद से निपटने में जितना कारगार हो सकता है उतना बल-प्रयोग नहीं हो सकता। गाँधीजी दुनिया के अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति थे जिन्होंने सार्वजनिक रूप में स्वयं को लेकर अभिनव प्रयोग किए और आज भी सार्वजनिक जीवन में नैतिकता आधारित मुद्दो पर उनकी नैतिक सोच व धर्म संप्रदाय पर उनके विचार प्रासंगिक हैं। तभी तो भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउण्टबेटन ने कहा था- गाँधीजी का जीवन खतरों से भी इस दुनिया को हमेशा शांति और अहिंसा के माध्यम से अपना बचाव करने की राह दिखलाता रहेगा।

ऐसे सत्य, अहिंसा, प्रेम एवं शान्ति के पुजारी महात्मा गाँधी को निम्न पंक्तियों में नमन करते हैं:-

दे दी हमें आजादी खड्ग बिन ढाल,
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

-5/279, एस.एफ.एस, मानसरोवर, जयपुर
मो. 9414796071

चिन्तन

मातृ-पितृ देवो भवः

❒ अचलचन्द जैन

घर एक मन्दिर है और माता-पिता है उस घर के देवी देवी-देवता। उपनिषदों में हमारे ऋषियों ने मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः कहकर न केवल माता-पिता के महत्त्व को दर्शाया है, अपितु सन्तानों को कर्त्तव्यों का बोध भी कराया है। माता-पिता की सेवा भक्ति के कारण ही गणेशजी प्रथम पूजनीय बन गये। माता-पिता का सच्चा आशीर्वाद जिसे प्राप्त होता है, उसके लिये संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। मातृ-पितृ भक्ति के कारण ही श्रवण कुमार को सैंकड़ों वर्षों बाद भी आदरपूर्वक याद किया जाता है। पिताश्री (राजा दशरथ) की आज्ञा का पालन कर श्री राम का वनवास जाना पितृ भक्ति का आदर्श उदाहरण है।

आजकल हम पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए पिता को 'डैड' एवं माता को 'मॉम' कहकर बुलाते हैं परन्तु माँ शब्द में जो ममता और प्यार है, एवं पिता शब्द में जो अपनत्व और संरक्षण के भाव है वे भाव 'मॉम' और 'डैड' शब्द में भी नहीं आ सकते। इतना ही नहीं पाश्चात्य तर्ज पर हम सालभर में केवल एक दिन (29 जुलाई) Parents day मनाकर माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य के इति श्री कर लेते हैं जो कदापि उचित नहीं है। हमारी संस्कृति में तो माता-पिता की सेवा करना, आज्ञा का पालन करना और उनका आशीर्वाद लेना जीवन भर चलता है। अर्थात् Parents day सालभर में एक दिन नहीं जीवनपर्यन्त मनाते रहना चाहिये। जब हम कहते हैं कि सेवा करने से पुण्य मिलता है, तो हम माता-पिता की सेवाकर पुण्य क्यों कमाते?

आजकल तो पति-पत्नी और उनके बच्चे ही परिवार में गिने जाते हैं। माता-पिता को परिवार में शामिल नहीं किया जाता है। जन्मदाता माता-पिता के बिना परिवार कैसे पूरा हो सकता है? घर के देवता अर्थात् माता-पिता के बिना घर मन्दिर नहीं बन सकता। देवतुल्य माता-पिता के संरक्षण, अनुभव और आशीर्वाद के बिना परिवार सुरक्षित और सुखी नहीं रह सकता। यदि परिवार में माता-पिता साथ रहते हो तो उनमें बच्चों के हाव-भाव परखने की असाधारण प्रतिभा और अनुभव होने से बच्चियों के घर से भागने, बलात्कार, चोरी आदि की घटनाओं में कमी लायी जा सकती है।

माता-पिता के अपमान के कारण आज स्थान-स्थान पर वृद्धा श्रम खुल रहे हैं जो भारतीय संस्कृति का खुले नाम अपमान है। भारतीय संस्कृति का अपमान करने वाली आज की पीढ़ी यह नहीं समझ पा रही है कि आज जो व्यवहार हम अपने माँ-बापों के साथ कर रहे हैं, वहीं व्यवहार कल हमारे बच्चे हमारे साथ करेंगे और तब दुःख और पश्चाताप के सिवाय कुछ भी हासिल नहीं होगा। हमें याद रखना चाहिये कि सन्तान कितनी ही नालायक क्यों न हो? माता-पिता सदैव ही उसका हित चाहते हैं। कहते हैं कि माता-पिता की सेवा से पूरी पृथ्वी की परिक्रमा का पुण्य मिलता है। प्रथम पूज्य गणेश का उदाहरण हमारे सामने हैं। माता-पिता का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है। क्योंकि माता-पिता ने पुत्र के लिये कई त्याग कर उसका पालन-पोषण किया है। अतः पुत्र का दायित्व है कि वह माता पिता की आज्ञा का पालन कर सम्मानपूर्वक उनकी सेवा करें।

हमारी संस्कृति में सुबह उठकर माता-पिता को प्रणाम करने की सौभाग्यशाली परम्परा है, जिसमें उनके आशीर्वाद की मंगल कामना है जो हमें मुश्किलों से छुटकारा दिलाती है। इतना ही नहीं प्रणाम में झूकने की जो प्रथा है वह विनय सिखाती है। विनय मानव जीवन का आभूषण है और सफलता दिलाने में मदद करता है। झुक कर प्रणाम करते समय यदि आपके हाथों की अंगुलियां माता-पिता के पैरों को नाखूनों को स्पर्श करती है तो उससे उनके गुणों की तरंगे आप में स्वतः समाहित हो जाएंगी जो आपके गुणों में वृद्धि करेगी। आप ऐसा करके देखिए तो सही।

-गांधी मुहल्लों का बास, सायला (जालोर)
फोन : 02977-272079

प्रार्थना

वैष्णव जन तो तैंने कहिए

वैष्णव जन तो तैंने कहिए
जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमाण न आणे रे।
सकल लोकमां सहुने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन-निश्चल राखे,
धन-धन जननी तेरी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी,
परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
पर धन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताली लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वण लोभी ने कपट रहित छे,
काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां
कुल एकोतेर तार्या रे।

शहीद दिवस

प्रकाश-स्तंभ बुझ गया

❑ पं. जवाहर लाल नेहरु

30 जनवरी 1948 को गाँधीजी की हत्या का समाचार सुनकर नेहरू तुरन्त बिरला हाउस, हत्या-स्थल-पहुँचे, जहाँ महात्मा गाँधी के जीवनी लेखक डी.जी. तेंदुलकर के अनुसार-"उन्होंने अपना सिर झुका लिया और एक बच्चे की तरह सुबकियाँ लेना शुरू कर दिया।" परंतु कुछ घंटों के भीतर ही माउंटबेटन ने उन्हें रेडियो के माइक्रोफोन के सामने खड़ा कर दिया और पूरे राष्ट्र द्वारा महसूस की जा रही अपूर्णीय क्षति की आवाज देते हुए नेहरू बिना तैयारी के दिल से बोले। यह बिना तैयारी के दिए गए उनके महान भाषणों में से एक है। पं. नेहरू के द्वारा दिया गया यह उत्कृष्ट भाषण राष्ट्रपिता को विनम्र श्रद्धांजलि के साथ यहां प्रस्तुत है। –संपादक

दोस्तो और साथियो, हमारे जीवन को आलोकित करने वाला प्रकाश-स्तंभ बुझ गया है और सब तरफ अँधेरा ही अँधेरा है। मैं नहीं जानता, आपसे क्या कहूँ और कैसे कहूँ। हमारे प्यारे नेता जिन्हें हम बापू कहते हैं, राष्ट्रपिता अब नहीं रहे। शायद मैं गलत कह रहा हूँ, फिर भी जिस तरह से इतने वर्षों से हम उन्हें देखते आए हैं, वैसे अब हम उन्हें फिर नहीं देख सकेंगे। उनसे सलाह लेने और समाधान पाने के लिए हम उनके पास दौड़कर नहीं जा पाएंगे। यह एक भारी आघात है, न सिर्फ मेरे लिए बल्कि करोड़ों देशवासियों के लिए भी। हमें हमारी या किसी और की सांत्वना के जरिए उस आघात को कम कर पाना मुश्किल है।

मैंने कहा कि एक प्रकाश-स्तंभ बुझ गया, फिर भी मैं गलत था; क्योंकि जो प्रकाश इस देश को आलोकित कर रहा था, वह कोई साधारण प्रकाश नहीं था। जिस प्रकाश ने वर्षों तक इस देश को आलोकित किया है, वह और भी कई वर्ष तक इस देश को आलोकित करता रहेगा। एक हजार साल बाद भी वह प्रकाश देश में दिखाई देगा और दुनिया उसे देखेगी। अनगिनत दिलों को वह सुकून देगा। क्योंकि वह प्रकाश तात्कालिक गतिमान से कुछ अधिक का प्रतिनिधित्व करता है, वह जीवंत व शाश्वत सत्यों का प्रतिनिधित्व करता है, हमें सही मार्ग दिखाता है, हमें गलतियों से दूर रखता है, इस प्राचीन देश को मुक्ति की ओर ले जाता है।

यह सब ऐसे समय हुआ है, जब उनके लिए बहुत काम बाकी था, हमारे मन में यह विचार कभी नहीं आया कि वे अनावश्यक हो गए थे या उनका काम पूरा हो गया था। परंतु खास तौर से अब, जबकि इतनी मुश्किलें हमारे सामने हैं, उनका हमारे बीच न होना एक भयंकर आघात है। एक पागल आदमी ने उनके जीवन का अंत कर दिया है; क्योंकि जिसने यह काम किया है, उसे मैं पागल ही कह सकता हूँ। पिछले कुछ वर्षों और महीनों से इस देश में काफी जहर फैलाया जा चुका है। और लोगों के दिलों पर इस जहर का प्रभाव पड़ा है। हमें इस जहर का सामना करना है, इस जहर को खत्म करना है और उन सभी खतरों का भी सामना करना है, जो हमें घेरे हुए हैं-और उनका सामना उत्तेजना या पागलपन से नहीं बल्कि उस तरीके से करना है, जैसा हमारे प्रिय गुरु ने हमें सिखाया है।

सबसे पहले तो हमें याद रखना है कि हममें से किसी को गुस्से में कोई कार्रवाई नहीं करनी है। हमें सशक्त और संकल्पवान लोगों की तरह व्यवहार करना चाहिए। सभी गुस्सों का सामना करने के संकल्प के साथ, हमें यह ध्यान रखते हुए कि उनकी आत्मा हमें देख रही है, तो उसके लिए इससे अधिक कष्टदायक कुछ नहीं होगा कि हमें क्षुद्र व्यवहार या हिंसा में लिप्त देखें। तो हमें वैसा कोई काम नहीं करना चाहिए; परंतु इसका मतलब यह नहीं कि हमें कमजोर होना चाहिए, बल्कि यह है कि हमें

शक्ति और एकता के साथ सामने खड़ी मुसीबतों का सामना करना चाहिए। इस महाविपत्ति के समय हमें एकजुट रहना और अपनी क्षुद्र समस्याओं, कठिनाइयों व विवादों को खत्म कर देना चाहिए। यह महाविपत्ति हमारे लिए जीवन की श्रेष्ठतर बातों को याद रखने और क्षुद्र बातों को भूल जाने के लिए है। अपनी मृत्यु के जरिए उन्होंने हमें जीवन की उच्चतर बातों–जीवंत सत्य–की याद दिलाई है और यदि हम उन्हें याद रखें तो इससे भारत का भला होगा।

कुछ दोस्तों ने यह प्रस्ताव किया था कि महात्माजी के शरीर को संलेपित करके कुछ दिनों तक रखा जाए, ताकि करोड़ों लोग उन्हें अपनी अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। परंतु उन्होंने कई बार इच्छा प्रकट की थी कि ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। वे अपने मृत शरीर के संलेपन के पूरी खिलाफ थे। इसलिए हमने फैसला किया है कि कुछ लोग कितना भी जोर दें, हमें इस विषय में उनकी इच्छा का पालन करना चाहिए।

अतः उनका अंतिम संस्कार शनिवार को दिल्ली शहर में यमुना नदी के किनारे किया जाएगा। उनका पार्थिव शरीर शनिवार की सुबह करीब 11.30 बजे बिरला हाउस से निकालकर अंतिम यात्रा के लिए निर्धारित मार्गों से गुजरकर यमुना नदी तक ले जाया जाएगा। वहाँ पर शाम के लगभग 4.00 बजे उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। संस्कार-स्थल और मार्ग की घोषणा रेडियो व समाचार-पत्रों के जरिए की जाएगी।

जो दिल्लीवासी उन्हें अपनी अंतिम श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, वे निर्धारित मार्गों के किनारे एकत्र हो जाएँ। मैं बहुत ज्यादा लोगों को बिरला हाउस आने की सलाह न देकर उनसे बिरला हाउस से यमुना नदी तक के लंबे मार्ग के दोनों ओर एकत्र होने का अनुरोध करूँगा। मेरा विश्वास यह है कि वे शांत भाव से वहाँ मौजूद रहेंगे। इस महान आत्मा को श्रद्धांजलि देने का यह सबसे अच्छा और सबसे उपयुक्त तरीका होगा। शनिवार का दिन हम सबके लिए उपवास और प्रार्थना का दिन होना चाहिए।

जो लोग दिल्ली से बाहर या देश के अन्य भागों में रहते हैं, निस्संदेह वे भी इस अंतिम श्रद्धांजलि में भाग लेंगे। यह दिन उनके लिए भी उपवास और प्रार्थना का होना चाहिए। शनिवार को अंतिम संस्कार के निर्धारित समय यानी अपराह्न 4 बजे लोगों को अपने पास की नदियों या समुद्र-तट पर जाकर प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम प्रार्थना कर रहे हों तो हमारी सबसे बड़ी प्रार्थना यह होगी कि हम सत्य और जन लक्ष्यों के प्रति स्वयं को समर्पित करने की प्रतिज्ञा करें, जिनके लिए हमारे देश का यह महान सपूत जिया और जिनके लिए उसने अपने प्राण न्योछावर किए। उनके और उनकी स्मृति के लिए यही हमारी सर्वोत्तम प्रार्थना होगी। जय हिंद!

(साभार)

इस माह का गीत

वीर हृदय! दृढ़ रहो कभी मत विचलित होना

❑ स्वामी विवेकानन्द

मेघों से यदि सूर्य कभी क्षण भर छिप जावे,
गगन-प्रान्त में पूर्ण अंधेरा यदि छा जावे।
वीर-हृदय! दृढ़ बने रही, मत विचलित होना,
निश्चय होगी विजय तुम्हारी धैर्य न खोना।।
(यदि) शिशिर न आवे तो बसन्त का कहां पता है?
प्रति तरंग के पूर्व पुनः गह्वर रहता है।
करते है साहाय्य-दान वे सदा निरन्तर,
एक एक को अस्तु, रहो दृढ़ नित्य वीरवर।।
जीवन के कर्त्तव्य कभी भी सुखद न होते,
पर विलास भी यहां सभी क्षणभंगुर होते।
छाया-सम अस्पष्ट लक्ष्य भी दीख रहा हो,
अन्धकार में वीर ! बढ़ो सब शक्ति लगा दो।।
नष्ट न होगा यज्ञ समर यह व्यर्थ न होगा,
आशाएं मिट जायं भले ही बल न रहेगा।
रहो बद्धकटि वीर ! सफल निश्चय ही होंगे,
विफल न होंगे कर्मवीर । यदि अटल रहोगे।।
धीरज औ धीमान धरा में यद्यपि कम हैं,
पर वे ही वर-वीर विश्व के नायक सम हैं।
बहुत काल उपरान्त जागती जनता उनको,
ध्यान न लाना इसे मार्ग बतलाना इनको।।
साथ तुम्हारे सौम्य दूर-दर्शी सब ही हैं,
तथा तुम्हारे संग शक्ति के स्वामी भी हैं।
तुम्हें सहों बार यही हूं आशिष देता,
रहो बुद्धि-सम्पन्न वीरवर! पुण्य-प्रणेता।।

कृपया 'प्रतिध्वनि' (पृष्ठ 50) का भी अवलोकन करें। –सम्पादक

संदर्भ : सुभाष जयंती

सुभाषचन्द्र बोस के जीवन दर्शन में 'शिक्षा'

❑ नरेश शर्मा

सुभाषचन्द्र बोस भारत के ऐसे महानायक है जिनकी शाश्वत स्मृति भारतीयों के दिलों में अमिट रूप से बसी है। अद्भुत व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी सुभाष बाबू ऐसे जननायक थे जिन्होंने अपने आदर्श, सिद्धान्त और जीवन दर्शन को भारत की स्वतन्त्रता, उन्नति और भविष्य निर्माण के लिए व्यावहारिक रूप से फलीभूत करने का प्रयास किया।

सुभाषचन्द्र बोस के समृद्ध जीवन दर्शन में शिक्षा के विविध पहलुओं पर गहन चिंतन मिलता है। उन्होंने अपने जीवनकाल में जो कुछ अनुभव किया उसे आधार बनाकर उन्होंने शिक्षा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं व उनके समाधान हेतु व्यावहारिक विकल्प प्रस्तुत किये हैं। छात्र और युवा शक्ति को देश का भविष्य और कर्णधार मानते हुए उन्होंने उनके सर्वांगीण विकास की आवश्यकता पर बल दिया है। सुभाषचन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी 1897 में राय बहादुर जानकीनाथ बोस के घर हुआ था।

सुभाषचन्द्र बोस की प्रारम्भिक शिक्षा एक यूरोपीयन स्कूल में हुई। सुभाष बाबू बचपन से ही निर्भीक और राष्ट्र सम्मान के लिए प्राण न्यौछावर कर देने का जज्बा रखते थे। छात्र जीवन में एक अंग्रेज अध्यापक से भारतीयों के लिए "ब्लैक मंकी" शब्द सुनकर उनका खून खौल उठा और उन्होंने उस अंग्रेज अध्यापक के गाल पर तमाचा जड़ दिया। सन् 1919 में उन्होंने प्रथम श्रेणी से बी.ए. पास किया।

भारतीय इतिहास में सुभाषचन्द्र बोस प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने देश के लिए त्याग की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करते हुए आई.सी.एस. की नौकरी को गुलामी का प्रतीक मानकर उसे ठोकर मार दी और वो आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उन्होंने अपने भाई शरतचन्द्र बोस को लिखा–"मैं विदेशी शासन की अधीनता स्वीकार कर लूं, वह असंभव है।"

शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी आत्मकथा में लिखा

है–"प्रारम्भिक चरण में शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय होना चाहिए। उसकी जड़े अपनी ही मातृभूमि में होनी चाहिए। हमें अपना मानसिक आहार अपने ही देश की संस्कृति से प्राप्त करना चाहिए। अगर किसी पौधे को कच्ची आयु में ही उसकी भूमि से उखाड़कर कहीं और रोप दिया जाए तो उसे खुराक मिलना कैसे संभव होगा? इसलिए हमें नियमतः लड़के–लड़कियों को कच्ची उम्र में ही एकदम अकेले विदेशों में स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजने के विचार का विरोध करना चाहिए। उच्चतर चरणों में शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर सकती है, तभी विद्यार्थी विदेश जाकर लाभान्वित हो सकते हैं तभी पूर्व और पश्चिम का ऐसा समन्वय हो सकता है, जिससे दोनों का ही लाभ होगा...।"

उन्होंने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और उनमें राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना था। अपनी मां प्रभावती देवी को 1912–13 में लिखे पत्र में उन्होंने कहा– "शिक्षा का उद्देश्य है कि बुद्धि को कुशाग्र बनाना। विवेक शक्ति को विकसित करना। यदि ये दोनों उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं तब यह मानना चाहिए कि शिक्षा का लक्ष्य पूरा हो गया। ...पुस्तकीय जानकारी से मुझे घोर वितृष्णा है। मैं चाहता हूँ चरित्र, विवेक, कर्म। चरित्र के अन्तर्गत सभी कुछ आ जाता है। भगवान की भक्ति, देशभक्ति, भगवान को पाने की उत्कण्ठा, आकांक्षा।" अपनी मां प्रभावती देवी को लिखे पत्र में भी उन्होंने कहा–"विद्यार्थी का प्राथमिक कर्तव्य है चरित्र निर्माण। हम किसी के चरित्र को उसके कार्यों द्वारा आंक सकते हैं। कार्य ही चरित्र को व्यक्त करता है।"

चरित्र निर्माण के साथ सत्य ज्ञान को अपने जीवन में अंगीकार करना भी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आगे भी लिखा है कि–"पुस्तकीय जानकारी एक व्यर्थ वस्तु है, जिसका कोई महत्त्व नहीं... विद्यार्थियों का प्रायः यह विचार होता है। अगर उन पर विश्वविद्यालय की मोहर लग गई तो उन्होंने जीवन का परम लक्ष्य पा लिया। अगर किसी को ऐसी मोहर लगने के पश्चात् भी वास्तविक ज्ञान प्राप्त न हुआ तो? मुझे ऐसी शिक्षा से घृणा है। क्या इससे अधिक अच्छा यह नहीं है कि हम अशिक्षित ही रह जाएं?"

शिक्षा हमारे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में हमारी संस्कृति के आदर्श और मूल्य सुचित किए जा सके। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है– "यदि कोई शिक्षा प्रणाली भारतीय परिस्थितियों, भारतीय आवश्यकताओं और भारतीय इतिहास और सामाजिकता की अवहेलना, उपेक्षा करती है तो वह इतनी अवैज्ञानिक होगी कि उसे कोई भी युक्तिसंगत समर्थन नहीं दिया जा सकता। पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक समन्वय के प्रति उचित मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण यह नहीं होगा कि भारतीय बच्चों पर कच्ची उम्र में अंग्रेजी शिक्षा लाद दी जाए, बल्कि यह होगा कि जब वे विकसित हो जाए तो उन्हें पश्चिम के निकट व्यक्तिक सम्पर्क में लाया जाए, जिससे वे स्वयं यह निर्णय कर सके कि पूर्व में पश्चिम में क्या अच्छा है और क्या नहीं है।"

सुभाषचन्द्र बोस की दृष्टि में बिना आदर्श और सिद्धांत के मानव जीवन व्यर्थ है अतः राष्ट्रोत्थान में छात्र व युवा शक्ति को

उन्होंने मुख्य आधार मानकर भारत के सुनहरी भविष्य का स्वप्न देखा था अमरोहा स्टूडेन्ट कॉन्फ्रेन्स को 1929 में सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा "जीवन का अर्थ-मूल्य और महत्त्व तभी है, जब जीवन किसी आदर्श के लिए हो... छात्रों को अपने आप को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए जैसे वे समाज के पुर्ननिर्माण के पुरोहित हो। स्वाधीनता के पथ पर आगे बढ़ने वाले मशालची हो। इसमें संदेह नहीं कि स्वाधीनता का पथ कंटकाकीर्ण है परन्तु यही पथ अमरता प्राप्त करने का पथ है। यह अनश्वर कीर्ति का पथ है। भारत के छात्रों को एक होकर कंधे से कंधा मिलाकर इस अमर अनुपम पथ पर बढ़ना चाहिए।"

अंग्रेजी स्कूलों के आकर्षण को व्यर्थ और तथ्यहीन समझकर उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है- "मैं कुछ भारतीयों के इस प्रयत्न की तीव्र निंदा करता हूँ कि वे इंगलिश पब्लिक स्कूलों के ढंग पर अंग्रेज शिक्षकों की सहायता से भारत में स्कूल चलाना चाहते हैं। यह सम्भव है कि कुछ लड़के, विशेषतः वे जो मानसिक दृष्टि से बर्हिमुखी हैं, वैसे वातावरण में काफी खुशी अनुभव करें, लेकिन अर्न्तमुखी बच्चों को कष्ट अनुभव अवश्य होगा और उस स्थिति में इस पद्धति के और इसके पीछे जो भी जीवन दृष्टि है, उसके प्रति विरोधी प्रतिक्रिया अवश्यम्भावी है।"

प्राथमिक शिक्षा के प्रभावी शिक्षण हेतु सुभाषचन्द्र बोस ने हरिचरण बागची को सुझाव देते हुए पत्र में लिखा है-"प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा में महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि प्राथमिक शिक्षा में नवीन तथ्य सिखाने का प्रयत्न आवश्यक है। उच्च शिक्षा में नवीन तथ्य सिखाने के साथ तर्क शक्ति का विकास भी होना चाहिए.... प्राथमिक शिक्षा में इन्द्रिय शक्ति पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। इसका कारण यह है कि उस समय चिंतन-शक्ति और स्मरण शक्ति भलीभांति जागती है। अतः जिस विषय के सम्बन्ध में बताया जाए- जैसे गाय, घोड़ा, फल, फूल तो इन पदार्थों को नेत्रों के सामने रखे बिना सीखना कठिन होगा।"

सुभाष बाबू 'करके सीखने' को अधिक व्यावहारिक शिक्षण पद्धति मानते थे। खेल-खेल में शिक्षण के माध्यम से बच्चों को गुढ़ और जटिल तथ्य सहज ही समझाए जा सकते हैं। बच्चे शिक्षण के साथ आनन्द का भी अनुभव करते हैं। हरिचरण बागची को लिखे पत्र में उन्होंने कहा-"मानसिक प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षा के मूल में त्रुटि रह जाती है। अपने हाथों से कोई वस्तु बनाने में जिस प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है उसी प्रकार का आनन्द संसार में बहुत ही कम मिल पाता है। सृष्टि आनन्द से परिपूर्ण है। सृजन के इस आनन्द को बच्चे थोड़ी उम्र में ही महसूस करने लगते हैं। जबकि वे कोई वस्तु बनाते हैं चाहे वह बगीचे में बीज बोकर पौधे उगाना हो या अपने हाथों से पुतला बनाना हो किसी भी वस्तु की नई सृष्टि करके बच्चे स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करते हैं। जिन उपायों से छात्र इस आनन्द का किशोरवय में ही उपभोग कर सकें, उनका प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए।"

बालकों में शिक्षा के प्रति रूचि जागृत करने और स्कूलों के प्रति भय से मुक्त करने हेतु उन्होंने विचार दिया है कि शिक्षकों को बच्चों की मानसिकता को समझना होगा तभी वे शिक्षा के प्रति आनन्द की भावना उत्पन्न कर पाएंगे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में कहा है-" वर्तमान समय में भारत में जो लोग बाल शिक्षा की समस्या का समाधान करना चाहते है, उन्हें यह देखना होगा कि वे कौन से प्रतिकूल तत्त्व है जो लोग बाल शिक्षा की समस्या का समाधान करना चाहते है, उन्हें यह देखना होगा कि वे कौन से प्रतिकूल तत्त्व है जो आज बच्चे की मानसिकता को प्रभावित कर रहे हैं। साथ ही यह देखना भी आवश्यक होगा कि वे कौनसी लोरियां हैं, जिन्हे गा कर माताएं बच्चों को सुलाती हैं अथवा वे कौनसे उपाय हैं, जिनसे किसी अनिच्छुक शिशु को राजी करके खाना खिलाया जाता है। अक्सर बच्चा इन दोनों मामलों में डर के कारण ही कुछ करता है।"

प्रेमपूर्ण व्यवहार के साथ ही शिक्षक बालकों को ज्ञान दे सकते हैं। उनकी आत्मकथा का यह अंश उल्लेखनीय है- "संवेदनशील और भावुक प्रकृति

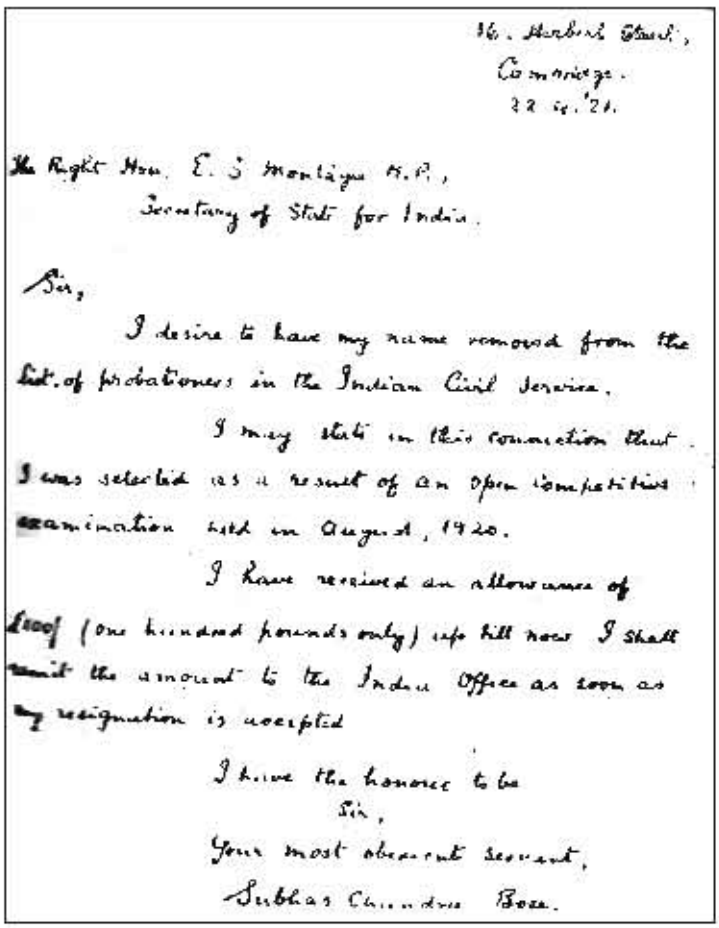

16, Harbord Street,
Cambridge.
22.10.'21.

The Right Hon. E. S. Montagu M.P.,
Secretary of State for India.

Sir,

I desire to have my name removed from the list of probationers in the Indian Civil Service.

I may state in this connection that I was selected as a result of an open competitive examination held in August, 1920.

I have received an allowance of £100 (one hundred pounds only) up till now. I shall remit the amount to the India Office as soon as my resignation is accepted.

I have the honour to be
Sir,
Your most obedient servant,
Subhas Chandra Bose.

यह पत्र सुभाष बाबू की हस्तलिपि में लिखा वह दुर्लभ दस्तावेज है जो आई.सी.एस. के प्रोबेसनर की सूची से अपना नाम पृथक करने के लिए उन्होंने भारत सचिव को लिखा था। -संपादक

के बच्चों से व्यवहार करते हुए बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसे बच्चों को किसी घिसीपिटी लीक पर जबरदस्ती चलाने से कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि उन्हें जितना भी दबाया जाएगा वे उतने ही अधिक विद्रोही बनते जाएंगे। अंत में संभव है, एकदम जिद्दी विद्रोही बन जाएं।''

सुभाषचन्द्र बोस की दृष्टि में केवल परीक्षाएं पास करने से हमारी योग्यता नहीं झलकती, हमें सुयोग्य नागरिक बनना चाहिए। परीक्षाओं के खौफ से बालकों को मुक्त रखा जाना चाहिए। परीक्षा प्रणाली की उपयोगिता सुभाष बाबू की दृष्टि में तभी उपयोगी है जब वह मानव जीवन के लक्ष्य निर्माण में सहयोगी बने। मां प्रभावती देवी को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था कि-''हम परीक्षाओं के निकट आते ही बेचैन होने लगते हैं, लेकिन हम यह नहीं सोचते कि हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण परीक्षा का क्षण है। **हमारा परीक्षक हमारा प्रभु है। हमारा धर्म है। शैक्षणिक परीक्षाएं न कोई ज्यादा महत्व की हैं, और न स्थायी मूल्य की। लेकिन जीवन की परीक्षाएं अनन्तकाल के लिए हैं।** उनके नतीजे हमें इस जीवन में भुगतने होते हैं और आने वाले जन्मों में भी।''

सुभाषचन्द्र बोस ने योग्य शिक्षकों की महत्ता पर विशेष रूप से बल दिया है- ''यदि शिक्षक योग्य नहीं तो प्राथमिक शिक्षा सफल नहीं हो सकती। सर्वप्रथम तो शिक्षक को प्राथमिक शिक्षा के मौखिक सिद्धान्त समझने चाहिए तभी वह नई प्रणाली से शिक्षा प्रदान कर सकता है। शिक्षकों को अपने हृदय में प्रेम और सहानुभूति को स्थान देना होगा। यह आवश्यक है कि वह छात्रों की स्थिति में नहीं कर सकता तो वह किस प्रकार छात्रों की कठिनाइयों और भ्रान्ति को समझ सकता है। इसी प्रकार शिक्षा के अध्यापक का व्यक्तित्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। प्रमुख उत्पादक तीन हैं: 1. शिक्षक का व्यक्तित्व, 2. शिक्षा प्रणाली, 3. शिक्षा के विषय और पाठ्यपुस्तकें। यदि शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं है तो किसी भी प्रकार की शिक्षा सम्भव नहीं हो सकती। चरित्रवान, व्यक्तित्व सम्पन्न शिक्षक मिल जाए तो शिक्षा प्रणाली निर्धारित हो सकती है। फिर तो किसी भी विषय की पुस्तक सरलता से पढ़ाई जा सकती है।

सुभाषचन्द्र बोस ने छात्रों में स्वतंत्र चिंतन प्रणाली के विकास की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना है, ताकि छात्रों से विवेक और तर्क शक्ति का विकास हो सके और वे अपने भावी जीवन में सत्य-असत्य के मध्य भेद करना सीखें। हेमन्त कुमार सरकार को लिखे पत्र में उन्होंने कहा- ''हमें भावनाओं के झंझावत में भी शांत रहना होगा। तभी और केवल तभी हम अपने जीवन के निर्माण के लिए रचनात्मक आधार प्राप्त कर सकेंगे। हमें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा और गहराई से मनन करना होगा....भावना के बिना चिंतन असम्भव है। यदि हमारे पास केवल भावना ही पूंजी है तो चिंतन कभी भी फलदायक नहीं हो सकता। बहुत सारे लोग आवश्यकता से अधिक भावुक होते हैं। परन्तु वह कुछ सोचना नहीं चाहते। कुछ व्यक्तियों को तो जानकारी भी नहीं होती है कि चिंतन किस प्रकार किया जाए... यदि हमारा कोई आदर्श है तो उसको हम जीवन में उतार सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हमारा उद्देश्य पूर्णता प्राप्त करना है तो हम पूर्ण हो सकते हैं, अन्यथा पूर्णता के आदर्श का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा।''

विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को महत्त्वपूर्ण मानते हुए उन्होंने कहा मानसिक शिक्षा के साथ-साथ शिल्प शिक्षा को भी आवश्यक माना है- **''हरिचरण बागची को 1926 में लिखे पत्र में उन्होंने कहा- ''केवल मानसिक शिक्षा न देकर शिल्प शिक्षा की भी व्यवस्था भी साथ-साथ होनी चाहिए। पुतला बनाना, मिट्टी से मानचित्र बनाना, फोटो खींचना, रंग का प्रयोग, गाना सीखना इन सबकी व्यवस्था होनी चाहिए। इससे न केवल सर्वांगीण शिक्षा मिलेगी अपितु साथ ही साथ लिखने पढ़ने की भी विशेष उन्नति होगी।** कई प्रकार की विद्या सीखने से लड़कों की बुद्धि बढ़ती है, लिखने पढ़ने में मन लगता है-भय नहीं लगता। विभिन्न वस्तुएं न दिखाकर केवल रटाते हुए लिखाई पढ़ाई आरम्भ कर देने से तो उस लिखाई-पढ़ाई में आनन्द नहीं आता। बच्चा लिखाई-पढ़ाई से भयभीत हो जाता है और उसकी बुद्धि का विकास नहीं होता।''

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है अतः स्वास्थ्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए हेमन्त सरकार को लिखे पत्र में उन्होंने कहा- ''अपने शरीर के सम्बन्ध में लापरवाही का कारण पूर्वी देशों की उदासीनता है। शरीर का ध्यान रखने से क्या होगा? मिट्टी का शरीर तो दो दिन बाद मिट्टी में ही मिल जाएगा। ऐसी उदासीनता कर्मवीर के लिए अवांछनीय है। यदि सबल आशावादी भावना लानी है तो तुम्हें थोड़ा पाश्चात्य लोगों की भांति बनाना चाहिए.... मैं अधिक कुछ नहीं कह सकता परन्तु अपनी लापरवाही के कारण यदि अल्पायु में ही तुम्हारा शरीर नष्ट हो गया, तब उसके लिए तुम स्वयं उत्तरदायी होंगे। अनेक विषयों पर मनुष्य का जोर नहीं चलता परन्तु शरीर का ध्यान भी न रखना एक बहुत बड़ा अपराध है। यह अपराध केवल अपने ही प्रति नहीं, वरन् देश के प्रति भी है। यदि छोटी आयु में शरीर की शक्ति नष्ट हो जाए, तब समझना चाहिए- देश के नवयुवकों के आदर्श में कुछ कमी है। तुम्हारा शरीर केवल तुम्हारा ही नहीं है, तुम तो केवल उसके संरक्षक हो।''

सुभाषचन्द्र बोस शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए खेलकूद के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी आत्मकथा में लिखते हैं- ''खेलकूद व्यक्ति में अनेक वांछनीय गुण विकसित करते हैं। खेलकूद के प्रति मुझे लापरवाही नहीं दिखानी चाहिए थी। ऐसा करके मैंने शायद असमय प्रौढ़ता की भावना विकसित कर ली और अंतर्मुखता की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। समय से पूर्व की परिपक्वता अच्छी नहीं।''

आस्तिक और आध्यात्मिक हुए बिना विद्यार्थियों का न तो चरित्र बन सकता है और न ही जीवन लक्ष्य ज्ञान तभी उपयोगी है जब श्रृद्धा हो। उन्होंने लिखा- ''ज्ञान असीम है। वह छोटी बुद्धि द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता। इस कारण भक्ति की आवश्यकता होती है। मैं तर्क करना नहीं चाहता, क्योंकि अज्ञानी हूँ। अब तो मैं केवल यह दृढ़ विश्वास करना चाहता हूँ, ईश्वर का अस्तित्व है। मेरी आस्था है। विश्वास से भक्ति उत्पन्न होगी और भक्ति से ज्ञान उपजेगा। महर्षियों ने कहा है, भक्ति ज्ञानीय कला से, भक्ति ज्ञान के पीछे भागती है। शिक्षा

का अर्थ बुद्धि को परिमार्जित करना है। सत्य-असत्य की विवेचना शक्ति का अर्जन करना है।''

सुभाष बाबू के जीवन दर्शन में छात्र-युवावर्ग देश का भविष्य है। अतः उन्हें सुयोग्य नागरिक बनाने की जिम्मेदारी शिक्षण संस्थाओं की है। **1929 में लाहौर में छात्र सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था- ''किताबी कीड़े'', स्वर्ण पदक प्राप्त करनेवाले और कार्यालय के लिए लिपिक पैदा करने के लिए ही विश्वविद्यालयों को चेष्टा नहीं करनी चाहिए, वरन् ऐसे चरित्रवान व्यक्ति बनाने की चेष्टा करनी चाहिए जो अपने जीवन को देश के विभिन्न भागों में महत्ता अर्जित कर अपनी महत्ता प्राप्त करें।''**

अपने जीवन में ज्ञान को अंगीकार करने की विधि समझाते हुए अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है कि-**''पूर्ण ज्ञान तभी संभव है जब ज्ञात और ज्ञेय एकाकार हो जाए। मानसिक स्तर पर जो सामान्य चेतना का स्तर है, ऐसा होना संभव नहीं है। यह अति मानसिक स्तर पर अथवा चेतना द्वारा ही संभव होता है।** मगर अतिमानसिकता और चेतना के अतिमानसिक स्तर की हिन्दू दर्शन की धारणा उसकी अपनी अनोखी धारणा है, जिसको पाश्चात्य दार्शनिक स्वीकार नहीं करते। हिन्दू दर्शन के अनुसार पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि तभी संभव है। जब हम यौगिक बोध अर्थात् किसी प्रकार के अन्तः प्रज्ञात्मक बोध द्वारा अतिमानसिक स्तर तक पहुँच सकें।''

आचरण में शिष्टता विद्यार्थी के जीवन की प्राथमिक शर्त है। उन्होंने कहा था- ''जब हम दूसरों की आलोचना करें, हम स्वयं पर नियंत्रण और आत्म संयम रखे। आत्मसंयमी और शालीन होकर हम कुछ खोएंगे नहीं वरन् हम अधिक प्राप्त कर सकेंगे।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि सुभाष चन्द्र बोस के चिंतन में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थी दोनों को राष्ट्रहित के लिए सर्वप्रमुख माना है।

-प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि., रामगढ़ (अलवर)
मो. 9829730611

संदर्भ : युवा दिवस

युवा वर्ग राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी

❒ जसवन्त सिंह चौहान

राष्ट्र का निर्माण एक बहुमुखी और निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। भूमि, जन और संस्कृति को राष्ट्र के प्रमाणक अंग माने गये हैं। इन तीनों ही अंगों का मंगल विधान राष्ट्र की स्थिति के लिए आवश्यक होना है किसी भी समाज के निर्माण में युवा वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। युवा पीढ़ी के पास अपने नये सपने होते हैं, उनका शारीरिक और मानसिक बल नया कर सकने में सक्षम होता है। इनका मानस नये की ओर स्वभावतः उन्मुख होता है। युवा वर्ग की नई-नई तकनीक का विकास करते हैं, अपनाते हैं और इस प्रकार उत्पादन के नये ढांचे खड़े करते हैं। दरअसल जो राष्ट्र अपने नवयुवकों को नया करने का समुचित अवसर प्रदान करता है उस देश में तेजी से विकास होता हैं। राजनीति के इतिहास को उठाकर देखें तो राष्ट्रों की भाग्यलिपियाँ युवाओं ने ही अपने खून की स्याही से लिखी है हमारे देश की आजादी से लेकर अब तक हर क्षेत्र मे युवा वर्ग की भूमिका हर जगह आगे रही है।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू-ए कातिल में है।

भारत को आजाद हुए 67 वर्ष हो चुके है। परन्तु हमारे अधिकांश निर्माण कार्य अधूरे अथवा निष्क्रिय पड़े हुए हैं। हमारे देश में भ्रष्टाचार, तस्करी, बलात्कार, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, बेरोजगारी आदि का बोलबाला हैं। इन सबका मूक कारण यह है कि हमारी जितनी भी योजनाएँ चली आ रही है, वे सब घन सापेक्ष है, जन सापेक्ष नहीं हैं। विकास कार्य एक विशिष्ट वर्ग के लोगों के हाथों में सौंप दिये गये हैं और जनशक्ति की उपेक्षा की गई है। यदि हमारे युवा वर्ग को यह कार्य दिया जाए तो वे पूरे उत्साह के साथ इन्हें पूरा कर डालें और समाज में व्याप्त बुराइयां सहज ही समाप्त हो जाए। युवकों में कई स्थानों पर ग्राम विकास, प्रौढ़ शिक्षा, समाज सुधार, दहेज विरोध आदि कार्यों को सफलता पूर्वक सम्पादित करके यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारा युवा वर्ग राष्ट्र के नव निर्माण के लिए पूर्णतः सक्षम एवं समर्थ है।

युवा वर्ग में सत्य, निष्ठा और न्याय की त्रिवेणी बहती है। बुराइयों को दूर करके देश में शिक्षा, समृद्धि, समानता, वैज्ञानिक दृष्टि लाभ परमावश्यक हैं तभी देश का नव निर्माण हो सकता है। इसके लिए लम्बी अवधि तक निरन्तर जोश की आवश्यकता है। यह कार्य अखंड परिश्रम, अक्षय बल और सर्वस्य समर्पण माँगता है जो कि युवा वर्ग की देश के नव निर्माण में महती भूमिका है युवा वर्ग की संख्या देश में जनसंख्या के 65% तक युवा वर्ग हैं।

इतिहास गवाह है कि आज समाज में जो भी परिवर्तन या सुधार हुआ वह नवयुवाओं के

राष्ट्रभक्ति

तुमने दिया देश को जीवन
देश तुम्हें क्या देगा
अपना ओज कायम रखने को
नाम तुम्हारा लेगा।

-रामधारी सिंह दिनकर

भारत माता की भक्ति को ईश्वर भक्ति मानकर स्वामी सत्या मित्रा नंद गिरि जी ने हरिद्वार में भारत माता मन्दिर (Temple of BHARAT MATA) की स्थापना की। यह मन्दिर बहुत ही भव्य है। इस अद्भुत भारत माता मन्दिर के तोरण द्वार पर दिनकर जी की रचित उपरोक्त ओजस्वी पंक्तिया अंकित है जो मन्दिर में आने वालों के हृदय में राष्ट्रभक्ति के भाव भरती है।

बल पर हुआ। भगवान श्रीरामचन्द्र ने जब रावण का संहार किया था, तब वे युवा ही थे। कंस का वध करने वाले कृष्ण भी युवा थे, महाराणा प्रताप, विवेकानन्द, राजाराम, भगतसिंह, सुभाष, नेहरुजी जो युवा अवस्था से ही संघर्ष की राह पर चले थे। युवाओं ने ही देश में सन् 2014 में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाकर जनतंत्र का निर्माण किया। युवा वर्ग राष्ट्र के कर्णधार होते हैं। देश और समाज उन्हीं पर निर्भर होता है। परन्तु आज हमारे देश की दशा अत्यन्त सोचनीय है। समाज में एकता, शिक्षा, जागरुकता, राष्ट्रीय चेतना, कर्तव्य बोध, नैतिकता आदि की कमी है, स्वार्थ बढ़ा-चढ़ा है। अनुत्तरदायित्व फैलता जा रहा है। दिखावा एवं अंधविश्वास अभी भी समाज को जकड़े हुए हैं। ऐसी स्थिति में युवकों का दायित्व निश्चित ही बढ़ जाता है। वर्तमान में सामाजिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया है। भाई भाई को नहीं चाहता है। इसे अच्छी तरह से व्यवस्थित करने का दायित्व युवकों पर ही, किन्तु आज की युवा पीढ़ी की दशा भी सोचनीय है। युवा पीढ़ी में कुंठा, निराशा, तोड़फोड़ की प्रवृत्ति, दायित्वहीनता, नशा प्रवृत्ति अधिक व्याप्त है इसलिए वे भारतीय भूमि पर समाज का पश्चिमी ढांचा खड़ा करना चाहिए। शिक्षा का अर्थ उनकी निगाह में केवल नौकरी प्राप्ति का एक साधन रह गया है। अतः युवा पीढ़ी में जहां देश के प्रति दायित्व है, वहीं अपने प्रति भी उसे कुछ सावधानी बरतनी है। पहले युवक-युवती स्वयं को सुधारे, स्वयं को शिक्षित करें। स्वयं जिम्मेदार बनें, स्वयं को चरित्रवान बनाएं, तभी वे समाज की प्रगति में सहायता कर सकते हैं।

देश में शांति व व्यवस्था बनाए रखना युवा शक्ति का प्रमुख दायित्व है। विनाशकारी तत्वों की रोकथाम युवकों के सहयोग से ही सम्भव है। वे हड़ताल, आगजनी, तोड़फोड़ आदि को रोके ताकि सामाजिक वातावरण नहीं बिगड़े। समाज में धर्म व नीति की मर्यादा को बनाए रखना भी उनका कर्तव्य है। अच्छे चरित्र के अभाव में देश को सुखमय बनाया जा सकता। देश में अनेक चुनौतियों अशिक्षा, गरीबी, असमानता, शोषण, साम्प्रदायिकता और वर्ग भेद ऐसी चुनौतिया है जिनका मुकाबला किए बिना देश का नव निर्माण संभव नहीं है। प्रश्न यह है कि इनका मुकाबला कैसे किया जाए और क्या किया जाए। तो युवा वर्ग को अपना स्वयं विवेक जाग्रत करना चाहिए। उन्हें निश्चित करना चाहिए कि कौन से सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक मूल्य श्रेष्ठ हैं फिर उन मूल्यों को अपने जीवन में ढालना चाहिए। जब तक ऐसे ढले ढलाये जीवन चरित्र देश में नहीं होंगे, तब तक देश का नव निर्माण नहीं हो सकता। अंधेरे को लाठी से नहीं दीया जलाने से दूर किया जा सकता है। इसी भाँति युवा चरित्र या आत्मचरित्र से देश को स्वस्थ बनाया जा सकता है। अशिक्षा और अंधविश्वास तभी दूर हो सकते है जबकि युवी पीढ़ी स्वयं शिक्षित हो और लोगों को शिक्षित करने की कोशिश करें।

प्रायः नवयुवक जोशील होते हैं इसलिए वे शीघ्र ही आन्दोलन का रास्ता अपना लेते हैं। किसी भी बुराई को देखकर वे तोड़फोड़ पर उतर आते है। तोड़फोड़ करने वाला विध्वंसक हो सकता है, इंजीनियर या निर्माता नहीं हो सकता। युवकों को इंजीनियर बनना है, बुलडोजर नहीं।

देश के सामने ढेरों चुनौतियां खड़ी हैं जिनका सामना देश के युवा वर्ग को करना पड़ रहा है और करना पड़ेगा। देश में बढ़ती महंगाई, बेकारी, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद की समस्या का समाधान युवा वर्ग ही कर सकता है। अनुशासित, शिक्षित, स्वाभिमानी जागरुक और निष्पक्ष चिन्तक युवा ही देश को आने वाले विनाश से बचा सकते हैं, युवा वर्ग तुच्छ तात्कालिक लाभों में उलझाने वाली कुटिल लोगों की चालों को समझें और अपने भविष्य निर्माण के लिए यथार्थवादी तरीकों से डटकर संघर्ष करें।

युवा वर्ग को अपने निजी स्वार्थ त्याग करके देश को कुछ देना होगा क्योंकि आज अपना देश उस चौराहे पर खड़ा है कि उसको कहाँ जाना है, यह मालूम नहीं है। अतः देश को रास्ता युवा वर्ग को दिखाना है ताकि हमारा देश आगे बढ़े, खुशहाल बने और सम्पूर्ण विश्व में प्रगति करें और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में अपनी प्रतिभा को फैलाने में कामयाब हो सके। साथ ही अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाकर देश का नव निर्माण कर सकेंगे।

अध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय, परलाई
मु.पो.-झाड़ोली तह.-पिण्डवाड़ा (सिरोही)
मो. 9413775491

लेखक का सच

❒ रूपनारायण काबरा

एक बार पंच-तंत्र के रचयिता विष्णु शर्मा बच्चों के साथ खेल खेल रहे थे। उन्हें बच्चों के साथ खेलने में बड़ा आनन्द मिलता था। उनके साथ खेलते समय वे हर तरह की समस्या व परेशानी को भूल जाते थे। तभी उनका एक मित्र वहां आ पहुंचा। विष्णु शर्मा को बच्चों के साथ खेलते देख कर वह बोला, ''पंडित जी, आप इतने महान विद्वान होकर भी बच्चों के बीच खेल रहे हैं? क्या आपको यह शोभा देता है? मुझे आप जैसे विद्वान को बच्चों के साथ खेलते देखकर अत्यन्त अचरज हो रहा है।'' यह सुनकर विष्णु शर्मा बोले, ''क्यों इसमें अचरज की क्या बात है? खेलने से दिमाग स्वस्थ रहता है। खेल के माध्यम से व्यक्ति अपनी पीड़ा और दुख को भूल जाता है।'' इस पर उनके मित्र बोले, ''पर आप तो बड़े लेखक हैं। खेलने से आपका अमूल्य समय नष्ट नहीं होता? आप यह सोचिये न कि जितनी देर आप बच्चों के साथ खेल खेल रहे हैं उतने ही समय में किसी अच्छी रचना का सृजन कर सकते हैं।''

मित्र की बात पर विष्णु शर्मा मुस्कराने लगे और मित्र से बोले, ''तुम लेखक नहीं हो न इसीलिये इस तरह की बातें कर रहे हो वरना तुम कभी नहीं कहते। शायद तुम नहीं जानते कि बच्चों के साथ खेल कर, उनके बीच रहकर ही मैं उनके हाव-भाव को कुशलता से समझ कर अपनी रचना में उतार पाता हूं। बच्चों को जाने-समझे बिना भला उनके बारे में लिखना कैसे संभव है? अब तुम्हीं बताओ यदि तुम्हारा खाना खाने का मन न हो और तुम्हें खाना बनाना न आता हो तो क्या तुम अच्छा खाना बना पाओगे?''

मित्र बोला, ''नहीं पंडित जी, मैं आपकी बात का अर्थ समझ गया। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। बच्चों के लिये लिखने से पहले वास्तव में उनके भाव और कल्पनाओं का ज्ञान जरूरी है।'' यह कह कर मित्र चला गया और विष्णु शर्मा फिर से बच्चों के साथ खेलने में रम गये।

ए-438, किशोर कुटीर,
वैशाली नगर, जयपुर-302021
मो. 8233360830

आदेश-परिपत्र : जनवरी 2015

1. पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करने के निर्देश
2. आवंटित बजट का समय पर उपयोग करने के सम्बन्ध में।
3. गार्गी एवं प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह ब्लॉक स्तर पर आयोजित करने के सम्बन्ध में।
4. चोरी/गबन/राजकीय राशि की अनियमितता रोकने के संबंध में दिशा निर्देश।
5. स्वयं प्रमाणित दस्तावेज व्यवस्था 1 जनवरी 2015 से लागू करने सम्बन्धी निर्देश।
6. विभाग द्वारा क्रियान्वित छात्रवृत्ति योजनाएं वर्ष 2014-15

1. पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करने के निर्देश

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि/के-2/11968/मानदण्ड/वो-III /2000-02/09-10/ दिनांक 21.11.2014 ● कार्यालय आदेश

इस कार्यालय द्वारा समय-समय पर मण्डल अधिकारियों को निर्देश दिये जाते रहें हैं कि उनके मण्डल में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-II) पुरुष/महिला के नामांकन राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में नहीं हैं तथा उनके जन्मतिथि, वर्ग (एससी/एसटी) अथवा योग्यता अभिवृद्धि एवं अन्य संशोधन किये जाने हैं तो ऐसे प्रकरण एक सीमा के अन्दर-अन्दर निपटाये जावें।

इस कार्यालय के पत्र क्रमांक शिविरा/मा/वरिष्ठता/के-2/11968/मानदण्ड/वो-II/2000-02/05-06 दिनांक 11.09.2009 एवं सम संख्यक विज्ञप्ति दिनांक 18.09.2009 द्वारा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रसारित कर दिनांक 25.09.2009 तक उक्त कार्यवाही करने के निर्देशित किया गया था, तत्पश्चात इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 18.01.2010 एवं दिनांक 07.07.10, 04.08.11, 30.09.2011, 17.10.2012 एवं 6.2.2014 द्वारा क्रमशः दिनांक 31.03.2010 एवं 05.09.2010, 30.09.2011 एवं 30.6.2014 तक पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निस्पादन करने के निर्देश दिये गये थे, लेकिन अब भी कई मण्डलों द्वारा नामांकन/योग्यता-अभिवृद्धि/जन्मतिथि/वर्ग संशोधन इत्यादि के लिए प्रकरण भिजवाये जा रहें है।

समुचित इससे विदित होता है कि मण्डल स्तर पर कार्य की गति मंद हैं तथा इस कार्यालय द्वारा जारी निर्देशें की पालना नहीं हो रही हैं अतः मण्डल अधिकारियों को पुनः अवसर देते हुए पाबन्द किया जाता हैं कि दिनांक 31.03.2015 तक पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निस्पादन करें एवं निदेशालय स्तर पर निपटायें जाने वाले प्रकरण तत्काल निदेशालय को भिजवावें। अब भी यदि पुराने लम्बित प्रकरणों का निस्तारण नहीं होता हैं, तो यह जिला/मण्डल अधिकारियों के कार्य के प्रति शिथिलता का द्योतक हैं। अतः उपरोक्त के लिए तत्काल करणीय कार्यवाही सुनिश्चित करें।

(सुवालाल) निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर, ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि/के-2/11968/मानदण्ड/वो-III/2000-02/09-10/ दिनांक 21.11.14

2. आवंटित बजट का समय पर उपयोग करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2014-15/74 दिनांक 02.12.2014 ● विषय : आवंटित बजट का समय पर उपयोग करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विभिन्न उपमदों में आपके कार्यालय को आवंटित बजट राशि का दिनांक 01.12.2014 तक आईएफएमएस साईट पर मिलान करने पर व्यय की स्थिति बहुत ही कमजोर सामने आई है। मुख्य रूप से छात्रवृत्तियां, वर्दियां, वाहनों का किराया और 62-कम्प्यूटराईजेशन में व्यय बहुत ही कम हुआ है। आवंटित बजट का समय पर उपयोग नहीं करने से आगामी बी.एफ.सी. बैठक के दौरान विभाग के स्वीकृत बजट में कमी हो सकती है। अतः आपको पुनः निर्देश दिये जाते हैं कि आवंटित बजट का चालू माह में ही उपयोग किया जाना सुनिश्चित करावें। समय पर राशि का उपयोग नहीं करने एवं वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर बजट का समर्पण करने पर विभाग की देयताओं को आगामी वित्तीय वर्ष में ले जाने पर आपके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु प्रकरण निदेशक महोदय के ध्यान में लाया जावेगा।

वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2014-15/74 दि.2.12.14

3. गार्गी एवं प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह ब्लॉक स्तर पर आयोजित करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स-।/गार्गी/60125/2013-14/ दिनांक 01.09.2014 ● विषय : गार्गी एवं प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह जिला स्तर के स्थान पर ब्लॉक स्तर पर आयोजित करने के संबंध में। ● संदर्भ : राज्य सरकार का पत्रांक प. 22(3) शिक्षा-1/2008 जयपुर दिनांक 12.8.2014

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र द्वारा राज्य सरकार के निर्देशानुसार गार्गी एवं प्रोत्साहन पुरस्कार समारोह अब तक जिला मुख्यालयों पर प्रति वर्ष बसन्त पंचमी के दिवस पर मनाया जाता रहा है। पुरस्कृत होने वाली बालिकाओं की संख्या को मद्देनजर रखते हुए राज्य सरकार के प्रासंगिक पत्र के निर्देशानुसार यह पुरस्कार समारोह ब्लॉक स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

अतः हर वर्ष यह पुरस्कार बसन्त पंचमी पर जिला मुख्यालय के स्थान पर ब्लॉक स्तर पर समारोह पूर्वक मनाया जावे। इसका उचित प्रचार-प्रसार करावें। ● निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

4. चोरी/गबन/राजकीय राशि की अनियमितता रोकने के संबंध में दिशा निर्देश।

● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● परिपत्र ● विषय

: चोरी/गबन/राजकीय राशि की अनियमितता रोकने के संबंध में दिशा निर्देश।

अधोहस्ताक्षरकर्ता के ध्यान में लाया गया है कि आहरण एवं वितरण अधिकारियों द्वारा कोष कार्यालय एवं बैंक से बिलों के लेन-देन एवं राशि के आहरण के पूर्व एवं पश्चात् सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों की प्रक्रिया की पालना नहीं की जा रही है, इससे विभाग में गबन एवं वित्तीय अनियमितताओं की घटनाऐं बढ़ती जा रही है। अतः विभाग के समस्त अधिनस्थ आहरण एवं वितरण अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वे विद्यालयों/कार्यालयों में वित्तीय अनियमितताओं एवं चोरी/गबन के मामलों में पूर्व में जारी निर्देशों के साथ-साथ नियमानुसार निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें। इसके अभाव में यदि कोई चोरी/गबन संबंधी वित्तीय अनियमितता होती है तो इसकी समस्त जिम्मेवारी संबंधित आहरण वितरण अधिकारी की होगी :-

1. सभी आहरण एवं वितरण अधिकारी बिलों को कोषागार में भेजने से पूर्व बिल रजिस्टर में उसकी प्रविष्टियां करावें, इसके अभाव में किसी भी विपत्र पर हस्ताक्षर नहीं करें। बिल रजिस्टर तथा बिल पर हस्ताक्षर करने से पूर्व उस बिल की सत्यता की पूर्णरूप से जाँच करेंगें।
2. प्रत्येक बिल 2 प्रतियों में तैयार किये जायेंगे जिसकी कार्यालय प्रति में संबंधित लिपिक के पठनीय हस्ताक्षर भी होंगे।
3. यदि विपत्र में कोई कांट-छांट हो तो आहरण वितरण अधिकारी प्रत्येक कांट-छांट पर लघु हस्ताक्षर करेगा।
4. समस्त बिलों को पारित हेतु कोष कार्यालय को भिजवाते समय बिल प्रेषण पंजिका में प्रविष्टि के उपरान्त ही आहरण वितरण अधिकारी के हस्ताक्षर से भेजा जावे।
5. समस्त आहरण वितरण अधिकारी माह में दो बार उक्त पंजिका का अवलोकन करेंगे कि कितने बिल पारित हेतु भेजे गये है तथा कितने बिल पारित शुदा प्राप्त हुए है।
6. प्रत्येक माह में किये गये व्यय का विवरण जि.शि.अ. के माध्यम से वितीय सलाहकार शिक्षा निदेशालय बीकानेर को आवश्यक रूप से भिजवायें जावे।
7. प्रत्येक माह के अंत में कोषालय में जमा राशियों के मिलान की ही तरह माह में दो बार किये गये समस्त व्यय का भी मिलान किया जाना सुनिश्चित करावें। यदि कोई विभेद पाया जाता है तो इसे कोषालय से सम्पर्क कर सही करावें तथा इसकी सूचना तुरंत सम्बन्धित जिशिअ तथा निदेशालय के वितीय सलाहकार को प्रेषित करें।
8. राजकीय राशि के गबन/दुरूपयोग अथवा चोरी के संबंध में जैसे ही नुकसानी राशि 2000 रु. से अधिक हो तो उसकी सूचना संबंधित अधिकारी अपने से उच्चतर अधिकारी एवं निदेशालय को प्रेषित करेंगे तथा प्रकरण को महालेखाकार राजस्थान जयपुर में दर्ज करवाकर निदेशालय को सूचित करेंगे।
9. चोरी/गबन/अनियमितता के प्रकरणों में विभागीय कार्यवाही सामान्य वित्तीय एवं लेखानियम पार्ट-1 के नियम 20 से 23 व परिशिष्ट 3 के अनुसार की जानी सुनिश्चित करावें तथा तुरंत कार्यवाही प्रारंभ कर दण्डादेश पारित करें तथा जिन प्रकरणों में निदेशालय स्तर से कार्यवाही की जानी हो तो उसके प्रस्ताव तैयार कर निदेशालय को प्रेषित करावें।
10. चोरी/गबन/अनियमितता के प्रकरणों में प्राथमिक जाँच सम्पन्न करावें तथा प्राथमिक जाँच के निष्कर्षों के आधार पर वसूली निश्चित की जावे। वसूली के अभाव में यदि कोई कार्मिक सेवानिवृत हो जाता है और वसूली नहीं हो सके तो उसकी जिम्मेवारी आहरण विरण अधिकारी की होगी।
11. यदि किसी प्रकरण में कोई अधिकारी/कर्मचारी सेवानिवृत होने के उपरान्त पेंशन प्राप्त कर रहा है तो जाँच रिपोर्ट के निर्णय के आधार पर उनसे ही वसूली की जानी है तो वित विभाग के आदेश क्रमांक ए. 15(9)वित/नियम/97 दिनांक 30.09.1999 में उल्लेखित बिन्दु 1 से 5 के अनुसार कार्यवाही कर अंतिम कार्यवाही हेतु प्रकरण निदेशालय को प्रेषित करें।

वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/लेखा/डी-4/विविध/2014-15/131 दिनांक 26.11.14

5. स्वयं प्रमाणित दस्तावेज व्यवस्था 1 जनवरी 2015 से लागू करने सम्बन्धी निर्देश।

● Government of Rajasthan Administrative Reforms (Gr.-1) Department ● F.15(1)/AR/Gr-1/2014 Jaipur, Dated: 24 November, 2014 ● 1. All Addl. Chief Secretaries/Pr. Secretaries/Secretaries 2. All Divisional Commissioners 3. All District Collectors 4. All Heads of Departments ● Circular ● Subject : Abolition of system of submitting affidavits and introduction of self attestation/ declaration system.

It has been observed by the State Government that asking for attested documents and affidavits from the candidates seeking admission in educational institutions, seeking employment in government departments and organizations and seeking certain services/benefits under various schemes, consumes lot of time and energy of the candidates and therefore there is a need for simplification of procedure for verification of documents and statements submitted by the candidates to various Government Departments/Local Bodies/Panchayati Raj Institutions/ Boards/Corporations/Public Sector Undertakings/ Institutions.

Accordingly, following revised mechanism in relation to attestation of documents and submission of affidavits is being put in force in the State of Rajasthan, with effect from 1st January 2015.

All concerned officers/authorities are directed to act in accordance with the revised procedure, within the prescribed time frame.

Attestation of documents

1. The applicants, while submitting documents for admission in educational institutions, for seeking services in Government Departments/Local

Bodies/Panchayati Raj Institutions/Boards/ Corporations/Public Sector Undertakings/Institutions and for seeking employment in Government of Rajasthan/Local Bodies/ Panchayati Raj Institutions/ Boards/ Corporations/ Public Sector Undertakings/ Institutions shall be permitted to submit self attested copies of documents that are required to be attached/ appended to the original applications.

2. Directions shall be issued by Additional Chief Secretary/Principal Secretary/ Secretary, Education Department to all educational institutions located in the State for accepting self attested copies of documents from the applicants and/or guardians of the students at the time of submission of applications for admission, Original certificates/documents shall be called only from finally admitted candidates to carry out due verification of documents submitted with-the application.
3. The Addl. Chief Secretaries/Principal Secretaries/ Secretaries of the departments of education, higher education, technical education and medical education and Sanskrit education shall also ensure that the application forms for admission to educational institutions are revised accordingly before commencing the procedure for admissions during the academic session 2015-2016.
4. Chairman, RPSC, Chairman, Subordinate Services Selection Board and Additional Chief Secretaries/ Principal Secretaries/ Secretaries/ Heads of Departments shall also take appropriate steps to ensure implementation of the decision taken by the Government in this regard for all fresh recruitments.

Submission of affidavits

1. No Government Departments/Local Bodies/Panchayati Raj Institutions/Boards/Corporations/Public Sector Undertakings/Institutions shall ask for affidavits from the applicants seeking admission in educational institutions/services under various Government schemes and programmes/employment except for those cases where affidavits are required as per statutory provisions or existing law.
2. All Government Departments/Local Bodies/ Panchayati Raj Institutions/Boards/Corporations/ Public Sector Undertakings/Institutions shall accept self declaration in place of affidavit from the applicants. Standard format for self declaration (Annexure-1) shall suitably be included in various application forms being used in various organizations. A photograph of the person making the declaration, shall necessarily be affixed/pasted on the declaration itself
3. All departments/organizations shall display on their websites and notice boards etc. a list of affidavits which shall be substituted by self declaration and also a list of subject matters/activity areas where affidavit system shall continue due to statutory/legal compulsions.

All Government departments/organizations shall put circulars/directions issued in this regard on their departmental websites and shall give wide publicity to the revised mechanism.

Concerned authorities of Government Departments/ Local Bodies/Panchayati Raj Institutions/Boards/ Corporations/Public Sector Undertakings/Institutions shall ensure that the provisions of the new mechanism are properly disseminated up to Gram Panchayat level through Gram Panchayals /Sampark Kendras/e-mitras/Common service centers etc. prominently. While doing so, due attention may also be drawn to the relevant provisions of the Indian Penal Code for willfully filing wrong declaration **(Annexure-2)** ● **Encl : As above** ● **(C.S. Rajan)** Chief Secretary ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/अभिलेख/5916/2014 दिनांक 11.12.2014

Annexure-1

Self-declaration for getting admission in the educational institutions in the State of Rajasthan, for seeking services from Government Departments/Local Bodies/ Panchayati Raj Institutions/Boards/Corporations/Public Sector Undertakings/Institutions, and for seeking employment in Government of Rajasthan/Local Bodies/ Panchayati Raj Institutions/Boards/ Corporations/Public Sector Undertakings/Institutions.

The written declaration as given hereunder will be included at the end of the application form for getting admission, seeking the services, employment:

I_____Son/Daughter of Shri_____ Age_____Year_____resident of _____ _____District_____ Rajasthan, hereby declare that the information given above and in the enclosed documents is true to the best of my knowledge and belief and nothing has been concealed therein. I am well aware of the fact that if the information given by me is proved false/not true, J will have to face the punishment as per the law. Also, all the benefits availed by me shall be summarily withdrawn.

Annexure-2

Relevant provisions of the Indian Penal Code that relate to willfully filing wrong declaration etc.:

Section 177. Furnishing false information

Whoever, being legally bound to furnish information on any subject to any public servant, as such, furnishes, as true, information on the subject which he knows or has reason to believe to be false, shall be punished with simple imprisonment for a term that may extend to six months, or with fine that may extend to one thousand rupees, or with both;

Or, if the information that he is legally bound to give respects the commission of an offence, or is required for the purpose of preventing the commission of an offence, or in order to the apprehension of an offender, with imprisonment of either description for a term that may extend to two years, or with fine, or with both.

Section 193. Punishment for false evidence

Whoever intentionally gives false evidence in any stage of a judicial proceeding, or fabricates false evidence for the purpose of being used in any stage of a judicial proceeding, shall be punished with imprisonment of either description for a term that may extend to seven years, and shall also be liable

to fine; and whoever intentionally gives or fabricates false evidence in any other case, shall be punished with imprisonment of either description for a term that may extend to three years, and shall also be liable to fine.

Section 197. Issuing or signing false certificate

Whoever issues or signs any certificate required by-law to be given or signed, or relating to any fact of which such certificate is by law admissible in evidence, knowing or believing that such certificate is false in any material point, shall be punished in the same manner as if he gave false evidence.

Section 198. Using as true a certificate known to be false

Whoever corruptly uses or attempts to use any such certificate as a true certificate, knowing the same to be false in any material point, shall be punished in the same manner as if he gave false evidence.

Section 199. False statement made in declaration which is by law receivable as evidence

Whoever, in any declaration made or subscribed by him, which declaration any Court of Justice, or any public servant or other person, is bound or authorized by law to receive as evidence of any fact, makes any statement that is false, and which he either knows or believes to be false or does not believe to be true, touching any point material to the object for which the declaration is made or used, shall be punished in the same manner as if he gave false evidence.

Section 200. Using as true such declaration knowing it to be false

Whoever corruptly uses or attempts to use as true any such declaration, knowing the same to be false in any material point, shall be punished in the same manner as if he gave false evidence. Explanation - A declaration which is inadmissible merely upon the ground of some informality, is a declaration within the meaning of sections 199 to 200.

6. विभाग द्वारा क्रियान्वित छात्रवृत्ति योजनाएं वर्ष 2014–15

1. बालिका शिक्षा प्रोत्साहन राष्ट्रीय योजना

❖ **पात्रता :–**

- समस्त राजकीय विद्यालयों (केन्द्रीय विद्यालयों को छोड़कर) की कक्षा 09 में अध्ययनरत अनुसूचित जाति व जनजाति की सोलह वर्ष से कम व अविवाहित बालिकाएं।
- कस्तूरबा गाँधी विद्यालयों से कक्षा 08 में उत्तीर्ण एवं राजकीय विद्यालयों की कक्षा 09 में अध्ययनरत समस्त बालिकाएं जो आयु में सोलह वर्ष से कम व अविवाहित हों।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- भारत सरकार (मानव संसाधन मंत्रालय) द्वारा शत प्रतिशत

❖ **देय लाभ :–**

- 3000 रुपये की सावधि जमा राशि, जो 10वीं उत्तीर्ण व 18 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात देय होगी।

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**

- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् सम्बन्धित विद्यालय द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को ऑन–लाइन आवेदन पत्र प्रस्तुत करें।

2. कस्तूरबा गाँधी विशेष सावधि जमा रसीद योजना :

❖ **पात्रता :–**

- कस्तूरबा गाँधी विद्यालयों से कक्षा 10 में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण एवं राजकीय विद्यालयों की कक्षा 11 में अध्ययनरत छात्राएं
- राजकीय विद्यालयों से कक्षा 12 में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण एवं प्रथम वर्ष लेने वाली छात्राए

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार द्वारा शत प्रतिशत

❖ **देय लाभ :–**

- 2000 रुपये की सावधि जमा राशि, जो 05 वर्ष पश्चात् देय
- 4000 रुपये की सावधि जमा राशि, जो 03 वर्ष पश्चात् देय बशर्ते स्नातक उत्तीर्ण कर ली हो

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**

- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें

3. गार्गी पुरस्कार योजना :

❖ **पात्रता :–**

- समस्त राजकीय/निजी विद्यालयों से 10वीं कक्षा में 75 प्रतिशत अथवा अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को सीनियर सैकण्डरी में अध्ययन करने हेतु।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**

- 3000 रुपये प्रतिवर्ष दो वर्षों के लिए ताकि 11वीं व 12 वीं में अध्ययन कर सके।

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**

- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें।

4. आपकी बेटी योजना :

❖ **पात्रता :–**

- राजकीय विद्यालयों में कक्षा 01 से 12 में अध्ययनरत छात्राऐं किन्तु प्रथम वरियता बीपीएल परिवार से

संबंधित या जिनके माता–पिता दोनों/एक का निधन हो गया हो, को।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार (बालिका फाउण्डेशन)

❖ **देय लाभ :–**
- कक्षा 01 से 08 तक 1100 रुपये प्रतिवर्ष एवं कक्षा 09 से 12 तक 1500 रुपये प्रतिवर्ष

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें।

5. प्रोत्साहन योजना :

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 12 में 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक अर्जित कर उत्तीर्ण एवं राजकीय तथा निजी विद्यालय में अध्ययनरत बालिका।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- 5000 रुपये एक मुश्त

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें।

6. विदेशों में स्नातक स्तर की शिक्षा सुविधाः

❖ **पात्रता :–**
- राजकीय विद्यालयों से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 में मेरिट की प्रथम तीन छात्राएं 11वीं एवं 12वीं में अध्ययनरत।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार (बालिका फाउण्डेशन)

❖ **देय लाभ :–**
- विदेश में स्नातक स्तर के अध्ययन हेतु 15 लाख की अधिकतम राशि प्रतिवर्ष बशर्ते कि छात्रा ने 12वीं के पश्चात् बालिका फाउण्डेशन द्वारा निर्देशित सैट परीक्षा उत्तीर्ण की हो

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी एवं बालिका फाउण्डेशन

❖ **विशेष विवरण :–**
- कक्षा 11 में प्रवेश के समय संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के माध्यम से बालिका फाउण्डेशन को प्रेषित करें।
- बालिका के अभिभावक को एक शिक्षा सत्र में बालिका से मिलने हेतु हवाई यात्रा का वास्तविक किराया भी बालिका फाउण्डेशन द्वारा दिये जाने का प्रावधान है।

7. इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कारः

❖ **पात्रता :–**
- अनुसूचित जाति, जनजाति, अ.पि.व., विशेष पि.व., अल्प संख्यक, सामान्य एवं निःशक्त वर्ग की बालिकाएं जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की मेरिट में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया हो तथा 11वीं कक्षा में अध्ययनरत

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार (बालिका फाउण्डेशन)

❖ **देय लाभ :–**
- कक्षा 10 में उतीर्ण मेरिट में 75000 एवं कक्षा 12 में उत्तीर्ण मेरिट के अनुसार अध्ययनरत की दशा में 100000।

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करें।

8. आर्थिक सम्बलता पुरस्कार :

❖ **पात्रता :–**
- राजकीय विद्यालयों की कक्षा 09 से 12 में अध्ययनरत समस्त विकलांग बालिकाएं

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- 2000 रुपये प्रति वर्ष एक मुश्त आर्थिक सहायता

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- संस्था प्रधान द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को प्रस्तुत

9. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 06 से 08 में राजकीय/ निजी विद्यालयों में अध्ययनरत
- छात्र/छात्रा के माता–पिता/ अभिभावक/संरक्षक आयकर दाता नहीं हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- छात्र 75 रुपये, छात्रा 125 रुपये प्रतिमाह(अधिकतम 10 माह)

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना।

10. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्तिः

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 09 से 10 में राजकीय/निजी विद्यालयों में अध्ययनरत
- छात्र/छात्रा के माता–पिता/ अभिभावक / संरक्षक की वार्षिक आय 02 लाख रुपये से अधिक न हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- डे–स्कालर छात्र–छात्रा 150 रुपये प्रतिमाह (अधिकतम 10 माह) एवं एक मुश्त राशि 750 रुपये प्रतिवर्ष एवं हॉस्टलर छात्र–छात्रा हेतु 350 रुपये प्रति माह (अधिकतम 10 माह) एवं एक मुश्त 1000 रुपये प्रतिवर्ष

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

11. अन्य पिछड़ी जाति पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 06 से 10 में राजकीय / निजी विद्यालयों में अध्ययनरत
- छात्र/छात्रा के माता–पिता / अभिभावक / संरक्षक की वार्षिक आय 44500 रुपये से अधिक न हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- कक्षा से 06 से 08 के छात्र–छात्राओं 40 रुपये (अधिकतम 10 माह)
- कक्षा से 09 से 10 के छात्र–छात्राओं 50 रुपये प्रति माह (अधिकतम 10 माह)

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

12. विशेष पिछड़ी जाति पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 06 से 10 में राजकीय/निजी विद्यालयों में अध्ययनरत
- छात्र/छात्रा के माता–पिता/अभिभावक/संरक्षक की वार्षिक आय दो लाख रुपये से अधिक न हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- कक्षा 06 से 08 के छात्र 50 रुपये प्रतिमाह एवं छात्रा 100 रुपये प्रतिमाह(अधिकतम 10 माह)
- 09 से 10 के छात्र 60 रुपये प्रतिमाह एवं छात्रा को 120 रुपये प्रतिमाह (अधिकतम 10 माह)

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

13. अस्वच्छकार पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 01 से 10 में राजकीय/निजी विद्यालयों में अध्ययनरत
- छात्र/छात्रा के माता–पिता/अभिभावक/संरक्षक द्वारा अस्वच्छ कार्य में लगे रहना आवश्यक

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- डे–स्कालर छात्र–छात्रा कक्षा 01 से 10 110 रुपये प्रति माह (अधिकतम 10 माह) एवं एक मुश्त राशि 750 रुपये प्रतिवर्ष एवं हॉस्टलर छात्र–छात्रा हेतु कक्षा 03 से 10 को 700 रुपये प्रतिमाह (अधिकतम 10 माह) एवं एक मुश्त 1000 रुपये प्रतिवर्ष

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

14. अनुसूचित जाति, जनजाति, विशेष. पि.जा. एवं अ. पि.जा. उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत छात्र/छात्रा
- छात्र/छात्रा के माता–पिता/अभिभावक/संरक्षक की वार्षिक आय 2.50 लाख रुपये से अधिक न हो (अ. पि.व. की दशा में एक लाख)

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- अधिकतम 10 माह के लिए–अनुसूचित जाति, जनजाति, विशेष. पि.जा. के लिए 230 रुपये प्रतिमाह तथा अन्य पि.व. के लिए 160 रुपये प्रतिमाह डे–स्कालर के लिए तथा 380 एवं 260 हॉस्टलर के लिए

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा सामाजिक न्याय विभाग के जिला अधिकारी को प्रेषित किये जायेगें।

15. अल्पसंख्यक समुदाय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :–**
- कक्षा 01 से 10 में अध्ययनरत छात्र/छात्रा जो अल्पसंख्यक वर्ग यथा मुस्लिम/सिख/ईसाई/बौद्ध/जैन/पारसी से संबंधित हो
- राजकीय/निजी/मदरसों में अध्ययनरत छात्र/छात्रा के माता–पिता/अभिभावक/संरक्षक की वार्षिक आय एक लाख रुपये से अधिक न हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- कक्षा 06 से 10 में प्रवेश शल्क हेतु अधिकतम 500 रु0, शिक्षण शुल्क हेतु 350 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक राशि जो भी कम हो (10 माह के लिए) रख–रखाव भत्ता कक्षा 01 से 10 में छात्रावासी 600 रुपये प्रतिमाह एवं गैर छात्रावासी 100 रुपये प्रतिमाह (10 माह के लिए)

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

16. कारगिल युद्ध से पूर्व (01.04.99 से) युद्धों में शहीद/स्थाई विकलांग सैनिकों के बच्चों को छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :–**
- राजकीय/निजी विद्यालयों में कक्षा 01 से 12 में अध्ययनरत

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- अधिकतम 10 माह के लिए 180 रुपये प्रतिमाह

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र पर जिला सैनिक कल्याण अधिकारी के प्रतिहस्ताक्षर पश्चात् जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

17. कारगिल युद्ध के पश्चात् (01.04.99 के पश्चात)युद्धों में शहीद/स्थाई विकलांग सैनिकों के बच्चों को छात्रवृत्तिः

❖ **पात्रता :–**
- राजकीय/निजी विद्यालयों में कक्षा 01 से 12 में अध्ययनरत

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- अधिकतम 10 माह के लिए 180 रुपये प्रतिमाह

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र पर जिला सैनिक कल्याण अधिकारी के प्रतिहस्ताक्षर पश्चात् जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

18. भूतपूर्व सैनिकों की प्रतिभावान पुत्रियों के लिए छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :**
- राजकीय/निजी विद्यालयों में कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत छात्रा बशर्ते कि 10वीं कक्षा में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- अधिकतम 10 माह के लिए 100 रुपये प्रतिमाह

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र पर जिला सैनिक कल्याण अधिकारी के प्रतिहस्ताक्षर पश्चात् जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रेषित करना

19. नवजीवन योजना छात्रवृत्ति :

❖ **पात्रता :–**
- अनुसूचित जाति, जनजाति, वि.पि.व. एवं सामान्य वर्ग के परिवार जो अवैध शराब के व्यवसाय/भण्डारण व

वितरण में लिप्त एवं जिला कार्यकारी समिति द्वारा चिह्नित परिवार के कक्षा 06 से 10 में अध्ययनरत छात्र–छात्रा

- माता–पिता / अभिभावक / संरक्षक आयकर दाता नहीं हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**

- विशेष पिछड़ा वर्ग के लिए–कक्षा 06 से 08 छात्र 50 रुपये छात्रा 100 रुपयेतथा कक्षा 09 से 10 छात्र 60 रुपये एवं छात्रा 120 रुपये प्रति माह पिछड़ा एवं सामान्य वर्ग के लिए–कक्षा 06 से 08 छात्र एवं छात्रा 40 रुपये तथा कक्षा 09 से 10 छात्र एवं छात्रा 50 रुपये एवं प्रतिमाह

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**

- प्रवेश के तुरन्त पश्चात् संस्था प्रधान आवेदन पत्र तैयार करवाकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के जिला अधिकारी को प्रेषित करना

20. विशेष पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना :

❖ **पात्रता :–**

- अनुसूचित जाति,एवं अनुसूचित जनजाति की 2500 सीटों, अनुसूचित क्षेत्र के 05 जिलों की जनजाति की 100 सीटों, अन्य 28 जिलों की जनजाति 100, वि.पि. वर्ग के 500 सीटो पर अध्ययन के लिए प्रवेश हेतु कक्षा 05 उत्तीर्ण छात्र–छात्राओं द्वारा पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाऐं द्वारा आयोजित परीक्षा में चयनित छात्र–छात्राओं को अभिभावकों द्वारा दिये गये इच्छित निजी विद्यालयों में कक्षा 06 में प्रवेश दिला कर 12वीं कक्षा तक अध्ययन करने एवं अध्ययन के दौरान छात्रावासों में रहने हेतु
- माता–पिता / अभिभावक / संरक्षक आयकर दाता नहीं हो

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**

- अध्ययनरत शिक्षण संस्था को अधिकतम 50 हजार रुपये प्रतिवर्ष
- राशि शिक्षण शुल्क, पोशाक एवं शैक्षणिक उपकरण के लिए देय
- 12वीं अध्ययनरत तक राशि देय

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- निदेशालय माध्यमिक शिक्षा

❖ **विशेष विवरण :–**

- जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रेषित आवेदन पत्रों के आधार पर पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाऐं द्वारा परीक्षा का आयोजन

21. सामूहिक दुर्घटना बीमा योजना :

❖ **पात्रता :–**

- राजकीय विद्यालयों में क्षा 09 से 12 में अध्ययनरत सभी छात्र–छात्राओं का बीमा
- प्रवेश के समय संस्था प्रधान द्वारा छात्र से 10 रुपये एवं छात्राओं से 05 रुपये वार्षिक दुर्घटना शुल्क (प्रीमियम) वसूल की जाती है
- छात्र / छात्रा द्वारा सामान्यतः माता–पिता को नोमिनी

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**

- छात्र / छात्रा की दुर्घटना मृत्यु होने पर 1.00 लाख राशि बीमित छात्र–छात्रा के नोमिनी को।

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**

- संस्था प्रधान एवं राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग

❖ **विशेष विवरण :–**

- निदेशालय स्तर से बीमित छात्र–छात्राओं की राशि को राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग को एक मुश्त जमा एवं पॉलिसी प्राप्त करने की कार्यवाही

22. शैक्षिक भ्रमण योजना :

❖ **पात्रता :–**

- अन्तर जिला भ्रमण हेतु कक्षा 09 व 10 के छात्र–छात्राऐं जिन्होंने कक्षा 08 व 09 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
- प्रत्येक जिले से अधिकतम विद्यार्थियों की संख्या 20 होगी।
- 10 दिवसीय अन्तर राज्य भ्रमण हेतु कक्षा 11 व 12 के छात्र–छात्राऐं जिन्होंने कक्षा 10 व 11 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
- प्रत्येक जिले से 02 विद्यार्थी कुल 66 का चयन होता है।
- प्रत्येक वर्ष किसी एक मण्डल अधिकारी को इस हेतु नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाता है।

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**

- राज्य सरकार

देय लाभ :–

- अन्तर जिला भ्रमण हेतु 76 हजार रुपये प्रत्येक जिले को निदेशालय स्तर से आवंटन
- अन्तर राज्य भ्रमण हेतु नोडल अधिकारी को फिक्स देय 537600 रुपये आवंटन

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी
- मण्डल अधिकारी (उपनिदेशक)

❖ **विशेष विवरण :–**
- व्यय राशि हेतु मापदण्ड निर्धारित

23. पन्नाधाय जीवन अमृत योजना :

❖ **पात्रता :–**
- बीपीएल परिवार के मुख्या का स्वतः बीमा
- बीपीएल परिवार के कक्षा 09 से 12 तक अध्ययनरत अधिकतम दो विद्यार्थी को छात्रवृत्ति

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग

❖ **देय लाभ :–**
- परिवार के मुख्या की मृत्यु होने पर निर्धारित दुर्घटना राशि
- प्रति विद्यार्थी 300 रुपये त्रैमासिक एवं 1200 रुपये वार्षिक छात्रवृत्ति निगम द्वारा प्रदान किया जाता है।

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग एवं भारतीय जीवन बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय

❖ **विशेष विवरण :–**
- संस्था प्रधान द्वारा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के आवेदन शहरी निकाय एवं ग्रामीण क्षेत्र के जिला परिषद् कार्यालय में जमा कराने की व्यवस्था

24. छात्राओं को साइकिल वितरण योजना :

❖ **पात्रता :–**
- राजकीय विद्यालयों में कक्षा 09 में प्रवेश लेने वाली समस्त बालिकाएं

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- साइकिल देय

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी

❖ **विशेष विवरण :–**
- साइकिल क्रय की दर संविदा निदेशालय स्तर पर की जाकर जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से वितरण

25. राजीव गाँधी विद्यार्थी डिजिटल योजना :

❖ **पात्रता :–**
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षा मेरिट के प्रथम 10 हजार को
- राज्य में प्रत्येक राजकीय विद्यालयों के कक्षा 08 की मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थी को
- राज्य में प्रत्येक राजकीय विद्यालयों के कक्षा 08 की मेरिट में 02 से 10 स्थान प्राप्त विद्यार्थी को

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- लैपटॉप देय
- पी.सी.टैबलेट क्रय हेतु नगद राशि

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी

❖ **विशेष विवरण :–**
- राजकॉम इन्फो सर्विस लिमिटेड के माध्यम से क्रय कर जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से वितरण पी.सी. टैबलेट
- जिला शिक्षा अधिकारी प्रा0 शिक्षा के माध्यम से वितरण

26. इन्स्पायर अवार्ड योजना :

❖ **पात्रता :–**
- प्रत्येक विद्यालय में कक्षा 06 से 10 में अध्ययनरत छात्र–छात्रा, जिसने गत कक्षा में विज्ञान एवं गणित विषय में सर्वोच्च अंक प्रतिशत अर्जित किये हो
- कक्षानुसार एक विद्यार्थी

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- भारत सरकार द्वारा अधिकतम एक विद्यालय में दो ऑवार्ड 5000 एकबारीय
- राशि भारत सरकार द्वारा चयनित छात्र–छात्रा को

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- जिला शिक्षा अधिकारी

❖ **विशेष विवरण :–**
- संबंधित छात्र–छात्रा द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को ऑन–लाईन आवेदन पत्र

27. अनुसूचित जाति, जनजाति प्रतिभा विकास योजना :

❖ **पात्रता :–**
- राज्य के सभी जिलों में कक्षा 08 किसी भी राजकीय/निजी विद्यालय से उत्तीर्ण छात्र–छात्रा जिसने 60 प्रतिशत या अधिक अंक अर्जित किये हो
- जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक अजमेर, कोटा एवं उदयपुर द्वारा शिक्षा निदेशालय जारी विज्ञप्ति के पश्चात् आवेदन पत्र प्राप्त कर जिलेवार आवंटित सीटों की संख्या के अनुसार मेरिट के आधार पर चयन।
- चयनित तीन विद्यालयों हेतु 68 सीटों हेतु मेरिट के आधार पर सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा आवंटन

❖ **फण्डिंग पैटर्न :–**
- भारत सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- समस्त शैक्षणिक एवं आवासीय सुविधाऐं निःशुल्क

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- निदेशालय माध्यमिक शिक्षा

❖ **विशेष विवरण :–**
- राजकीय उच्च मा.वि. गुमानपुरा कोटा–22 सीट रा.उ. मा.वि. तोपदड़ा अजमेर–23 सीट एवं रा. गुरु गोविन्द सिंह उ.मा.वि. उदयपुर–23 सीट में अध्ययन हेतु सीटों का आवंटन

28. देवनारायण कोचिंग योजना :

❖ **पात्रता :–**
- योजना में कक्षा 09 व 10 में अध्ययनरत समस्त वर्गो के छात्र–छात्राओं को विद्यालय समय से पूर्व/पश्चात् सुविधानुसार विशेष कोचिंग अंग्रेजी/विज्ञान/गणित विषय हेतु
- राज्य सरकार द्वारा चयनित 05 जिलों–स. माधोपुर, झालावाड, करौली, अलवर व धौलपुर के 54 विद्यालयों में संचालित

❖ **फण्डिंग पैटर्न :**
- राज्य सरकार

❖ **देय लाभ :–**
- कोचिंग सुविधा कुल 70 कालांशों के लिए

❖ **सम्बन्धित कार्यालय :–**
- चयनित जिलों के जिला शिक्षा अधिकारी मा0शि0 प्रथम

❖ **विशेष विवरण :–**
- राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कैम्प एवं कालांश संख्या के आधार पर 32200 रुपये निर्धारित

माह : जनवरी, 2015				विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम		प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक
दिनांक	**वार**	**आकाशवाणी केन्द्र**	**कक्षा**	**विषय**	**पाठक्रमांक**	**पाठ का नाम**
1.1.2015	गुरुवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		हिन्दी साहित्य
2.1.2015	शुक्रवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		गृहविज्ञान
3.1.2015	शनिवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		गणित
5.1.2015	सोमवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		इतिहास
6.1.2015	मंगलवार	बीकानेर	12	परीक्षामाला		राजनीति विज्ञान
7.1.2015	बुधवार	जयपुर	12	परीक्षामाला		व्यवसाय अध्ययन
8.1.2015	गुरुवार	जोधपुर	12	परीक्षामाला		कृषि
9.1.2015	शुक्रवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		लेखाशास्त्र
10.1.2015	शनिवार	बीकानेर	10	परीक्षामाला		हिन्दी
12.1.2015	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव)	
13.1.2015	मंगलवार	जोधपुर	10	परीक्षामाला		विज्ञान
14.1.2015	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		मकर सक्रान्ति
15.1.2015	गुरुवार	बीकानेर	8	परीक्षामाला		गणित
16.1.2015	शुक्रवार	जयपुर	10	परीक्षामाला		अंग्रेजी
17.1.2015	शनिवार	जोधपुर	10	परीक्षामाला		संस्कृत
19.1.2015	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम	राजस्थान के वीर पुरुष महाराणा प्रताप (पुण्य तिथि)	
20.1.2015	मंगलवार	बीकानेर	8	परीक्षामाला		विज्ञान
21.1.2015	बुधवार	जयपुर	10	परीक्षामाला		सामाजिक विज्ञान
22.1.2015	गुरुवार	जोधपुर	8	परीक्षामाला		सामाजिक विज्ञान
23.1.2015	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		देश प्रेम दिवस (सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती)
24.1.2015	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		बसंत पंचमी/सरस्वती जयन्ती
26.1.2015	सोमवार		गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य)			
27.1.2015	मंगलवार	जयपुर	8	परीक्षामाला		हिन्दी
28.1.2015	बुधवार	जोधपुर	10	विज्ञान	14	ऊर्जा के स्रोत
29.1.2015	गुरुवार	उदयपुर	12	परीक्षामाला		कम्प्यूटर विज्ञान
30.1.2015	शुक्रवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम–हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी (शहीद दिवस)		
31.1.2015	शनिवार	जयपुर	7	हिन्दी	14	खानपान की बदलती तस्वीर

नूतनवर्षाभिनन्दन

पल-पल नूतन क्षण

❒ मोहन लाल जांगिड़

नव वर्ष के आगमन पर सबके चेहरों पर खुशी एवं उत्साह देखा जाता हैं। मान्यताओं, धर्म एवं क्षेत्रीय विविधताओं के अनुसार स्वागतातुर मानव अपनी-अपनी परम्पराओं के अनुसार नव वर्ष का स्वागत करता है। विश्व भर में 31 दिसम्बर की रात 12 बजने के साथ अति उत्साहित पुरुष-महिला, युवा, बच्चे आदि नृत्य करते, पटाखे छोड़ते, मिठाई बाँटते, गिफ्ट देते एवं गले लगाते हुए आने वाले वर्ष का स्वागत करते हुए परस्पर कामना करते हैं कि आने वाला नूतन वर्ष सुखद, शांति एवं उन्नतिदायक हो।

समय एवं काल की गणना की सर्वप्रथम परिकल्पना आदि मानव ने की थी। उन्होंने अपनी गुफाओं में आड़ी- तिरछी रेखाएं खींचकर या कंकड़-पत्थर की ढेरी बनाते हुए समय का मापन करने की चेष्टा की। कालान्तर में सभ्यताओं के कालखण्ड से गुजरते हुए मानव ने समय की गणना की परिष्कृत प्रणालियां विकसित करली।

डॉ. बॉर्ज बनार्ड शॉ ने अपनी पुस्तक 'द ऑरीजन ऑफ लाईफ' में सुन्दर अभिव्यक्ति दी, "समय वास्तव में साजिश का हीरो है....समय चमत्कार प्रदर्शन करता है।" आइंस्टीन ने 'समय केवल भ्रम है' कहकर समय की वास्तविकता को नकारने का प्रयास किया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, "समय हम में है, हम समय में नहीं है।" सामान्यतः कहा एवं सुना जाता है कि 'समय गुजर गया' परन्तु वस्तुतः समय वही ठहरा हुआ है। हम केवल इससे दूर होते जा रहे हैं। 'जिस तरह नदी के प्रवाहित जल के मध्य खड़े व्यक्ति को बहता पानी केवल एक बार ही छूता है और आगे बढ़ जाता है। इसी प्रकार समय का प्रवाह केवल एक बार ही, वर्तमान क्षण में उपस्थित होकर भूतकाल की आगोश में समा जाता है।

समय न तो अच्छा होता है और न ही बुरा। समय न तो कुछ कर सकता है और न ही बदल सकता है। समय न तो उत्पन्न किया जा

सकता है और न ही खत्म किया जा सकता है। समय की गति भी अविचलित एवं निर्बाध होती है। तमाम भौतिक सुविधाओं और युक्तियों के आगे हम समय को जीत नहीं पाते।

समय अतीत एवं भविष्य का विभाजक है। इन दोनों की संधिपर वर्तमान का क्षणभंगुर क्षण होता है। समय के एक-एक क्षण से सैकण्ड, 60 सैकण्ड से एक मिनट, 60 मिनट से एक घण्टा, 24 घण्टे मिलकर एक दिन एवं 365 दिन मिलकर एक वर्ष का निर्माण करते हुए विस्तार प्राप्त करता है। ऐसा माना जाता है कि 60 सैकण्ड एवं 60 मिनट की अवधारणा बेबीलोन सभ्यता में प्रचलित हुई। इन्होंने अपनी अक्ष के सापेक्ष पृथ्वी के घूर्णन को दिन एवं रात को क्रमशः 12-12 भागों में बांटा अर्थात कुल 24 भागों से दिन एवं रात का बनना माना गया। घूर्णन गति के सम्पूर्ण वृत्त को 360 डिग्री में बांटा और और प्रत्येक डिग्री को 60 मिनिट में बांटा। प्राचीन काल में समय मापन के लिए बनी सूर्य घड़िया इसी को प्रमाणित करती है।

मेरियम वेस्टर शब्दकोश के अनुसार समय "मापा गया या मापन योग्य अवधि है, जो एक कार्य, प्रक्रिया या स्थिति या सांतत्य को बताता है।" सौर विज्ञान के आधार पर औसत सौर दिवस के 1/86400 का मान एक सेकण्ड के तुल्य होता है।

समय का मानक मान सेकण्ड है। अन्तर्राष्ट्रीय मान (SI) पद्धति के अनुसार सीजियम 133 परमाणु के दो स्तरों (उच्च से निम्न) के बीच संक्रमण के कारण उत्सर्जित 9192631770 विकिरणों के मध्य लगा समय एक सैकण्ड के तुल्य होता है।

कैलेण्डर लैटिन शब्द केलेण्डाई (Kalendae) से बना है। फ्रेशर (1987) के अनुसार विश्वभर में 40 कलेण्डर प्रचलित है। कुछ लोकप्रिय एवं प्रचलित कलेण्डर है- ग्रेगोरियन कलेण्डर, जुलियन कलेण्डर, ओसीरियन कलेण्डर, मीनीक कलेण्डर, इस्लामिक कलेण्डर, जापानी कलेण्डर, जेविश कलेण्डर, हिन्दू कलेण्डर (विक्रम, शक सम्वत आदि) आदि।

वर्तमान में ग्रेगोरियन कलेण्डर (Gragorian Calender) तमाम देशों में प्रचलित है, में एक जनवरी नये वर्ष का शुभारंभ माना जाता है। ज्ञातव्य है कि ग्रेगोरियन कलेण्डर से पूर्व जूलियन (Jullan) कलेण्डर प्रचलित था जिसे पोप ग्रेगोरी XII ने सन् 1582 से संशोधित कर लागू किया गया था। ग्रेगोरियन कलेण्डर का प्रारूप इटली तक बहुसंख्य देशों में यह कलेण्डर प्रचलित हो गया था।

जूलियस सीजर द्वारा नये कलेण्डर, जूलियन कलेण्डर, 45 ईसा-पूर्व लागू करने के साथ एक जनवरी को वर्ष का प्रथम दिन माना गया था। इन कलेण्डर के प्रचलन से पूर्व एवं बाद में भी नये वर्ष का शुभारंभ अलग-अलग तिथियों में प्रचलन में रहा। यथा 14 जनवरी, 1 मार्च, 15 मार्च, 1 सितम्बर, 25 दिसम्बर आदि।

भारत में नव वर्ष का शुभारंभ चैत्र के प्रथम दिन से माना जाता है। दीपावली के बाद कार्तिक माह के प्रथम दिवस, 'शुद्ध एकम' को नये साल का शुभारंभ भी माना जाता है जिसे व्यापारीगण विशेष रूप से महत्त्व देते है।

विश्व में तीन प्रकार के मुख्य कलैण्डर प्रचलित है। एक सूर्य, दूसरा चन्द्रमा और तीसरा सूर्य चन्द्रमा की गति के आधार पर। ज्ञातव्य है कि हमारे सौर मण्डल का मुखिया सूर्य है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करता है साथ अपने अक्ष के सापेक्ष भी। पृथ्वी की इस गति के कारण ही दिन-रात एवं ऋतुओं का बनना होता है। पृथ्वी सूर्य के चारों और परिक्रमण करते हुए

365 दिन, 5 घण्टे, 48 मिनट एवं 45.51 सेकण्ड समय लेती है। सौर कलेण्डर को उष्ण कटिबंधीय वर्ष के साथ समन्वित करने का प्रयास किया जाता है जिसमें वर्ष का मान 365.2421896698 दिन का होता है। चन्द्र आधारित कलेण्डर, चन्द्रमा की पृथ्वी के सापेक्ष गति के आधार पर एक महिने का औसत मान 29.5305888531 दिन का होता है। जबकि सौर चन्द्र आधारित कलेण्डर को इन दोनों कलेण्डर को परस्पर समन्वित किया जाता है। 365 दिनों के बाद बचे समय को मिलाते हुए चार वर्ष बाद 'लीप ईयर' मानकर फरवरी में एक दिन जोड़ दिया जाता है। चन्द्र आधारित कलेण्डर में 'अधिमास' जोड़ने का प्रावधान है।

भारतीय दर्शन में 'काल' को अति महत्त्व देते हुए सूक्ष्म समय की परिकल्पना ही नहीं की बल्कि इसका प्रेक्षण एवं मापन करने का प्रयास किया गया। वेदों में काल या समय की छोटी इकाई 'परमाणु' के रूप में व्यक्त की गई है। आज के संदर्भ में इस समय की इकाई 'परमाणु' का मान होता है, 26.3 माइक्रो सेकण्ड (26.3×10^{-6}सैकण्ड)। इसके बाद 'अणु' 57.7×10^{-6} सेकण्ड, 'त्रसा रेणु' 158 $\times10^{-6}$ सैकण्ड, 'त्रुटि' 474×10^{-6} सैकण्ड 'क्षण' 6.4 सैकण्ड, 'मुहूर्त' 48 मिनट, 'अहोरात्र' या 'दिन' 24 घण्टे आदि के रूप में समय को नाम दिया गया।

वेदों में 'ऋतु' दो मास, 'आयन' को छः मास, 'संवत्सर' को दो आयन या 'एक वर्ष' के रूप में माना गया है। काल या समय को विस्तार देते हुए 1728000 वर्ष का एक 'सतयुग', 1296000 वर्ष का 'त्रेता युग', 864000 वर्ष का 'द्वापर युग' तथा 432000 वर्ष का एक 'कलियुग ' माना गया। इन चारों युगों का मान 4320000 वर्ष होता है। जिसे महायुग कहा गया। 1000 महायुगों को एक 'कल्प' तथा दो कल्प से ब्रह्मा का एक दिन या रात बनती है। इसी तरह 71 चतुर्युगों का योग 'मन्वतन्तर' के रूप में बताया गया। इसी भांति एक 'महाकल्प', ब्रह्मा के 100 वर्षों के तुल्य माना गया। भारत दर्शन में समय के गतिशील इस चक्र को 'कालचक्र ' कहते है। 'सूर्य सिद्धांत' के अनुसार समय को मूर्त्त एवं अमूर्त्त का विभाजक कहा गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार 3102 ईसा पूर्व 17-18 फरवरी की मध्य रात को कलियुग का प्रारंभ हुआ था।

विदित है कि राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में शाली वाहन शक संवत् स्वीकार किया गया। ये संवत् 78 ईसा पूर्व से प्रारंभ माना गया है। ज्ञातव्य हे कि अन्तरिक्षविद् एवं भौतिकी विद् मेघनाथ साहा की अध्यक्षता में एक कमेटी ने शक सम्वत् कलेण्डर का विशद् विश्लेषण एवं संशोधन किया। इस कलेण्डर को भारत सरकार ने चैत्र 1, 1879 शक सम्वत अर्थात् 22 मार्च, 1957 में लागू किया। इसी भांति 56 ईसा पूर्व से प्रचलित विक्रम सम्वत् भी एक लोकप्रिय कलेण्डर है।

इस चन्द्र आधारित कलेण्र में प्रत्येक माह दो पक्षों, एक कृष्ण पक्ष और दूसरा शुक्ल पक्ष में बांटे जाते है।

प्रकृति बड़ी निराली एवं अनूठी होती है। प्रकृति अपना काम अपनी ही प्रकृति एवं गति से करती है। जो सदैव विशिष्ट होता है। समय का प्रेक्षण एवं मापन मानवीय पक्ष सापेक्ष एवं यांत्रिक है। सूर्य एवं चन्द्र गति के आधार पर बनने वाले कोई भी कलेण्डर आदर्श कलेण्डर नहीं हो सकते। इन कलेण्डर में मास एवं वर्ष की अवधि में भी सापेक्ष अन्तर रहता है। हर साल बदलते हुए कलेण्डर से असुविधा तो है ही, साथ एक रूपता भी नहीं रहती। फलस्वरूप प्रतिवर्ष नये कलेण्डर की छपाई पर अरबों रूपये का अपव्यय होता है। वहीं हजारों टन पेड़-पौधों की कटाई से कागज बनानेपर पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है। अतः आवश्यकता है कि प्रचलित कलेण्डर को इस प्रकार परिष्कृत करें ताकि भविष्य का कलेण्डर एक रूपता युक्त सालों साल चलता रहे और पर्यावरण हितैषी बना रहे।

बहरहाल हमें वर्तमान के केवल इस क्षण पर ही समुचित ध्यान देना चाहिए। हमारे पास केवल वर्तमान हैं। भूतकाल पर किसी का भी जोर नहीं चलता। भविष्य सदैव अनिश्चिता में रहता है।

मदर टेरेसा के शब्दों में, 'कल जो था बीत गया, कल अभी तक नहीं आया। हम केवल वर्तमान में है।'

-रीडर
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE), बीकानेर
मो. 9414147270

शिविरा पंचांग

जनवरी, 2015					
रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

कार्य दिवस 27

रविवार 04, उत्सव 04

04 जनवरी–बारावफात (अवकाश), **06–09 जनवरी**–विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (राज्य स्तरीय), **12 जनवरी**–स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव), केरियर-डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय), **14 जनवरी**–मकर सक्रान्ति (उत्सव), **14–31 जनवरी**–'जीव जन्तु संरक्षण पखवाड़े' का आयोजन। **17 जनवरी**–शिक्षा शनिवार, अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम के प्रगति पत्रों का वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार-विमर्श। **19 जनवरी**–महाराणा प्रताप पुण्य तिथि। **20–22 जनवरी**–विद्यार्थियों की द्वितीय स्वास्थ्य जांच एवं अभिलेख संधारण। **23 जनवरी**–सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव), **24 जनवरी**–बसन्त पंचमी/सरस्वती जयंती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह, बालिका दिवस आयोजन। **26 जनवरी**–गणतंत्र दिवस (अवकाश - उत्सव अनिवार्य), **30 जनवरी**–शहीद दिवस (प्रातः 11.00 बजे दो मिनट का मौन), संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर परीक्षा परिणाम उन्नयन की कार्य योजना बनाना।

मकर संक्रान्ति पर्व

बहुत पावन है मकर संक्रान्ति

❑ रामदेव बाबू यादव

भारत पर्वों तथा त्यौहारों का देश है, जहाँ प्रतिदिन कोई उत्सव तथा पर्व होता है, जिसमें अपार श्रद्धा तथा आस्था का स्थान होता है, मकर संक्रान्ति एक खगोलशास्त्र का पर्व है, जिसमें सूर्य अपनी दक्षिणायन से उत्तरायण में मकर राशि में प्रवेश करता है, यानी पृथ्वी की धुरी तिरछी होने के कारण उसकी वार्षिक गति के फलस्वरूप सूर्य दिनांक 22 जून को कर्क रेखा पर दृष्टिगोचर होता है तथा 21 दिसम्बर को को प्रतिवर्ष मकर रेखा पर, इसी अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं, अर्थात् कर्क रेखा से दक्षिणायन की ओर (मकर रेखा तक) सूर्य का प्रस्थान दक्षिणायन कहलाता है तथा 22 दिसम्बर से सूर्य उत्तर दिशा की ओर गमन करता है तथा 21 जून को कर्क रेखा पर पुनः दृष्टिगोचर होने लगता है, यही 6 माह की अवधि 'उत्तरायण' कहलाती है। जो धार्मिक मान्यताओं के अनुसार 'देवकाल' कहलाता है, तो सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करता है उस दिन संक्रान्ति होती है लेकिन जब तक धनु राशि से मकर में प्रवेश करता है तो मकर संक्रान्ति कहलाती है।

उत्तरायण की स्थिति में दिन बड़ा तो रात छोटी तथा दक्षिणायन में रात लंबी तो दिन छोटा होता है वैसे प्रतिवर्ष 21 मार्च तथा 22 सितम्बर को दिन रात बराबर होते हैं। 21 जून को सबसे बड़ा दिन तथा सबसे छोटी रात होती है तो 23 दिसम्बर को सबसे बड़ी रात व सबसे छोटा दिन होता है।

भारत में मकर संक्रांति को लगभग सभी प्रांतों में पृथक-पृथक नाम से पुकारते हैं तथा मनाते हैं, पंजाब तथा हरियाणा में 'लोहड़ी' असम में 'बिहू' हिमाचल में 'माघी' दक्षिण भारत में 'पोंगल' महाराष्ट्र में 'मोगी' उड़ीसा में'पाना' कश्मीर में 'शिंकुर' उत्तर प्रदेश में 'खिचड़ी' तो सिन्धी समाज 'लाल लोही' के रूप में अपनी परम्पराओं तथा मान्यताओं के आकार पर हर्ष तथा उल्लास मनाते हैं।

हिन्दुओं की धार्मिक मान्यताओं के

आधार पर कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध के 10 दिन अर्जुन के बाणों से प्रसित भीष्म पितामह ने 48 दिन तक शर शय्या पर लेटे रहने के पश्चात् सूर्य उत्तरायण में आने के पश्चात् ही प्राण छोड़ने का संकल्प लिया था। इधर 'ब्रह्माण्ड पुराण' के अनुसार यशोदा मैया ने दही मंथन के बाद इसी सुअवसर पर दान दिया था। जिसके कारण ही 16 कलाओं से परिपूर्ण श्रीकृष्ण जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ था। जनमानस की यहाँ यह भी धार्मिक मान्यता है कि इस दिन देवता पृथ्वी पर उतरते हैं, इसलिए गंगासागर में स्नान का विशेष महत्त्व माना गया है।

वास्तव में मकर संक्रांति से सूर्य में क्रांति का परिवर्तन होने लगता है, रात्रि छोटी तो दिन लम्बे होने लगती हैं, यानी अंधकार के स्थान पर प्रकाश की निरन्तर बढ़ोतरी होने लगती है, इधर शीत ऋतु से बसंत का आगमन होने लगता है, अज्ञान से ज्ञान का प्रवेश होने लगता है, इसलिए यह दिन मंगल दायक, शुभ तथा आनंद का प्रतीक होता है, मांगलिक कार्यों का शुभारंभ होने के साथ ही सर्दी की ठिठुरन के बाद गर्मी का आगमन होता है।

इसलिए शीत को शांत करने के लिए सूर्य की आराधना करके ऊर्जा प्राप्त करना चाहते हैं, लोग आसपास की पवित्र नदी, तालाब अथवा तीर्थों में जाकर स्नान करते हैं, गुड़, तिल, वस्त्र आदि का दान करते हैं, पशुओं को चारा डाला जाता है, पंजाब तथा तमिलनाडु में नयी फसल के आगमन का स्वागत किया जाता है। चूंकि मकर संक्रांति सूर्य की उपासना का त्यौहार है, अतः इस दिन स्नान, दान तथा चिन्तन का विशेष महत्त्व है। भारत के कुछ भागों में गुल्ली डंडा खोला जाता है तो गुजरात, राजस्थान के घर-घर पतंग उड़ाकर इस त्यौहार का आनंद लिया जाता है तथा वैसे भी मान्यता है कि इस दिन पवित्र नदियों तथा सरोवर में स्नान करने से कष्टों का निवारण होता है।

जहाँ तक राजस्थान प्रदेश के लोगों का सवाल है, इस दिन को हमारे प्रदेश में, यह त्यौहार बड़ी श्रद्धा, उमंग तथा भक्ति के साथ मनाया जाता है।

जयपुर शहर तो इस दिन पतंगों से रंग बिरंगा ही नजर आता है, तिल के व्यंजनों का भरपूर प्रयोग किया जाता है, बाजरे की खिचड़ी तथा गुड़, तिल के लड्डू, घेवर तथा तिलपट्टी का प्रयोग करती हैं, तथा बहुएं सास-ससुर को कपड़े आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं, खैर! यह त्योहार परिवर्तन का सूचक है इसलिए जीवन में नये संचार, उमंग तथा आरोग्य की कामनाओं के साथ हमें त्योहार को सादगी, सद्भावना तथा भाईचारे से मनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि भारत की प्राचीन संस्कृति तथा मर्यादा का महत्त्व बना रह सकें। इसलिए कोई कवि आह्वान कर रहा है कि-

आओ हम मिलकर करें,
सभी सुमंगल काम।
सद्वाणी उपयोग से,
दे अच्छे परिणाम।

शिक्षा विभाग, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को मकर संक्रांति पर्व के महत्व को समझ कर जीवन में उत्सवोचित उल्लास रखना चाहिए। जीवन में उत्स हमारे जीवन को उत्सवमय बना देगा तब हर दिन उत्सव-हर पल आनन्द की अनुभूति हमें होगी।

-से.नि. व.लेखा परीक्षक (रक्षा लेखा विभाग)
मोतीपुरा, नसीराबाद-305601
मो. 9214856256

संदर्भ : गणतंत्र दिवस

भारत ही तन-हृदय तिरंगा

□ उमेश चन्द्र गुप्ता

राष्ट्र और व्यक्ति एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष राष्ट्र का प्रभाव पड़ता है। जहाँ एक ओर राष्ट्र के उन्नयन से व्यक्ति का परिवेशीय उन्नयन होता है वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति व्यक्ति की निष्ठा और भावना उसके कार्य को श्रेष्ठ बनाती है, परिणामतः राष्ट्र श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता है।

कोई भी राष्ट्र भौगोलिक सीमाओं में बंधा हुआ एक भू-भाग का निर्जीव टुकड़ा मात्र नहीं है, वरन् यह एक जीवंत इकाई है, जिसमें वहाँ के पर्वत, नदी, जंगल, जानवर और जन के मध्य एक संवेदनशील सेतु पाया जाता है। संवेदना एवं भावना की गहराई और सघनता के कारण राष्ट्र के सभी जन के मध्य एक गहरा लगाव बनता है, जो शनैः शनैः सम्बन्ध में परिवर्तित हो जाता है। इस सम्बन्ध निर्माण के कारण ही हम आपस में एक-दूसरे पर विश्वास करते है, भरोसा रखते हैं और एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी बनते हैं। यही सबल संवेदना हमारे जन के मध्य एवं राष्ट्र के प्रति छलकते प्रेम का कारण बनती है।

राष्ट्र प्रेम सबसे उत्कृष्ट कोटि का प्रेम है, राष्ट्रधर्म सबसे बड़ा धर्म और राष्ट्र देव सबसे बड़ा देवता है। राष्ट्र की भूमि उसका शरीर, संस्कृति उसकी आत्मा और राष्ट्र के प्रति नागरिकों का प्रेम उसकी चेतना है। इसी राष्ट्रीय चेतना को चैतन्य बनाये रखने का संकल्प हमारे मन में राष्ट्र-भक्ति का भाव जगाता है, यह भाव देश सेवा को प्रेरित करता है और यही प्रेरणा राष्ट्रोत्सर्ग के लिए उद्वेलित करती है।

राष्ट्र प्रेम सीमा पर जाकर दुश्मन से लोहा लेना या वतन के लिए शहीद होना ही नहीं है, वरन् हम जहाँ भी और जिस भी हैसियत में जी रहे हैं, वहीं पर रहते हुए देश की मिट्टी-पानी, जंगल-जानवर, पुरा सम्पदा-नव संसाधन, सभ्यता-संस्कृति और समस्त नागरिकों से प्रेम करते हुए उनकी तरक्की और समृद्धि के लिए प्रयासरत रहना

वंदे मातरम्

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज-शीतलाम्,
शस्य-श्यामलाम्, मातरम्।।
वन्दे मातरम्।। 1 ।।
शुभ्र ज्योत्स्ना, पुलकित यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित, द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम्, सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम्, वरदाम्, मातरम्।।
वन्दे मातरम् ।। 2 ।।
कोटि-कोटि कंठ कलकल निनाद कराले
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले
अबला केनो माँ एतो बले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीम् मातरम्।।
वन्दे मातरम् ।। 3 ।।
तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहु ते तुमि माँ शक्ति
हृदय तुमि माँ भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे।।
वन्दे मातरम् ।। 4 ।।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वां, नमामि कमलाम्
अमलाम् अतुलाम् सुजलाम् सुफलाम् मातरम्।।
वन्दे मातरम् ।। 5 ।।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम्।।
वन्दे मातरम्।। 6 ।।

भी राष्ट्र प्रेम है। हमारे इतिहास पुरुषों का अनुकरण करना, उनकी धरोहर पर गर्व करना और ऐसा कुछ करना कि हमारे पूर्वजों पर किए जा रहे गर्व की भाँति हमारी आगामी पीढ़ी भी हम पर गर्व कर सके यह भी राष्ट्र प्रेम है। राष्ट्रोत्थान के लिए किया गया कोई भी कार्य छोटा अथवा बड़ा नहीं होता वरन् कार्य के पीछे की भावना ही उसे श्रेष्ठ या अश्रेष्ठ बनाती है। हम जिस कार्य के लिए उत्तरदायी हैं उसे ईमानदारी और पूर्ण निष्ठा से करना राष्ट्रप्रेम का द्योतक है।

यदि हम केवल अपने गौरवपूर्ण इतिहास का बखान करते रहे और उसमें कुछ नया नहीं जोड़े, देश के कर्णधारों और शहीदों का गुणगान करते रहें और आचरण नहीं करें, अपनी धरोहर पर गर्व करते रहे और उसकी रक्षा नहीं करें अथवा राष्ट्रोन्नति के बाधक तत्वों की केवल निन्दा करते रहें और उनको रोकने का प्रयास न करें तो ऐसा आचरण भी निष्क्रिय राष्ट्रभक्ति होगा क्योंकि इससे राष्ट्र के लिये कुछ नया ही जुड़ेगा। देशभक्ति तो एक आन्तरिक भावना है, जिससे लबरेज व्यक्ति आत्मस्फूर्त होकर देश की समस्त जैविक-अजैविक सम्पदा से प्रेम करता है, उसकी खुशहाली के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है और स्वयं व परिवार के हित को राष्ट्रहित पर न्यौछावर कर देता है।

राष्ट्रभक्ति को काल की सीमाओं में भी नहीं बांधा जा सकता। समयानुसार इसके स्वरूप में परिवर्तन आता रहता है। हमारे देश में स्वतंत्रता पूर्व विदेशी बहिष्कार, अंग्रेज और उनके पिट्ठुओं के विरुद्ध द्वेषतापूर्ण व्यवहार, स्वतंत्रता संघर्ष हेतु जेल जाना, खादी पहनना आदि राष्ट्रभक्ति के प्रतीक थे, परन्तु अब राष्ट्रोन्नति में सहायक बनना राष्ट्रभक्ति का पर्याय है।

एक प्रश्न उठता है कि राष्ट्रभक्ति के संस्कार कैसे विकसित किए जाए? भारतीय संस्कृति अनुसार संस्कारों का सृजन गर्भकाल में ही प्रारम्भ हो जाता है और इस धारणानुसार

संस्कारों के सृजन की पहली संस्था माता है। राष्ट्रभक्ति के संस्कार सृजन की दूसरी संस्था विद्यालय है, परन्तु बाजारवाद के प्रभाव के कारण संस्कार सृजन की विद्यालय रूपी अति महत्वपूर्ण कड़ी में काफी कमजोरी आ गयी है। छात्र अभिभावक और शिक्षक तीनों का प्रयास अधिकतम अंक प्राप्ति पर केन्द्रित रहता है, व्यवहारगत परिवर्तन पर नहीं। शिक्षा पाठ्यक्रम में राष्ट्रभक्ति के अध्यायों की कमी और इन्हें समझकर जीवन में ढालने का कमजोर आग्रह भी बाजारवाद का घातक प्रतिफल है। संस्कार की अन्य संस्था के रूप में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जो वर्तमान में जीवन मूल्यों को सर्वाधिक प्रभावित कर रहा है, उस पर विचार करें तो पाते हैं कि राष्ट्रभक्ति संस्कार के बीजारोपण हेतु कोई नियमित कार्यक्रम प्रसारित नहीं किये जाते। मीडिया को इस दिशा में पहल करनी ही चाहिए।

राष्ट्र के प्रति समर्पण के संस्कार कहाँ और कैसे मिलें यह यक्ष प्रश्न यथावत बना रह जाता है। इस प्रश्न के समाधान हेतु हमें दो बिन्दुओं पर विशेष विचारना होगा। प्रथम संस्कार निर्माण की उपयुक्ततम उम्र और उस उम्र में अधिकतम ग्राह्य एवं प्रभावी एजेन्सी। इस सन्दर्भ में विवेचना करें तो संस्कार निर्माण हेतु सर्वश्रेष्ठ उम्र है 'बचपन'। इस उम्र में बालमन एक खाली स्लेट की तरह होता है, जिस पर आसानी से एवं अमिट लिखा जा सकता है। बालक एक कच्ची टहनी की तरह भी होता है, जिसे आसानी से उचित दिशा में मोड़ा जा सकता है और यही उम्र है जब व्यक्ति अधिकतम सीख पाता है।

दूसरा इस उम्र में सर्वाधिक ग्राह्य प्रभावी एजेन्सी है शिक्षक, जिसका बाल मन पर गहरा प्रभाव रहता है, वह शिक्षक की बात को माता-पिता से भी अधिक महत्व देता है। समाज के वर्तमान ताने-बाने में कतिपय अपवादों को छोड़कर आज भी शिक्षक सर्वाधिक ईमानदार, कर्मठ, समर्पित एवं विद्यार्थी हितैषी व्यक्तित्व है। हाँ जहाँ कहीं थोड़ी-बहुत कलुषता आ गयी है, उसे शिक्षक व समाज दोनों को मिलकर दूर करनी होगी। समाज शिक्षक को वेतनभोगी कार्मिक के नजरिये में बदलाव लाकर उसे एक भव्य फ्रेम दे और शिक्षक उस भव्य फ्रेम में अपने आपको समायोजित होने का ईमानदारी से प्रयास करें। बाजारवाद और भौतिकता की चकाचौंध के बावजूद शिक्षक स्वयं को 'प्रोफेशनल इथिक्स' में बांध कर रखें। पाठ्यक्रम निर्माण दौरान राष्ट्रप्रेम से सम्बन्धित सामग्री यथा महापुरुषों की जीवनी, स्वतन्त्रता की संघर्ष यात्रा, शहीदों की शहादत, देश के कर्णधारों का योगदान, शाश्वत जीवन मूल्य, भारत निर्माण, अतुल्य भारत, भारत उदय भावों की भाषा विश्व गुरु के रूप में प्राप्त विरासत आदि को सम्मिलित किया जाकर उन्हें प्रभावी ढंग से अधिगम कराया जाये। इसके सम्बलन हेतु राष्ट्रभक्ति सम्बन्धी सामग्री को विद्यालयी एवं महाविद्यालयी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने के साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं, साक्षात्कारों, ग्रुप विमर्शों, सेमीनारों, आमुखीकरण शिविरों में शुमार किया जाना अभीष्ट है।

राष्ट्र प्रेम में संस्कार निर्माण में शिक्षक और विद्यालय से अच्छा कोई विकल्प दिखाई नहीं देता। हाँ इस स्तर पर रही कमी को सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक संस्थाएँ और बुद्धिजीवी पूरा करने में सहयोग करे। इस प्रकार एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण होगा, जिसके अतःस्थल में भावभारती का यह अहसास समाहित होगा कि 'मेरा अस्तित्व राष्ट्र से पृथक नहीं है।'' हमारे देश के शीर्षस्थ पदासीन व्यक्ति अपने आचार विचार और व्यवहार से यदि राष्ट्रप्रेम का संदेश देवे तो राष्ट्रप्रेम रूपी वटवृक्ष अतिशीघ्र अपनी विराटता को प्राप्त कर लेगा। आज ऐसा प्रतीत भी हो रहा है।

आइए! हम सब भी अपनी यन्त्रवत व्यवस्थाओं से उबर कर राष्ट्रप्रेम को जागृत करने और उसे ऊर्जावान बनाने के लिए एक रचनात्मक संक्रान्ति का शुभारम्भ करें। अपनी भागीदारी रेखांकित करें, उसे जीवनत करे और समय-शिला पर अपने हस्ताक्षर कर भारतीय गरिमा को शाश्वतता प्रदान करें, भारतीय होने का गर्व अनुभव करें। यह राष्ट्रदेव के चरणों में सच्ची पुष्पांजलि होगी। राष्ट्रभक्ति और देश प्रेम के लिए सार रूप में यही कहा जा सकता है-

राष्ट्रभक्ति ना यंत्र है
ना जाप-सिद्धि का तंत्र,
भारत ही तन-हृदय तिरंगा,
राष्ट्रभक्ति का मंत्र

126, शिव नगर-ए, मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर
मो. 9829929277

स्वामी विवेकानन्द : कुछ पावन प्रसंग

यों बने नरेन्द्र संन्यासी

गुरु रामकृष्ण परमहंस के ब्रह्मलीन होने से थोड़े पहले की बात है। वे अस्वस्थ थे। उन्होंने अपने उन बारह शिष्यों को बुलाया जो घर छोड़कर संन्यासी बनने उनके पास आए थे। गुरुदेव ने उनसे कहा अब मैं तुम्हें दीक्षा दूंगा। इन बारह रत्नों में एक रत्न नरेन्द्र भी थे। इन सभी को गेरुए वस्त्र पहनाकर गुरुदेव ने उनसे कहा कि वे बस्ती में जाकर भिक्षा मांगकर लाए। सभी शिष्य खुशी-खुशी कंधे पर झोली लटकाकर भिक्षा मांगने निकल पड़े। न कोई शर्म और न कोई झिझक। परिजनों एवं मित्रों की आंखें डबडबा गईं लेकिन ये तरुण किंचित भी विचलित नहीं हुए। प्रथम भिक्षाटन से प्राप्त अन्न से बनी रोटी का प्रसाद गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस ने भी ग्रहण किया, हालांकि गले में कैंसर के कारण वे खाना नहीं खा सकते थे। गुरुदेव को भोजन ग्रहण करते देख नरेन्द्र सहित सभी तरुण संन्यासी बहुत प्रसन्न थे।

नहीं चाहिए सिद्धियाँ

स्वामी विवेकानन्द अपने गुरुदेव द्वारा बताए साधना मार्ग पर कठिन साधना के साथ अग्रसर थे। कभी-कभी तो वे पूरी रात ही ध्यान में बिता देते। गुरुदेव ने एक दिन उन्हें बुलाकर कहा कि कठिन साधना से मुझे अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं जिनका उपयोग करने का उन्हें कभी का मन हीं पड़ा। मैं ये सिद्धियाँ तुम्हें देता हूँ, तुम्हारे काम आएंगी। विवेकानन्द ने जिज्ञासा के साथ पूछा कि क्या इन सिद्धियों से उन्हें ईश्वर प्राप्ति में मदद मिलेगी। गुरुदेव द्वारा नहीं कहने पर उन्होंने विनम्रता के साथ ऐसी सिद्धियाँ ग्रहण करने से दो टूक इंकार कर दिया।

उसे कहते हैं ज्ञानवान !

स्वामी विवेकानन्द अपनी बात बहुत सटीक तरीके से कहा करते थे। सहज समझ में आ जाने वाले उदाहरण देते थे। एक बार विदेशी शिष्यों ने उनसे ज्ञानी के लक्षण जानने चाहे। विवेकानन्द ने छोटे बच्चे को प्रतीक बनाकर कहा कि बच्चे में आसक्ति नहीं होती। वह मिट्टी का घर बनाता हैं और कोई उसके हाथ लगा दे तो रोने, चिल्लाने, पैर पटकने लगे और थोड़ी देर में स्वयं उसको तहस-नहस कर दें। ऐसे हँसते-हँसते जैसे तहस-नहस कर के भी कोई बड़ा काम कर दिया हो। वह कोई वस्तु कस कर लिए बैठा हो। कोई मांग ले तो साफ मना। छिनने का प्रयास करें तो वही रोना मचलना। इस पर कोई नया खिलौना बता दे तो उसे लेने के लिए पहले वाली वस्तु फेंकते देर नहीं लगाता। पल में रुठना तो पल में राजी। अत: ज्ञानी वही है जिसमें बच्चे की भाँति निर्आसक्ति है।

शिक्षक दर्शन

आदर्श शिक्षक का गुरुत्व

□ रामचन्द्र स्वामी

यह सर्वमान्य सत्य है कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति बहुत कुछ उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति पर निर्भर करती है तथा शिक्षक शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु होता है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही शिक्षक का स्थान सर्वोपरि रहा है। हमारे समाज में शिक्षक को गुरु कहा जाता है और गुरु का पद भगवान से भी बड़ा बताया गया है। कहा भी है :-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पांव।
बलिहारी गुरु आपनी गोविन्द दियो बताय।।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी शिक्षक को बच्चों के लिये देवता के समान कहा है।

शिक्षक को शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक उत्तरदायी माना गया है। गुणात्मक शिक्षा के लिये शिक्षक की प्रतिबद्धता और उत्तरदायी शिक्षा महत्वपूर्ण स्थान रखती है। गुणात्मक शिक्षा वह है, जो बालकों का ज्ञान, कौशल एवं आवश्यक मूल्यों को अर्जित करने योग्य बनाए व समाज में एक सफल व समृद्ध नागरिक बनाए।

समाज में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। शिक्षक ऐसा केन्द्र बिन्दु है, जहां से बौद्धिक परम्पराएं तथा तकनीकी कुशलताएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदत्त की जाती है। शिक्षक ही सभ्यता के दीप को प्रज्वलित रखने में सहायक रहता है।

शिक्षक केवल बालक का मार्गदर्शन ही नहीं करता वरन सम्पूर्ण राष्ट्र के भाग्य का निर्माण करता है।

शिक्षक बालकों के लिये व्यवहार कुशल व सुसंस्कारों से परिपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। बालक की आन्तरिक शक्ति, मन, बुद्धि, आत्मा तथा शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ बाह्य शिक्षा बालक के नैतिक मूल्यों व कर्तव्यनिष्ठ दायित्वों से परिपूर्ण हो, जो बालक का प्रत्येक क्षेत्र में सर्वांगीण विकास करे, इसी गुणात्मक शिक्षा के लिये शिक्षक हमेशा तैयार करता है।

एक उत्तरदायी शिक्षक अपनी विद्वता तथा सृजनात्मकता एवं अन्य सद्गुणों का प्रयोग करके, छात्रों की आकांक्षाओं के अनुरूप उनका सर्वांगीण विकास करता है।

शिक्षक विद्यालय में उचित शिक्षा पद्धतियों का प्रयोग कर विषयवस्तु को छात्रों के समक्ष रोचक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर, छात्रों के साथ मित्रवत् व्यवहार अपनाकर उनकी आवश्यकता के अनुसार उचित दिशा निर्देशन प्रदान कर बालकों को शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करता है।

शिक्षक ही शिक्षा की धुरी है। शिक्षक समाज से गहरा तालमेल, अभिभावकों से मधुर सम्बन्ध व उन्हें विद्यालयी कार्यक्रमों में सहभागी बनाकर तथा अन्य साथियों के साथ सहयोगात्मक भावना से विद्यालय में मधुर सामाजिक वातावरण बनाने में अपना उत्तरदायित्व निभा रहा है।

शिक्षक बालक की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को जाग्रत कर उनमें सुसंगत विकास की भावना भरता है शिक्षा के द्वारा प्रदान की गई सुसंस्कारित शिक्षा ही बालक की प्रकृति को बदल सकती है और उसे उदात्त बना सकती हैं। शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का साधन है। अतः उत्तरदायी शिक्षक ही बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को जाग्रत कर उन्हें पूर्ण विकसित कर उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान प्रदान करता हैं। उत्तरदायी शिक्षक बालक रूपी हीरे की कल्मष को दूर कर उसके आन्तरिक गुणों को जगमगाने का प्रयास करता है। जिससे बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सके व समाज को भी लाभ पहुंचा सके।

शिक्षक स्थानीय परिवेश में, मातृभाषा से सुलभ साधनों के द्वारा बालकों के अधिगम सम्बन्धी क्रमिक विकास को गति प्रदान कर उनकी व्यावहारिकता और विवेक शक्ति में निखार लाकर बालक की भौतिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, सौन्दर्यात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक तथा अध्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है शिक्षक ही बालक के व्यक्तित्व का विकास करता है। बालक के मन में अपने देश की परम्पराओं और संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न कर, उसमें सेवा व निष्ठा का भाव विकसित कर, बालक के मन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर, श्रम के प्रति आदर भाव उत्पन्न कर बालक को भविष्य निर्माता बनाता है रुचिकर प्रार्थना सभा कार्यक्रम संचालित कर सरस्वती वंदना, गुरु वंदना, ईश वंदना, देशभक्ति गीत, कहानी, अनमोल वचन, अमृत वचन, प्रेरक प्रसंग, कविता व सामान्य ज्ञान की जानकारी तथा राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान व प्रतिज्ञा के साथ प्रार्थना कार्यक्रम सम्पन्न कराकर विद्यालयी वातावरण को सकारात्मक ऊर्जा व प्रेरणा प्रदान शिक्षक ही करता है।

एक आदर्श शिक्षक ही कक्षा-कक्ष व शैक्षिक वातावरण भयमुक्त व आनन्दमय बनाता है, यह सर्वथा सत्य है।

कमजोर छात्रों के लिये निदानात्मक कक्षाएं लगाकर शैक्षिक प्रगति के लिये छात्रों में जिज्ञासा तथा प्रतियोगी भावना का विकास करता है।

बालकों में अल्प बचत की भावना का विकास कर तथा शाला परिसर में वृक्षारोपण एवं रख-रखाव में बालकों को सहभागी बनाकर शिक्षक समाज में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों के साथ बालचर, स्काउट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बालसभा, वाद-विवाद प्रतियोगिता, महापुरुषों की जयन्तियां, पर्व-उत्सव आदि अन्य गतिविधियों को बढ़ावा देकर बालकों के व्यक्तित्व का विकास कर शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्तरदायी शिक्षक खेल-कूद प्रवृत्तियों को बढ़ावा देकर छात्रों को किताबी ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान की जानकारी प्रदान करता है। अभिभावकों से छात्र समस्याओं पर नियमित विचार-विमर्श कर व विद्यालय की प्रत्येक गतिविधियों में छात्र सहभागिता को बढ़ाकर छात्रों के मस्तिष्क में भी लोकतांत्रिक सिद्धांत व व्यावहारिकता से सम्बन्धित विचारों का प्रादुर्भाव कर राष्ट्र निर्माण

में एक आदर्श शिक्षक अपने छात्रों को आदेश देने की अपेक्षा उनका नेतृत्व तथा निर्देशन करता हैं शिक्षक में निरंकुश प्रवृत्ति न होकर सेवा भावना होती है। आदर्श शिक्षक समय का पाबन्दी होता है।

एक आदर्श शिक्षक न केवल कर्तव्यनिष्ठ अपितु जागरूक व सकारात्मक दृष्टिकोण से युक्त होता है।

जब छात्र विद्यालय में प्रवेश लेता है तो सब कुछ उसके लिये नयापन होता हैं उसके चेहरे पर मुस्कान नहीं होती है। वह सहमा-सहमा सा रहता है। उसे बचपन का ज्ञान नहीं होता और भविष्य का भान नहीं होता हैं। उस समय केवल शिक्षक ही उसका सब कुछ व अनाश्रयदाता होता है। एक उत्तरदायी शिक्षक आनन्दपूर्ण वातावरण में शिक्षक का कार्य करते हुए विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए, बच्चों से मधुर सम्बन्ध बनाकर शिक्षा के विषयों को अत्यधिक सरल, सुगम तथा सुपाच्य बनाकर एवं शैक्षिक वातावरण को प्राणवान बनाकर गुणात्मक शिक्षा में स्वायत्त व उत्तरदायी शिक्षक की अहम भूमिका निभाता है।

अपने कर्तव्य के प्रति उत्तरदायी शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति रूपी उद्यान का चतुर माली है। वह संस्कार की जड़ों में परिश्रम की खाद देता है। इससे समाज का परिष्कार होता है।

उत्तरदायी शिक्षक वह आईना है, जिसे देखकर छात्र अपने आपको प्रगति व उन्नति के लिये संवारता है। अत। शिक्षक को अपने आइने को संदेश साफ रखना चाहिए।

शिक्षा केवल किताबी वस्त्र पहनकर नहीं सामने आती, उसका वास तो चेतना में है। वह न तो अक्षरों की मोहताज है और न ही क्रीतदासी। जब शिक्षक के द्वारा सुसंस्कारित शिक्षा पवन की तरह व्याप्त होती है तो पूरे वातावरण को ताजगी व सुवास से भर देती है।

शिक्षक के इन्ही गुणों के कारण हम प्रत्येक वर्ष एक आदर्श शिक्षक डॉ. राधाकृष्ण सर्वपल्लि के जन्म दिवस 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस रूप में मनाते हैं।

-अध्यापक, रा.उ.मा. विद्यालय
सेवगों की बगीची, बीकानेर
मो. 9414516329

विवेक व्यंग्य

वास्तविक शक्ति

पहचाना आपने। ये हमारे विवेक बाबू, विवेकानंद ही हैं। उनका यह राजकुमार जैसा दुर्लभ फोटो राजस्थान के खेतड़ी नगर में लिया गया था।

यह शक्ति क्या है जो हमारे शरीर में व्यक्त होती है? यह हम सब लोगों पर प्रकट है कि यह वह शक्ति है जो परमाणुओं को जोड़ बटोर कर हमारे और तुम्हारे शरीर को बनाती है। कोई दूसरा इस मानवी शरीर की रचना करने नहीं आता। मैंने यह नहीं देखा है कि खाए कोई और तृप्ति हो मुझे। मैं ही अन्न को खाकर उसे पचाता हूं और उसके रस को लेकर रक्त, मांस, मज्जा और अस्थि रूप में उसे परिणत करता हूं। यह कौन सी अदभुत शक्ति है ? भूत और भविष्य का भाव ही कितनों के कलेजे को हिला देता है। कितनों को तो वे केवल कल्पना मात्र जान पड़ते हैं। वर्तमान काल ही को ले लीजिए। वह कौन सी शक्ति है जो हमारे भीतर काम कर रही है। हमें यह भी ज्ञात है कि सारे प्राचीन साहित्य में यह शक्ति, शक्ति की यह अभिव्यक्ति जो एक अत्यन्त उज्वल व प्रकाशमय पदार्थ मानी गई थी, इसी शरीर के आकार प्रकार की थी और इस शरीर के पंचतत्व प्राप्त होने पर रह जाती थी। इसके पीछे धीरे-धीरे यह उच्च गति बदला करती है। ऐसे लोग जो अपने साथ संसार में बहुत सी आकर्षण शक्ति लेकर आते हैं, जिनकी आत्मा सैकड़ों और सहस्त्रों में काम करती है जिनके जीवन दूसरों में आध्यात्मिक अग्नि प्रज्वलित कर देते हैं-ऐसे लोगों का आश्रय हम सदा से देखते आ रहे हैं, वही धर्म था। उनमें संचालन शक्ति धर्म ही से आई थी। धर्म उस अनन्त शक्ति को प्राप्त करने के लिये सबसे बड़ा संचालक बल है और उसका प्राप्त करना ही प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध स्वत्व और स्वभाव है।

भविष्य का धार्मिक आदर्श ऐसा होना चाहिए जिसमें संसार भर के अच्छे और महत्वपूर्ण गुण भरे हों और जिसमें भविष्य की उन्नति के लिये अपरिमित अवकाश हो। प्राचीन काल में सारी अच्छी बातों की रक्षा करनी चाहिए और उसमें ऐसी बातों के आने के लिये आगे की राह खुली होनी चाहिए जो अछूती बची हुई है।

धर्मों को व्यापक होना चाहिए और उन्हें एक दूसरे से इसलिये घृणा नहीं करनी चाहिए कि उनमें पृथक ईश्वर का आदर्श है। मैंने अपने जीवन काल में बहुत से धार्मिक लोगों और बहुत से बुद्धिमान मनुष्यों को देखा जिनका ईश्वर में नितांत विश्वास था। मेरा ऐसा कथन इसलिये है कि हमारे शब्दार्थों में उनका विश्वास न था, संभवतः वे ईश्वर को हमसे कहीं अधिक समझते थे। धर्म के अर्थ के अंतर्गत वे सारे विचार आ जाते हैं, चाहे उनमें पुरुष विशेष ईश्वर, अपुरुष अपुरुषविधि, अप्रमेय या अनन्त धर्म अथवा आदर्श पुरुष का भाव क्यों न हो, वे सब धर्म के अन्तर्गत हैं, और जब धर्म इतना विस्तृत और उदार हो जायेगा तब उसकी उपकार शक्ति भी सौ गुनी बढ़ जायेगी। धर्मों में अपार शक्ति होते हुए भी उनके संकुचित और परिमित होने के कारण प्रायः संसार को उनसे लाभ के स्थान पर हानि ही होती गई है।

-स्वामी विवेकानन्द

अध्यापकत्व की परख

सही शिक्षण का आधार छात्र-अध्यापक के संबंधों का सही धरातल है। आज तो यह संबंध तीन और छह की स्थिति लिये हुए हैं। बस कक्षागत सीखना-सिखाना अध्यापक जरूर चला आ रहा है। इस पर कुंजियों तथा पासबुक्स व कोचिंग ने तो अध्यापक की निर्भरता को समाप्त सा ही कर दिया है। इसलिए छात्र अपने अध्यापकों की परवाह नहीं करते। हमारे ये संबंध किन बातों पर आधारित हैं, इसे देखना है, सोचना है और समझना है। यहां पर प्रस्तावित है एक कसौटी। जांच कर देखें कि हम और आप कितने खरे उतरते हैं। क्या आपके छात्र ऐसा सोचते हैं कि-

1. इनकी कक्षा में इतना आनन्द आता है कि कालांश समाप्त होने का पता ही नहीं चलता। मन करता है, बस पढ़ाते जाए, पढ़ाते जाए।
2. इन अध्यापकजी ने विषय को इतना रुचिकर बना दिया है कि अब मेरी इसमें दिलचस्पी बहुत बढ़ गई है।
3. इस कक्षा में बड़ी एकरसता है, नयापन कुछ भी नहीं।
4. ये सर तो नये विचारों को कई प्रकार से स्पष्ट करते हैं जिससे कि विषय आसान बन जाता है।
5. ये अध्यापकजी बिना कुछ छोड़े पूरी बात समझाते हैं और समझाने की गति इतनी सहज होती है कि मैं आसानी से पूरा विषय समझ जाता हूँ।
6. इन सर के कुछ प्रिय शिष्य हैं, जिनका ये विशेष ध्यान रखते हैं।
7. पढ़ाई के अतिरिक्त भी इनकी कक्षा में कई उपयोगी, दिलचस्प काम, और बातें होती हैं, ज्ञान की, विज्ञान की एवं संस्कार की।
8. ये सर अपने विषय में पारंगत हैं तथा पूरे आत्मविश्वास एवं अधिकार से पढ़ाते हैं। छात्र इनके कालांश से गायब नहीं होते हैं।
9. ये सर किसी बात को समझाने के लिए भरपूर शिक्षण-उपकरणों का प्रयोग करते हैं तथा आवश्यकतानुसार टीवी, रेडियो, टेप, चार्ट आदि का भी प्रयोग करते हैं।
10. ये श्यामपट्ट का प्रयोग भरपूर करते हैं। इनका श्यामपट्ट कार्य सुन्दर और स्पष्ट होता है, नोट्स के लिए अच्छा होता है।
11. ये गृहकार्य देने के साथ ही क्या करना है, कैसे करना है आदि समझाते हैं और गृहकार्य को जाँचते हैं, गलतियों को सही करके समझाते हैं।
12. और ये सर गृहकार्य तो अधिक देते हैं पर जाँचते नहीं।
13. ये सीखने में पूरी सहायता करते हैं, आवश्यकतानुसार प्रोत्साहित करते हैं, मदद करते हैं।
14. इन सर का काम हम पूरी दिलचस्पी और जोश से करते हैं और इनकी दृष्टि में अच्छा बनने की होड़ में रहते हैं।
15. ये सर हमसे बहुत ज्यादा अपेक्षाएं रखते हैं जो कि संतुलित नहीं होती।
16. ये सर हमारी शंका निवारण प्रसन्नता से करते हैं।
17. ये स्वाभिमानी, समय के पाबन्द, निर्भीक एवं निष्पक्ष हैं, ये परीक्षा व कक्षा में कोई पक्षपात नहीं करते। संस्था प्रधान की अनुपस्थिति में इनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है।
18. इन सर की कक्षा में छात्र अनुशासन में रहते हैं। इनका सम्मान करते हैं। ये अपने व्यक्तित्व एवं कर्तव्यनिष्ठा से छात्रों को प्रभावित करते हैं।
19. हमें लगता है, ये सर हमारे मित्रवत् हैं, संरक्षक हैं, ये हमारा पूर्ण विकास चाहते हैं। सदैव सहायता के लिए तत्पर हैं। हमारी परीक्षाओं और टेस्ट्स की पूरी जानकारी रखते हैं, अन्य विषयों की भी।
20. ये सर कभी भी प्रधानाध्यापकजी अथवा अन्य किसी भी साथी अध्यापक की निंदा नहीं करते वरन कक्षा में सभी की प्रशंसा करते हैं, शाला की हर गतिविधि में भाग लेते हैं और हमें विकास की प्रेरणा देते हैं।
21. ये सर हमें प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी समय-समय पर देते रहते हैं जिससे कि हम भविष्य हेतु स्वयं को तैयार कर सकें।

याद रखिये अध्यापक जी, छात्र गण यह सब आपके बारे में सोचते हैं। यही आपकी कसौटी है, स्वयं ही देखिये आप किस स्थिति में हैं।

-अनिल कुमार, प्राचार्य
टैगोर विद्या भवन उ.मा. विद्यालय
शास्त्री नगर, जयपुर-16

शिविरा के सुधि पाठकों एवं रचनाकारों से विभिन्न विषयों पर विचार बराबर प्राप्त होते रहते हैं। कार्य के वास्तविक धरातल से उभरे विचार व्यावहारिक एवं विचारणीय होते हैं। इन विचारों से सम्बन्धित लघु आलेखों को नियमित मंच प्रदान करने के लिए नव वर्ष 2015 के प्रथमांक से एक नया स्तम्भ विमर्श शुरू किया जा रहा है। विमर्श, मेरे अनुभव-मेरे विचार में प्रकाशित करने के लिए आपके विचारों का स्वागत रहेगा। पेश है जनवरी 2015 का विमर्श। **-संपादक**

विमर्श

मेरे अनुभव मेरे विचार

देशद्रोही कौन?

हिन्दी का पीरियड चल रहा था। कक्षा में पाठ का विषय था ''देशभक्ति''। एक बालक ने प्रश्न पूछा, ''मैडम, देशभक्त किसे कहते हैं?'' मैंने कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से ही प्रश्न किया कि कौन इसके बारे में सही जवाब देगा? कई विद्यार्थियों ने ठीक बताया कि देश से प्रेम करने वाला, देश की सेवा करने वाला, देश के लिए प्राण न्यौछावर करने वाला ही देशभक्त कहा जाता है। तभी एक बालिका ने पूछा, ''मैडम, जो ऐसा नहीं करते, उनको क्या कहते हैं?'' मैने प्रश्न किया, ''देशभक्त का विलोम शब्द क्या होता है?'' जवाब आया, ''देशद्रोही''। फिर प्रश्न उठा, ''देशद्रोही किसे कहते हैं?'' मैंने कहा जो देश के प्रति वफादार नहीं होते, ऐसे व्यक्ति को देशद्रोही कहते हैं। उसी बालिका ने कहा, ''प्लीज, उदाहरण देकर समझाइये।'' मैंने कहा, ''जो देश के दुश्मन होते हैं, जैसे आतंकवादी, जमाखोर, रिश्वतखोर, दुष्कर्मी, मिलावट करने वाले आदि।'' एक बालक ने कहा कि कल के समाचार पत्र में पढ़ा था कि हमारे देश के ही कुछ लोगों ने ऐसी दवाई बनाई, जिसमें चूहा मारने की दवा मिली हुई थी। उसको खाने से कुछ महिलाओं की मौत हुई, वे लोग भी

तो देशद्रोही हुए। उन्हें भी तो वही सजा मिलनी चाहिए जो एक देशद्रोही को मिलती है। मुझसे उसका कुछ जवाब नहीं बना। तभी पीरियड समाप्त होने की घण्टी बजी और मैं निरूत्तर होकर कक्षा से बाहर आ गयी। मन में उधेड़बुन थी कि ऐसे तो हमारे देश में कितने देशद्रोही हैं जो गरीबों का, बालिकाओं का शोषण करते हैं, खाने की चीजों में, दवाइयों में मिलावट करते हैं, न जान कितने व्यक्तियों की जाने जाती हैं, लेकिन कोई उससे सबक नहीं लेता। न ही इन देशद्रोहियों को ऐसी सजा मिलती है कि भविष्य में कोई ऐसा न करें। काश! हमारे न्यायकर्ता जागें जिससे कि कोई भी व्यक्ति असामाजिक कार्य करने की हिम्मत न करे। अन्त में, मैंने सभी बच्चों से कक्षा में तथा बाद में प्रार्थना सभा में शपथ दिलाई कि 'हम जीवन में कभी भी कोई अनैतिक कार्य नहीं करेंगे। ऐसा करके मुझे एक अपूर्व शान्ति प्राप्त हुई।

–उर्मिल दास

इम्मैनुअल मिशन उ.मा.वि. झोटवाड़ा, जयपुर

नये वर्ष के संकल्प

हम सबका संकल्प हो ऐसा!
भारत फिर से बने विश्वगुरु!!

नववर्ष पर 2015 पर विद्यार्थी निम्न संकल्पों को लें व उन्हें अपने जीवन में सार्थक सिद्ध करते हुए आने वाली भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने–

1. हम सच्चे मन से माता–पिता की सेवा व बड़ों का सम्मान करेंगे।
2. गुरुजनों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव बनाए रखेंगे।
3. कभी भी असत्य नहीं बोलेंगे।
4. बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, पान व तम्बाकू नहीं खायेंगे।
5. उत्तेजक व मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करेंगे।
6. हमेशा गरीब, असहाय, निर्बल व अनाथ की सहायता करेंगे।
7. पशु–पक्षियों के प्रति दया का भाव रखेंगे।
8. पर्यावरण शुद्धि के लिए ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करेंगे।
9. पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करेंगे।
10. अंधे, बहरे, गूंगे व अपाहिज की सहायता करेंगे।
11. मित्रों व सहपाठियों के साथ धोखा व छलकपट नहीं करेंगे।
12. किसी भी प्रकार की गलत संगत से दूर रहेंगे।
13. नैतिक पतन व चरित्रहीनता की वस्तुओं से दूर रहेंगे।
14. दूसरों के प्रति द्वैष व ईर्ष्या की भावना नहीं रखेंगे।
15. हमेशा स्वावलंबी बनने का प्रयास करेंगे।
16. अपने लक्ष्य के प्रति हमेशा अटल व दृढ़प्रतिज्ञ रहेंगे।
17. विद्यालय के अनुशासन व नियमों का पालन करेंगे।
18. **घर, गली–मोहल्ला व गाँव को स्वच्छ रखने हेतु लोगों को प्रेरित करेंगे।**
19. ईश्वर के प्रति आस्था बनाये रखेंगे।
20. प्रतिदिन किए गये कार्यों का रात्रि को सोने से पूर्व मनन करेंगे।
21. ईश्वर से समस्त संसार के कल्याण की कामना करेंगे।

हम सबका एक ही नारा।
स्वच्छ हो भारत हमारा।।

–मोडाराम सोनल, अध्यापक

फतापुरा, पो.–मोकमपुरा–रानी, तह.–बाली (पाली)

शिक्षक का सम्मान

शिक्षा विभाग को मातृ विभाग कहा जाता है। यही कारण है कि शिक्षक को समाज में उच्च स्थान प्राप्त है। बड़े से बड़ा व्यक्ति भी अपने शिक्षकों को स्मरण कर सुखद अनुभूति करता है। वह अपने जीवन में प्राप्त उपलब्धियों का श्रेय अपने गुरुजन को देता है। जब कभी वयोवृद्ध–सेवानिवृत्त शिक्षक, कतिपय तो लकड़ी के सहारे चलते, अपने सेवाकाल में उनसे पढ़े शिक्षकों से मिलते हैं तो उन्हें अपने आप पर गर्व होता है।

ऐसा ही एक किस्सा भारत के उपराष्ट्रपति रहे हमारे प्रान्त राजस्थान के लोकप्रिय जननेता स्वर्गीय भैरोंसिंह जी शेखावत सुनाया करते थे। अपने प्राइमरी शिक्षा काल को याद करते हुए शेखावत सा. रूड़मल जी नामक शिक्षक की चर्चा करते थे। रूड़मल जी एक पैर से थोड़े विकलांग थे। शेखावत साहब उनकी चर्चा करते हुए इतने आत्म विभोर हो जाते कि जैसे गुरुजी उसी समय भी उनके समाने खड़े हो। साथ ही यह संदेश भी देते कि उनकी सारी उपलब्धि रूड़मल जी जैसे शिक्षकों की देन है। राजस्थान के मुख्यमंत्री रहते श्री भैरोंसिंह जी से यह किस्सा कई बार, विशेषकर शिक्षक दिवस व ऐसे आयोजन अवसर पर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम शिक्षकों को भी ऐसा सौभाग्य अपने जीवन में देखने को मिलता है। हमें शिक्षक होने पर गर्व करना चाहिए।

–महावीर प्रसाद गर्ग, प्रधानाचार्य

शहीद अमित भारद्वाज राउमावि, माणक चौक, जयपुर

भयमुक्त हो बालक

यद्यपि वह वातावरण एवं स्थितियां अब नहीं रही है, जब स्कूल का नाम सुनते ही बच्चे रोने –चिल्लाने लगते थे तथापि पूर्ण भयमुक्त एवं मित्रवत स्थितियां घर एवं स्कूलों की अभी भी नहीं बन सही है। पश्चिम के विख्यात शिक्षा शास्त्री इवान इलिच को विद्यालयों में व्याप्त भय को देखकर स्कूल मुक्त समाज की अवधारणा देनी पड़ी थी। इवान इलिच का जन्म लगभग 90 वर्ष पहले सन् 1926 में वियेना में हुआ था ओर अमेरिका उनका मुख्य कार्य क्षेत्र था। उनकी पुस्तक 'डी स्कूलिंग सोसाइटी' बहुत प्रसिद्ध हुई थी।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में बहुत सख्ती से बच्चों को शारीरिक दण्ड नहीं दिए जाने की बात कही गई है। महान शिक्षाविद् प्रो. यशपाल ने अपनी रिपोर्ट Learning Without Burden में बच्चों की पीठ पर लदे वजनी स्कूल बेग को शारीरिक एवं मानसिक यंत्रणा मानते हुए उससे मुक्ति की अनुशंसा की थी। अधिक से अधिक अंक प्रतिशत अथवा ऊँचे से ऊँचे ग्रेड की अभिभावकों की अभिलाषा भी बच्चों के लिए किसी यंत्रणा से कम नहीं है। 'यह करो', 'यह मत करो', 'अब मत खेलो', 'अब पढ़ने बैठ जाओ', 'यही नहीं', 'वह नहीं' 'उस जैसा बनो', 'फलां ठीक नहीं है'–जैसे जुमले बच्चों के कोमल मस्तिष्क में हर समय गूँजते रहते हैं। हमें इन यंत्रणाओं एवं भय से बालक को सर्वथा मुक्त करना है।

विद्यालयों की स्थिति भी सहज एवं सरस नहीं है। वहाँ पचासों तरह के उपदेश शिक्षक देते रहते हैं। कहाँ जरूरत है ऐसे उपदेशों की। शिक्षक का स्वयं का चरित्र ही ऐसा हो कि उसके सम्पर्क में आकर शिष्य स्वयंमेव ज्ञानकुशल हो जाए। अनुकरण से सीखना जितना प्रभावी होता है, उतना अन्य किसी साधन से नहीं, कतई नहीं। अत: शिक्षक स्वयं को आदर्श बनाते हुए बालकों को भयमुक्ति का वरदान प्रदान करें।

–मदन लाल पुरोहित, प्र.अ.

रामावि, फतेहपुर, संगरिया (हनुमानगढ़)

जीवन कौशल

आओ, सार्थक रंग भरें जीवन में

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

नव वर्ष 2015 के शुभागमन की पुण्य वेला में मुझे कवि का कहा याद आ रहा है–

इस कर्म भूमि में कर्म तो,
सभी को करने पड़ते हैं।
खुदा तो सिर्फ लकीरे खिंचता है,
रंग तो हमें ही भरने पड़ते हैं।

यह सच है कि इस संसार में जो भी जीवन अस्तित्व में आया है, वे सभी अपने कर्मों में रत रहते हैं और अपने–अपने कर्मों के अनुसार फल भी भोगते रहते हैं। जीव–जगत में मनुष्य योनि उत्कृष्ट मानी गयी हैं क्योंकि उसके पास बुद्धि है, विवेक है, वाणी की शक्ति है। मनुष्य नाना प्रकार के कर्म करता है उन कर्मों में एक श्रेष्ठ कर्म है–''शिक्षा–कर्म'' इसलिए सदियों से हमारे देश में गुरु की महत्ता स्वीकार की गई है। अनेकों जगह उनका बखान किया है। उनकी पूजा–स्तुति की गई है इसीलिए गुरु के लिए कहा गया है–

गुरु तुम हो वरदान जगत के,
तुम से जग उजियारा है।
तुम न रहे तो सारे जग में,
चारों ओर अंधियारा है।।

ईश्वर ने हमें गुरु (शिक्षक) का इतना ऊँचा (पेशा) पद दिया है, जिस पर हमें नाज होना चाहिए। परमपिता परमेश्वर ने हमें उस बगिया का का माली बनाया है, जिसके फूलों को फलने–फूलने का जिम्मा हमें दिया। हम उन में सुवासित सुगन्ध भर उनको महका सकें। यह कुव्वत, यह कला, यह हुनर ईश्वर ने हमें दी है। हम वो बागवां है जिनके फूलों की सुमधुर सुगन्ध पाने के लिए देवता भी तरसते हैं।

आप शिक्षक हैं, गुरु हैं। कहते हैं शिक्षा दान महादान है। यह बात नहीं है कि आप कर्म नहीं कर रहे। आप कर्म भी कर रहे हैं और नन्हें–मुन्ने बालकों को पढ़ा भी रहे हैं। उनका भविष्य संवार भावी पीढ़ी का निर्माण भी कर रहे हैं।

ईश्वर ने कच्ची मिट्टी के रूप में बालकों को हमें मात्र लकीरें के रूप में (रिक्त मस्तिष्क) आपको सौंपे हैं। आवश्यकता है उस कच्ची मिट्टी को सार्थक आकार रूप देने की।

शिक्षक की महिमा बताने के लिए कहा गया है–

विद्यार्थी कोई चार्ट नहीं
बल्कि एक चित्र है।
जिसके व्यक्तित्व और मस्तिष्क
में रंग शिक्षक भरता है।

यदि आपने अपने विद्यार्थियों में सार्थक रंग भर कर उनके भविष्य को संवार दिया तो समझो आप धन्य हो गए। उन बालकों में आपने किसी को डॉक्टर, किसी को इंजीनियर, किसी को अध्यापक, पटवारी, किसी को अच्छा व्यापारी, मैकेनिकल, कलाकार आदि बनाकर उसे समाज में इस रूप में स्थापित कर दिया कि वह कहीं भी खड़ा होकर सिर ऊँचा कर गर्व से कह सके कि मैं उन गुरुजी का शिष्य हूँ जिनकी बदौलत आज मैं इस मुकाम पर पहुंचा हूँ। प्रश्न पूछिए अपने आप से कि ऐसे शिष्यों में आपके शिष्यों की संख्या कितनी हैं?

एक कलाकार चित्र बनाकर उसमें रंगों का इतना सामंजस्य बिठाता है वह चित्र जीवंत हो उठता है। ऐसा लगता है वह अमूर्त चित्र अभी बोल उठेगा। ऐसे ही सार्थक रंगों से बचने चित्र की कीमत (मार्केट वैल्यू) दुगुनी होती है। यही बाल बालकों के लिए लागू होती हैं। उनमें ऐसा रंग भरिए कि उनकी मार्केट वैल्यू बढ़ जाएं। उक्ति है– 'बीती ताहे बिसार दे, आगे की सुधि लेय।'

अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। जो बालक अपने आपको समर्पित कर आपके पास आया है। आप उसके जीवन में ऐसे रंग भर दें कि वह अपने जीवन रूपी नौका को संसार रूपी सागर से आसानी से पार कर लें।

आपके पास सभी स्तर के सभी वर्ग बालक पढ़ने के लिए आते हैं। आप उनकी क्षमता और योग्यता के अनुसार उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देते हैं। विशेष परिस्थितियों में आपको लगता है कि बालक पढ़ने में कुशाग्र है, प्रतिभावान हैं किन्तु आर्थिक विपन्नता उसके विकास में बाधक है। आपने इसकी प्रतिभा पहचानकर उसे हर संभव आगे बढ़ने का अवसर दिया। यहाँ तक कॉपी–किताबें, जूते–यूनिफॉर्म एवं विद्यालय फीस आदि की भरपूर मदद की। उसकी बीमारी में आप किसी मसीहा के रूप में खड़े हुए। आपकी सद्प्रेरणा और मार्ग–दर्शन में वह गरीब बालक खेलकूद में, सांस्कृतिक क्षेत्र में, शैक्षिक क्षेत्र में अच्छे रेंक से बाजी मारता गया और एक निश्चित पड़ाव (8वी, 12वीं उत्तीर्ण होने पर) पर आते–आते आपने उसे बीच मझधार में छोड़ दिया तो वह कहीं का न रहेगा। अब तक किए आपके सारे प्रयास निष्फल साबित होंगे।

उचित मार्गदर्शन के अभाव में वह दिक्भ्रमित हो हताश–निराशा कुछ भी न कर पाने की स्थिति में आ जाएगा। बेहतर होगा कि उसकी प्रतिभा एवं योग्यता के संवरण एवं संवर्धन के रूप में आप उसके कैरियर निर्माण में मंजिल तक पहुँचाने में अंतिम स्तर तक उसके साथ रहें। समय–समय पर उचित दिशा–निर्देश के साथ उसे गाइड करते रहे और ऐसा कर उसे समाज के लिए योग्य नागरिक बना दें तो समझ लो आपने अपने जीवन में बहुत बड़ा महान कार्य कर दिया। बहुत बड़ा पुण्य कमा लिया। वह अपने पैरों पर खड़ा हो, चारित्रिक निर्माण के साथ समाज–सेवा करता हुआ हमेशा–हमेशा के लिए ऐसे सतगुरु के लिए समर्पित भाव से कृतज्ञ होगा।

ऐसा होनहार बालक आजीवन आपको याद करता रहेगा और यही कहेगा :–

आओ, पल दो पल सुस्ताना छोड़ दें।
घड़ी भर के लिए बालकों से नाता जोड़ दे।।
उनके जीवन में भरें ऐसे सार्थक रंग
कि हर एक आपका नाम बोल दे।।

(लेखक पुरस्कृत शिक्षक एवं चिन्तनशील शिक्षाविद् हैं।)
से.नि. प्रधानाध्यापक
शांतिनाथ मन्दिर के पास, छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)
मो. 9460607990

गृह कार्य

शिक्षक अधिगम का दर्पण है गृहकार्य

❒ सुनीता चावला

गृह कार्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण भाग हैं। यह शिक्षण अधिगम का वह अनमोल ढंग है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी पढ़ायी गयी पाठ्यवस्तु का लिखित अभ्यास कर हृदयंगम करते हैं। कक्षा विषय एवं आयु के अनुसार गृह कार्य के भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं लेकिन हर रूप में वह पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्तकर विषयवस्तु को मजबूती प्रदान करने वाला होता है।

यह महसूस किया जा रहा है कि शिक्षक दैनिक पाठ योजना के माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्ण करने का प्रयास करते हैं लेकिन यह तथ्य भूल जाते हैं कि अध्यापन अधिकतम प्रभावशाली तभी होगा जब विद्यार्थी श्रवण-मनन के साथ लिखित अभ्यास भी करें। शिक्षक की अध्यापन शैली चाहे कितनी भी कारगर क्यों न हो लेकिन लिखित अभ्यास होने पर ही शिक्षार्थी स्वयं को सार्थक रूप से अभिव्यक्त कर पाता है। शिक्षार्थी जब गृहकार्य करता है तो उसके 3H अर्थात् हैन्ड, हैड एवं हार्ट क्रियाशील होते हैं। इससे मानसिक एवं संवेगात्मक स्तरों का विकास होता है। शिक्षार्थी की लेखन क्षमता में सुधार होता है, एकाग्रता बढ़ती है तथा शब्द भंडार संवरता है।

समय-समय पर शिक्षाविदों के विचारों एवं विभिन्न समितियों के प्रतिवेदनों में भी गृह कार्य की महत्ता को स्वीकार कर नियमित एवं सुसंगत रूप से उसे दिए जाने की बात कही गई है। शिक्षा विभाग ने भी लिखित गृहकार्य को प्रभावशाली अधिगम का महत्वपूर्ण कारक माना है। इस संदर्भ में समय-समय पर विभाग द्वारा आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किये जाते रहे हैं। शिक्षक को अध्यापन कार्य की वार्षिक, मासिक एवं दैनिक योजना के साथ गृह कार्य की भी वार्षिक मासिक एवं दैनिक योजना बनानी चाहिए। यदि संस्था प्रधान से इसका अनुमोदन करवाया लिया जाए तो बेहतर मार्गदर्शन भी मिल सकता है।

गृह कार्य जहां शिक्षार्थी की लेखन शैली एवं आत्म अभिव्यक्ति को निखारता है। वहीं अभिभावक एवं बालक में मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्रगाढ़ करता है। अभिभावक गृहकार्य के माध्यम से विद्यालय में चलने वाली गतिविधियों से परिचित होते हैं। उन्हें अपने बच्चों की समस्याओं का पता चलता है। वे इन्हें दूर करने के प्रयास में विद्यालय से संपर्क करते हैं। इस प्रकार शिक्षक एवं अभिभावक मिलकर, बालक के भविष्य को संवारने के कारगर प्रयास करते हैं।

गृह कार्य योजना की सफलता के लिए आवश्यक है कि शिक्षक भी सच्चाई के साथ इसकी महत्ता को गंभीरता से स्वीकार करें। कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु जो इस योजना को उपयोगी बना सकते हैं, निम्न अनुसार हैः-

1. शिक्षार्थी उत्तर पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अनुक्रमणिका (Index) बनाएं।
2. गृहकार्य प्रतिदिन/नियमित अंतराल पर दिया जाए।
3. गृहकार्य में अध्याय के अंत में दिये प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यापक निर्मित प्रश्न, गत परीक्षाओं में पूछ गये प्रश्न जो शिक्षार्थी के ज्ञानात्मक, अवबोधात्मक एवं कौशल के विकास में मददगार हों।
4. विद्यालय में शिक्षार्थियों को उत्तर पुस्तिकाओं के सुन्दर एवं बेहतर रखरखाव का सलीका सिखाया जाना चाहिए। गृह कार्य सभी शिक्षार्थियों के लिये समान है इसलिये यह जानकारी प्रार्थना सभा अथवा शनिवारीय बालसभा में बच्चों को दी जानी उचित रहेगी।
5. शिक्षार्थी प्रत्येक उत्तर पुस्तिका पर कवर चढ़ाकर उस पर अपना नाम, कक्षा एवं विषय अंकित करेंगे। उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर क्रमशः क्रमांक अंकित कर देने से पृष्ठ फाड़ने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी।
6. शिक्षार्थी गृहकार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यथा स्थान दिनांक, पाठ का नाम एवं प्रकरण अंकित करेंगे।
7. गृहकार्य में प्रश्न एवं उत्तर स्पष्ट अंकित होने चाहिए। प्रत्येक उत्तर की समाप्ति पर पैन्सिल एवं स्केल से स्पष्ट लाईन अंकित की जाएं। कार्य के अंत में दो लाइन (क्लोजिंग लाइन) अंकित कर गृहकार्य का समापन किया जाए।
8. यदि किसी उत्तर में चित्र बनाना है तो स्पष्ट एवं नामांकित चित्र बनाएं। ये छोटी मगर महत्वपूर्ण बातें सभी शिक्षार्थियों के लिये समान रूप से करणीय है। यदि इन बातों को शिक्षार्थी अपनी आदत में शुमार करते हैं तो वे अनुशासित होंगे तथा उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

शिक्षक द्वारा नियमित गृहकार्य दिया जाना एवं शिक्षार्थी द्वारा नियमित गृहकार्य किया जाना जितना आवश्यक है, विषय शिक्षक द्वारा नियमित जाँच की जानी भी उतनी ही आवश्यक है। प्रायः देखने में आया हैं कि शिक्षक बिना पढ़े ही उत्तर पुस्तिकाएं जाँच देते है। आनन-फानन में सही का चिह्न भी उस स्थान पर अंकित हो जाता है जहां त्रुटि होती है। इससे यही संदेश जाता है कि शिक्षक को सही गलत की जानकारी नहीं है। शिक्षार्थी भी उस गलत को सही मानकर कंठस्थ कर लेता है। इसलिये मेरा आग्रह है कि शिक्षक उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करते समय निम्न बातों पर अवश्य ध्यान देवें-

1. अशुद्धियों पर लाल स्याही से गोला अंकित करें। साथ में सही शब्द/वाक्य लिखें भी।
2. अशुद्धियों को शुद्ध करें एवं शिक्षार्थी से फॉलोअप सुधार कार्य करवाएं। इससे अशुद्धियों की आवृत्ति कम होगी एवं शिक्षार्थी शुद्ध लेखन की ओर प्रेरित होंगे।
3. शिक्षार्थियों को साफ-सुन्दर एवं सही गृहकार्य करने के लिये प्रोत्साहित करें। अच्छा कार्य करने वालों की उत्तर पुस्तिका पर अच्छा/बहुत अच्छा अंकित करे। नियमित एवं सर्वश्रेष्ठ गृहकार्य करने वाले

शिक्षार्थी को गणतंत्र दिवस/ स्वतंत्रता दिवस/वार्षिक उत्सव के अवसर पर पुरस्कृत करें। प्रार्थना सभा एवं बालकों में भी उत्तम गृहकार्य करने वाले शिक्षार्थियों के नाम बोले जाकर उन्हें एवं अन्य शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह बहुत प्रेरणादायक कदम सिद्ध होगा।

4. गृहकार्य नहीं करने वाले, कमजोर एवं अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों पर विद्यालय में विशेष ध्यान दिया जाए। ऐसे शिक्षार्थियों के अभिभावकों से संपर्क कर एवं विचार-विमर्श कर निदान के प्रयास किये जाएं। यदि संस्था प्रधान, शिक्षक एवं अभिभावक गृहकार्य को प्राथमिकता देते हैं एवं शिक्षार्थियों को नियमित सुन्दर एवं शुद्ध लिखने के लिये प्रेरित करते हैं तो निश्चित रूप से शिक्षार्थी में शुद्ध एवं सुन्दर लेख के लिये सौन्दर्यबोध जाग्रत होगा। इससे उनकी निर्णय लेने, तार्किक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताएँ उत्तरोतर विकसित होंगी।
5. विद्यालय में पहले तो कक्षा स्तर पर उत्तम गृह कार्य करने वाले छात्र-छात्राओं की पहचान की जाए; तदन्तर विभिन्न कक्षाओं के छात्र-छात्राओं में से सर्वोत्तम को चिह्नित कर प्रार्थना-सभा, बाल सभा अथवा उत्सव/पर्व आयोजन अवसर पर उनकी पीठ थपथपाई जाए तो इसका विद्यालय के अन्य विद्यार्थीवृन्द पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
6. शिक्षक शिक्षा के दोनों मंचों यथा सेवापूर्ण शिक्षक(बीएड/ बीएसटीसी) एवं सेवारत (In Service) शिक्षक, शिक्षा में छात्राध्यापकों एवं शिक्षकों को गृह कार्य के सम्बन्ध में प्रभावी जानकारी देकर गृह कार्य कौशल से परिचित करवाना चाहिए।

इस प्रकार गृह कार्य उपागम को प्रभावी बनाने से निश्चय ही समग्र शिक्षा व्यवस्था एवं गुणात्मक दृष्टि से परिणाम उत्तम होंगे जिससे शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों को प्रसन्नता का अहसास होगा।

-सहायक निदेशक (समाज शिक्षा)
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर
मो. 9414426063

मंगल विचार

स्वाधीन भारत की तरुण पीढ़ी अपनी ऊर्जा पहिचाने

❒ द्वारकेश भारद्वाज

श्री द्वारकेश भारद्वाज अक्खी पार हैं। मगर उत्साह एवं जज्बे में किसी तरुण से कम नहीं। शिक्षा धारा में शिक्षण से जिला शिक्षा अधिकारी की यशस्वी सेवा यात्रा के अनुभव आज की पीढ़ी को बांटते रहते हैं। हमारी विनम्र प्रार्थना पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्र के तरुणों के लिए सुन्दर विचार लिखकर आपने भिजवाएं। हम आभारी हैं। आपको प्रणाम।-व. संपादक

कुमार भरत के स्वाधीन भारत की तरुण पीढ़ी का भारत के 66वें गणतंत्र दिवस पर कोटिशः अभिनन्दन/तरुण पीढ़ी तू धन्य है जिसने स्वाधीन भारत में जन्म लेकर प्रथम श्वास ली व आजादी की प्रथम सूर्य किरण देखी व ऊर्जा प्राप्त की। तरुणों ने जिस स्वाधीन भारत की शस्य श्यामला भूमि, जहाँ कोटिशः देवों का वास है, पर किलकारियां भरीं, खेले, कूदे व तरुणाई प्राप्त की उसका भार वहन कर व राष्ट्र भक्त कहना कर।

तरुण तुझ में शक्ति है, विलक्षणता है, गजब की सूझबूझ है और है स्वाधीनता के परिवेश में सुख सौरभ भोगने की ललक और बलवती तमन्ना के साथ जीवन जीने की चाह।

महान व विशाल भारत के तरूण! तू तेरी भीम तुल्य ऊर्जा को जान पहचान और अपने उन्नत भविष्य के निर्माण के लिए ज्ञानार्जन, कौशलब्ध संस्कार से अपने को पुरजोर विभूषित करने हेतु अनवरत कठिन परिश्रम व तन्मयता के साथ जुटना और अपनी अर्जित सामर्थ्य को भावनात्मक व क्रियात्मक रूप से सार्थक रूप में जमाकर भविष्य के सुखद सृजन में संलग्न व समर्पित होना। याद रहे लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारत को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ दिया था। तत्कालीन शिक्षित तरुणों में ही तो अपने राष्ट्रीय कर्तव्य, चरित्र, चाल व चेहरे की नब्ज पहचानी और मातृभूमि को आजाद करवाने हेतु अपनी सुख-सुविधाओं को तिलांजलि देकर कूद पड़े आजादी की जंग मे। राष्ट्र के लिए समर्पित हो लाठी, गोली की मार व फाँसी के तख्त पर चढ़कर ही भारत को स्वाधीन करवाकर सांस ली। यह बात तो अब से 67 वर्ष पूर्व की है।

तरुणानन्द अब तेरा कर्तव्य है कि तू भी अपने कर्तव्य व व्यक्तित्व से गुलाम भारत के जुझारू व राष्ट्र भक्त की भांति जो अब पाले अपने जीवन के सांध्य काल में जी रहे हैं या प्रभु के प्यारे हो गये है के सामने यह साबित कर दे कि अब भारत की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षित उनकी संतति जिस आजादी को उन्होंने खून पसीने से तरबतर कर पाई थी। उसे अक्षुण्ण रखने में समर्थ है। साथ ही गत 67 वर्ष के अन्तराल में यदि भारत ने कुछ खोया भी तो वापस प्राप्त करने में समर्थ है, बल है।

लाडले! राष्ट्र को तेरी सामर्थ्य, साहस व संवेदनशीलता की आवश्यकता है और है अपेक्षा भी क्योंकि अब राष्ट्र का भाग्य विधाता तू ही है। लेकिन प्रिय यह ध्यान अवश्य रहे कि तेरी सुडौल भुजाओं व मांसपेशियों की ताकत हिंसा, तोड़फोड़, जोड़ तोड़ व भीड़ भावना में लगे। तू सतपथगामी है अतः सत्ता व धन के माया मोह के लालच में तू मत फंसना। तू सतपथ गामी हो। राष्ट्र तेरी ही तरुणाई की ओर अपने विकास, उत्थान व लोकतांत्रिक व्यवस्था को गरिमा मय बनाये रखने हेतु अति संवेदनशील भाव से टकटकी लगाये बैठा ही नहीं है बल्कि बेताबी से निहार रहा है एवं कामना करता है कि तेरी बुद्धि, बल, श्रम व सूझबूझ केवल सृजनात्मक कार्यों में ही लगे न कि राष्ट्र की गरिमा में बाधक हो। भारत के तरुण बस तुझे यही करना है।

हे तरुण! तेरे से छोटे, जिनमें घुटनों चलते शिशु भी हैं व किलकारियां मारते हैं, तू उनके लिए मार्ग वह भी आदर्शों से ओत-प्रोत हो प्रशस्त कर। वे तेरी और निहार रहे हैं। तू उन्हें प्यार दे, दुलार दे और दे तेरी संस्कारित अगुवाई दे ताकि स्वाधीनता की बलिवेदी पर तेरे जन्म के पूर्व शहीद होने वालों की अमर आत्मा को तेरी करणी से शांति मिले व मौजूद इक्के दुक्के स्वतंत्रता सेनानियों जिनकी गोद में आज के तरुणों का लालन-पालन हुआ है को राष्ट्र उत्थान में तेरी भूमिका से संतोष हो। तेरी करणी व कथनी से तेरे माता-पिता, गुरुजन व समाज को गर्व हो-इसका भी ध्यान रहे। जय भारत-जय हिन्द।

बी-68 हवेली ज्ञानद्वार, सेठी कॉलोनी
जयपुर-302004
मो. 8890308564

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

नागौर : एक परिचय

❒ शमीम परिहार

नगीना की धरती नामी, नर रत्नों की खान।
जनमें हैं कई संत सूरमा, देश भक्त विद्वान।

नगाणा, नगीना, नागपुर और अहिछत्रपुर आदि कई नामों में जाने वाला शहर नागौर राजस्थान के एकदम मध्य में बसा हुआ है। अत्यंत प्राचीन नगरी नागौर एक ऐसा जिला है जिसका एक शानदार इतिहास है और यहाँ की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर आने आप में अनूठी है। नागौर के वैभव ये जीवट धरोहर महल, किले, मंदिर, दरगाह, मस्जिद और अद्भुत सौन्दर्य से परिपूर्ण कलात्मक छतरियां अपने समय के शौर्य, वीरता की गाथा बयां करती हैं। यह जिला प्राचीन काल से व्यापारिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक केन्द्र रहा है।

इनके साथ ही नागौर को भक्ति व तपोभूमि होने का गौरव भी प्राप्त है। यहां भक्त शिरोमणि मीरा बाई, फुला बाई तथा जयमल की भक्ति और ईश्वर के प्राप्ति अगाध प्रेम तथा लोकदेवता वीर तेजाजी, जंभेश्वर जी, दरियाव जी, हरिराम बाबा की कर्मभूमि तपोभूमि के अतिरिक्त इस्लाम की एक धारा 'सूफी धारा' का भी नागौर प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ सूफी सन्त हमीदुरूदीन सुल्तानुतारेकीन की दरगाह विश्व प्रसिद्ध है। मुगल सम्राट अकबर के नौ रत्नों में से दो रत्न अबुल फजल और फ्रैजी की जन्मभूमि होने का गौरव भी इस जिले को है।

यह प्राचीन नगर एक सुरक्षित मजबूत परकोटे के भीतर बसा हुआ है। इस शहर में प्रवेश व निर्गमन के लिये छः दरवाजे बने हुये हैं, और इन सभी छः दरवाजों के बाहर एक-एक तालाब (झड़ा, सम्मस, बख्त सागर, प्रतापसागर, लालसागर, गिन्नाणी तालाब) बने हुए हैं जो इनके सौन्दर्य में चार चाँद लगाने के साथ शहर में पेयजल आपूर्ति के उत्तम स्रोत भी हैं।

भौगोलिक स्थिति : नागौर जिला इसके उत्तर में बीकानेर एवं चूरू दक्षिण में अजमेर व पाली, पूर्व में जयपुर, सीकर तथा पश्चिम में जिला जोधपुर स्थित है।

जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 17710 वर्ग किमी है। आकार की दृष्टि से यह राज्य का 6वां सबसे बड़ा जिला है। जिलें में जिप्सम, मुढ़, ईमारती पत्थर, संगमरमर, चिप्स, सोडियम सल्फेट, नमक आदि मुख्य खनिज पाये जाते है। डीडवाना झील जिले की सबसे बड़ी झील है। जिलें में औसत वार्षिक वर्षा 38-40 सेमी होती है। गर्मियों में तापमान 48 डिग्री सैल्सियस तथा शीत में 7-8 डिग्री सैल्सियस रहता है। जिले के उत्तर पश्चिम में रेतीले टीले है तथा इस क्षेत्र को थार के नागौर के लिये कहावत प्रसिद्ध है-

सियाळे खाटू भली, उनाले अजमेर।
नागीणो नित रो भलो, सावण बीकानेर।।

यहां जनसंख्या घनत्व 187 वर्ग कि.मी हैं साक्षरता 64.08 प्रतिशत है। 11 पंचायत समितियों वाले इस जिले में 461 ग्राम पंचायतें तथा 10 नगरपालिकाएं हैं।

इतिहास : कर्नल टॉड ने इसका पुराना नाम नागदुर्ग बताया है वहीं संस्कृत लेखों में अहिछत्रापुर/नागपुर नाम का उल्लेख है। अहिछत्रापुर का अर्थ अहि (नाग) छत्र (रक्षाकरने वाला) अर्थात् नाग वंशियों द्वारा बसाया गया प्राचीन नगर।

लूनी नदी के किनारे से प्राप्त पाषाण कालीन साक्ष्यों से यह प्रमाणित होता है कि यहाँ ताम्र युग से भी पूर्व सभ्यता थी। यहाँ महाभारत काल में कौरवों ने भी राज किया। कुषाणों के समय शक शासकों के अधीन इस क्षेत्र के अधीन इस क्षेत्र पर गुप्त साम्राज्य तत्पश्चात चौहानों ने नागौर पर अधिकार किया। और आठवीं शताब्दी में परिहारों ने चौहानों को अपने अधीन कर लिया।

1192 में मुहम्मद गौरी ने इसे दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बनाया। 14वीं शताब्दी में राठौड़ों ने राज्य स्थापित किया। किन्तु 16वीं शताब्दी में अकबर ने राठौड़ों को अधीनस्थ कर नागौर को मुगल साम्राज्य का हिस्सा बनाया।

भारत की स्वतंत्रता तक यह जिला जोधपुर राज्य के अन्तर्गत जोधपुर महाराज उम्मेदसिंह व हनुवन्त सिंह राठौर के अधीन रहा। आजादी के बाद इसे जिले का रूप दिया गया। चूँकि नागौर प्रारम्भ से ही व्यापार का मुख्य केन्द्र था, दिल्ली व आगरा से गुजरात जाने वाला मार्ग नागौर से होकर ही जाता था।

अतः सभी मुगल साम्राज्य के शासकों ने और अनेक हिन्दु ताकतों ने आक्रमण किए और एक न एक बार अवश्य राज किया।

सांस्कृतिक धरोहर : नागौर की सांस्कृतिक धरोहर रोचक व उल्लेखनीय है। यहाँ अनेक मंदिर, दरगाह और दुर्ग है जो प्राचीन समय से ही दर्शनीय रहे हैं।

शहर के उत्तर-पूर्व में माही दरवाजा और दिल्ली दरवाजा को मिलाने वाली मुख्य सड़क पर सूफी संत हमीदुद्दीन सुल्तानुतारेकीन की दरगाह स्थित है। इसका मुख्य दरवाजा जिसे बुलन्द दरवाजा कहते हैं, 70 फीट ऊँचा है, वास्तुकला का श्रेष्ठ नमूना है। यहाँ अजमेर के ख्वाजा शरीफ से चादर लाई जाती है जिसे खादिम ऊँटनी पर बैठकर जुलूस के साथ यहाँ लाकर चढ़ाते है। सम्पूर्ण भारत में उर्स प्रथम नम्बर अजमेर का व द्वितीय नम्बर नागौर का माना जाता है और वहीं शहर के मध्य में 12वीं सदी का अति प्राचीन मंदिर नगर सेठ बंशीवाला का मंदिर स्थित है। राजा बढ़तसिंह द्वारा निर्मित इस मंदिर में बंशीवाला के साथ विराजमान राधा व रुक्मणि की मूर्तियों में हीरे जड़े हुए है। मंदिर के सुन्दर चित्र,काँच की जड़ाई, गुम्बज की उत्कृष्ट कारीगरी शिल्पकला का अद्भुत नमूना हैं।

इस मंदिर के ठीक पीछे शहर का सबसे प्राचीनतम तथा उत्कृष्टतम स्थापत्य कला से निर्मित ब्रह्माणी माता का मन्दिर है। यूं तो यहां सभी जाति के भक्तगण आते हैं किन्तु विशेषकर जाटों व ओसवालों की कुलदेवी हैं।

शहर में जैन सम्प्रदाय के तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का मन्दिर स्थित है। यह अन्दर से अलग-अलग रंगों के काँच की अत्यंत खूबसूरत कारीगरी से सुसज्जित है इसीलिये इसे कांच के मन्दिरों के नाम से भी जाना जाता है।

प्राचीन स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना

नाथ समुदाय का कीर्तिस्थल नाथों की छतरी नागौर शहर के पास में ही स्थित है।

बांगड़ परिवार द्वारा निर्मित अत्यंत सुन्दर व बड़ा गुरुद्वारा श्री सतगुरु दयाल का है, जिसे उनका उनके अनुयायी चला रहे हैं।

नागौर का दुर्ग : शहर के एकदम बीचोंबीच यह दुर्ग स्थित है, इस स्थल को गांधी चौक के नाम से जाना जाता है। इसके निर्माण में इतिहासकारों में मतभेद है। इस दुर्ग के भीतर सिरेपोल, सूरजपोल, धूपीपोल, गणेश पोल तथा राजपोल नामक पोल है।

इसमें अनेकों खूबसूरत कलात्मक महल है-हाडी रानी का महल, जनाना महल, बख्तसिंह का महल, शीशमहल, दीपक महल, आभा महल आदि।

नागौर दुर्ग में स्थित बादल महल अत्यंत भव्य व सुन्दर कलात्मक है, इसमें कलात्मक भित्ति चित्र बने हुए हैं। साथ ही इसमें संगमरमर का बना पानी का कृत्रिम झरना और स्नानघर बने हुए हैं। दुर्ग के भीतर गणेश मन्दिर, कृष्ण भगवान, माताजी व भैरव का मन्दिर है।

नागौर जिले में विभिन्न किले, महल, छतरियां, मन्दिर, दरगाह, मस्जिद जिनालय यहाँ के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्वरूप को दर्शाते हैं। यहाँ लोक देवता के रूप में हरीराम बाबा, वीर तेजाजी, जाम्भोजी की तपोभूमि के अलावा यहाँ कई पर्यटन स्थल भी हैं। मेड़तासिटी में प्रसन्न मुद्रा में वीणा बजाते हुए देव गिरधर गोपाल के ध्यान में लीन मीराबाई की आकर्षक मूर्ति है। इस मंदिर के सम्बन्ध में कृपया अन्तिम आवरण पृष्ठ अवलोकन करें।

नागौर शहर से लगभग 35 किमी. पर गौठ मांगलोद में दाधीच ब्राह्मणों की कुलदेवी दधिमति माता का मन्दिर है। महामारु शैली में तथा इसका शिखर नागर शैली में निर्मित है। यह प्रतिहार कालीन स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण है।

नागौर जिले के पींपासर गाँव में विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक संत जाम्भोजी का जन्म 1451 में हुआ, इन्हें विष्णु भगवान का अवतार माना जाता है।

औद्योगिक समृद्धि : उद्योगों में समृद्ध नागौर जिलें में मकराना क्षेत्र का संगमरमर उद्योग प्रमुख है। यह क्षेत्र राजस्थान में ही नहीं वरन सम्पूर्ण भारत में विख्यात हैं। आगरा का ताजमहल, विक्टोरिया महल, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, मुकाम का जम्भेश्वर धाम आदि भवन इसी पत्थर द्वारा सुन्दरता के नमूने हैं।

नागौर शहर "औजारों की नगरी" के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ हस्त निर्मित औजार बनाये जाते हैं। प्राचीनकाल में तोप आदि शस्त्र निर्माण में और वर्तमान में बिना आधुनिक मशीनों और बिना बिजली के उच्च गुणवत्ता के हस्त औजार बनाने का श्रेय नागौर के मुल्तानी लुहारों को ही है।

इनके अतिरिक्त चीनी मिट्टी व अभ्रक के विशाल भण्डार के साथ-साथ टंगस्टन व उच्च श्रेणी के चूना-पत्थर व जिप्सम के क्षेत्र मे यह भारत का सबसे बड़ा खनन क्षेत्र हैं।

जिले के नागौरी नस्ल के बैल कठिन परिश्रम के कारण अलग पहचान रखते हैं। श्री रामदेव व पशु मेला, मेड़ता सिटी के श्री बलदेवराम पशुमेला पशुओं की खरीद फरोख्त हेतु प्रसिद्ध है।

नागौर का गर्व : जिले की धरा को गौरवान्वित करने वाले अनेकों देशभक्त सपूतों ने यहाँ जन्म लिया। आजाद हिन्द फौज-प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध तथा सन् 1962, 1965 व 1971 के युद्ध में तथा श्रीलंका शान्ति मोर्चा में यहाँ के सपूतों ने देश के लिये प्राणों की आहुति दी जो अत्यन्त भावपूर्ण है।

शैक्षिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में लाडनू का जैन विश्वभारती संस्थान साधना, सेवा, अनुसंधान व चरित्र निर्माण हेतु राष्ट्रीय जैन संत आचार्य तुलसी द्वारा ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय है।

भारत में पंचायती राज की स्थापना सर्वप्रथम नागौर में हुई। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 गाँधी जयंती के दिन दीप प्रज्ज्वलित कर यहाँ पंचायती राज व्यवस्था का शुभारंभ किया।

इस प्रकार नागौर जिला अपने सांस्कृतिक, शैक्षिक, औद्योगिक एवं सामाजिक वैभव के कारण पूरी दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। नागौर जिले की उपलब्धियों पर न केवल राजस्थान प्रदेश अपितु संपूर्ण भारत देश गौरवान्वित है।

-प्रधानाध्यापिका,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, चाण्डासर (बीकानेर)
मो. 9460522654

श्रद्धांजलि

माफ कर देना हमें, ए बच्चो!

❒ सुसन भाटिया

16 दिसम्बर 2014 इतिहास के पृष्ठों पर लिखा वह काला दिन है, जब पाकिस्तान के पेशावर प्रान्त के आर्मी पब्लिक स्कूल में तालिबानी दहशतगर्दों ने एक बर्बर नरसंहार में 145 व्यक्तियों की सिर पर गोली मार कर हत्या कर दी। इसमें 132 मासूम बच्चे एवं स्टाफ सदस्य थे। इस तकलीफ को बयान करने के लिए शब्द नहीं है। शब्द मौन हो गये हैं। इन्सानियत रो उठी। धरा का हर शख्स सकते में है। घर और विद्यालय की जो निर्जीव दिवारें बच्चों की खिलखिलाहट से गूंजती थी, आज गमगीन है। सूर्य सांझ होने से पहले ही अस्त हो गया। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे भविष्य वर्तमान बनने से पूर्व ही ध्वस्त हो गया।

माँ ने सुबह कुछ डाँट कर, कुछ दुलार कर अपने बच्चों का स्कूल जाने के लिये जगाया होगा। बहुत प्यार से टिफिन तैयार थमाया होगा। बाबा अपने बच्चों को स्कूल छोड़कर आये होंगे। माँ-बाबा को क्या पता था जिस बच्चे को लाड-प्यार से बड़ा किया, जिसके सुन्दर भविष्य के सपने वे दिल में संजोये थे, उसे आखिरी बार हँसते हुए विदा कर रहे हैं। उन्हें नहीं पता था कि उनके बच्चे की गोलियों से छलनी, लहु-लुहान लाश चार कंधों पर ताबूत में वापस आयेगी।

बच्चे तो माँ-बाबा के जीवन की पूंजी होते हैं। उन्हें देखकर वे खुश होते हैं। उनकी हर साँस ईश्वर से उनकी सलामती की दुआएँ मांगती है। हर सोच बच्चे की बेहतरी के स्वप्न देखती है। माँ बेटे के सेहरे का सपने देखती है, बाबा बेटी की विदाई के सपने संजोते है। सब कुछ समाप्त हो गया। अब तो चारों ओर दर्द ही दर्द है।

ये मासूम दहशतगर्दों के सामने गिड़गिड़ाए तो होंगे। दहशत में रोये भी होंगे। रहम की भीख भी मांगी होगी। लेकिन उन दरिंदों को दया नहीं आई। वे मासूमों की चीखों

से भी नहीं पिघले। जरूर वे सभी इन्सानी वेश में हैवान ही थे। हे ईश्वर! ...क्या कोई इतना निष्ठुर भी हो सकता है। तूने इन दहशतगर्दों को सद्बुद्धि क्यों नहीं दी। वे बच्चे तो एक बार में ही खत्म हो गये। उनके माँ-बाबा हर रोज मरते हैं। उनके जीवन में हमेशा के लिए मातम पसर गया। उनका घर-संसार उजड़ गया। शब्दकोश में ऐसे शब्द बने नहीं है जो उन बाल पालकों को सांत्वना दे सकें।

धिक्कार है दहशतगर्दों के पालकों पर जिन्होंने अपने बच्चों को जन्म तो दिया लेकिन वे बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दे पाये। धिक्कार है उस देश की शिक्षा एवं शिक्षकों पर जो बच्चों को सही गलत में अन्तर नहीं समझा पाए। धर्म की आड़ में आतंकी संगठनों द्वारा इस प्रकार किया गया खून खराबा पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले भी अलगाववादियों की बर्बर सोच ने वीभत्स हत्याकाण्डों का अंजाम दिया है। भारी संख्या में जन एवं भारी मात्रा में सामाजिक सम्पतियों को क्षति पहुंची है। हर घटना पर हम सभी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए निन्दा करते हैं, लेकिन अब समय आ गया है, विश्व की बड़ी ताकतें, संयुक्त राष्ट्र संघ के एक मंच पर आकर इन्सानियत विरोधी ताकतों के विरुद्ध कठोर निर्णय लेकर उन पर लगाम लगाए। विभिन्न देशों के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद हो सकते हैं लेकिन जनहित एवं सद्भावना के मुद्दे पर सबको एकमत होना आवश्यक है।

इस वीभत्स हत्याकांड में मरने वाले बेगुनाह बच्चों एवं स्टाफ को श्रद्धांजलि और उन परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना जिनके बच्चे एवं प्रियजन इस कायरतापूर्ण हमले में असमय कालकलवित हो गए। ईश्वर उन्हें इस अपूरणीय क्षति एवं सहन करने की शक्ति प्रदान करें। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे राह भटके दहशतगर्दों को भी सद्बुद्धि देवें ताकि वे सही एवं गलत में अन्तर समझ कर गलत राहों को छोड़ें और सद्मार्ग का अनुसरण करें।

-व्याख्याता, राजनीति विज्ञान
रा.उ.मा. विद्यालय, दफ्तरी चौक, बीकानेर
मो. 7728919166

रपट

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल
'एकलव्य' एवं 'मीरा' पुरस्कार समारोह

जयपुर। डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन शिक्षा संकुल के प्रशासनिक भवन में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की अप्रैल-मई 2014 में आयोजित कक्षा-10 एवं 12 की परीक्षाओं के परिणाम की घोषणा का आयोजन माननीय शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी के मुख्य आतिथ्य में रखा गया।

समारोह में ओपन स्कूल कक्षा 10 व 12 के परीक्षा परिणामों की घोषणा शिक्षा मंत्री श्री देवनानी जी द्वारा कम्प्यूटर पर क्लिक कर की गई। कक्षा 12 में टॉपर छात्र हिमांशु सोनी (अजमेर) एवं कक्षा 10 में टॉपर छात्र हाफिज मोहम्मद वाहिद (सवाई माधोपुर) को 'एकलव्य पुरस्कार' से रु. 5100 रुपये का चैक देकर सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार छात्राओं में 'मीरा पुरस्कार' कक्षा-12 में टॉपर रही गीता सोनी (जयपुर) तथा कक्षा-10 में टॉपर रही एक समान प्राप्तांक छात्रा उषा कंवर (आमेर) एवं शीला शर्मा (लालसोट-दौसा) को भी 5100 रु. का चैक देकर सम्मानित किया गया।

शिक्षा मंत्री श्री देवनानी ने औपचारिक शिक्षा से वंचित स्वयंपाठी छात्रों के स्टेट ओपन स्कूल परीक्षा की ओर रुझान को सराहा। स्टेट ओपन स्कूल सचिव श्री दयाराम महरिया ने परीक्षाओं में बढ़ती छात्रों की संख्या का उल्लेख करते हुए छात्रों द्वारा प्राप्तांकों में आश्चर्यजनक वृद्धि को गुणवत्ता शिक्षा का संकेत बताया।

समारोह में ओपन स्कूल निदेशक श्री अंतरसिंह नेहरा के साथ समस्त उपनिदेशक (मा.शि.), डॉ. राजेश व्यास, सहायक निदेशक (जनसम्पर्क) एवं अभिभावकगण उपस्थित थे।

-मोहन मितवा, जयपुर
मो. 9414265628

निदेशालय का स्थापना दिवस

बीकानेर। शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ द्वारा 16 दिसम्बर, 2014 निदेशालय परिसर में शिक्षा विभाग की स्थापना के 65 वर्षों के इतिहास में तृतीय बार 'राजस्थान शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बीकानेर (पूर्व) की विधायक सुश्री सिद्धी कुमारी, अध्यक्ष श्री अरविन्द सिंह विश्नोई वित्तीय सलाहकार तथा विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्र लाल गोस्वामी रहे। समारोह में पाँच सेवानिवृत कर्मचारी तथा पाँच निदेशालय में कार्यरत कर्मचारियों को उनके द्वारा विभाग में की गई उत्कृष्ट सेवा एवं योगदान के लिए सम्मानित किया। सेवानिवृत कर्मचारी सर्वश्री नन्दकिशोर व्यास, कन्हैया लाल सेवग, भवानी सिंह माथुर, बद्री नारायण श्रीमाली एवं रमेश जोशी के अलावा कार्यरत कर्मचारियों में प्रदीप सिंह, विश्वप्रिय आचार्य, रिपुसूदन बरड़वा, द्वारका प्रसाद व्यास एवं पवन छीपा सम्मिलित थे।

समारोह को राजेश व्यास, प्रदेश संरक्षक, शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ ने संबोधित करते हुए कहा कि संघ लगातार तीन वर्षों से इस कार्यक्रम को मना रहा है जिसमें सभी साथियों का सहयोग प्राप्त हो रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस कार्यक्रम को शासकीय स्तर पर मनाये जाने का प्रयास किया जावेगा साथ ही शिक्षा प्रशासन एवं उपस्थित विधायक से अनुरोध किया कि शिक्षा निदेशालय को सुदृढ़ बनाने में अपनी महती भूमिका अदा करें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सिद्धी कुमारी ने आश्वस्त किया कि शिक्षा निदेशालय को मजबूत करने का पूर्ण प्रयास किया जाएगा। सभा को कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अरविन्द सिंह विश्नोई, संघ के कार्यवाहक प्रदेशाध्यक्ष राधेश्याम पुरोहित, पंकज भटनागर, सुरेश व्यास, अविनाश व्यास, रामनाथ आचार्य ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री मदन मोहन व्यास ने किया।

-राजेश व्यास, बीकानेर
मो. 9530218999

तीजो रूप

लेखक : पवन पहाड़िया, प्रकाशक : नेह प्रकाशन, गाँव-पो. डेह (नागौर), संस्करण : 2014 पृष्ठ सं. : 106 मूल्य : ₹ 100.00

राजस्थानी लेखन सृजन के क्षेत्र में श्री पवन पहाड़िया लोक-चेतना के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपनी लघु-कथा संग्रह "तीजो रूप" में वर्तमान ग्रामीण अंचल के लोक जीवन की सच्चाइयों को प्रस्तुत कर लोक-संस्कृति को नई दिशा दी है।

पहाड़िया जी विगत कई वर्षों से मायड़ भाषा राजस्थानी से जुड़ाव रखते हुए निरंतर रचना-कर्म द्वारा माटी की सौंधी खुशबू फैला रहे है। आज भी समाज में भूख गरीबी अशिक्षा, अंधविश्वास के दल-दल में आम आदमी फँसा है। निराश व हताश युवा रोजगार पाने की आस में कई जुगाड़ कर रहा है। ऐसे में लघु कथा द्वारा रचना-प्रक्रिया करना जैसे- उसकी स्वयं की भोगी पीड़ा अनुभव, अंतस की आवाज नये सुलगते प्रश्नों के माध्यम से जीवन के अनेक पाठ खोजने के प्रयास किये हैं।

"तीजो रूप" लघुकथा संग्रह की कहानियां जन-मानस से सीधे संवाद कायम करती है। व्यक्ति से रू-ब-रू होकर उसे सुख-दुख, उल्लास-पीड़ा, स्वप्न संघर्ष की बात उसी आम व्यक्ति की भाषा में व्यक्त करती है। कागज, कलम, स्याही और अनुभव की जहाँ तक बात है लेखक ने लोक-संस्कृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। उनका लेखन लगभग तीस-बत्तीस वर्ष पुराना अनुभव लिये विस्तृत समृद्धि का खजाना है। हर कहानी एक नवीन आयाम प्रस्तुत करती निश्छल संवेदना से स्पर्श कराती है। इससे पूर्व इनकी पुस्तकें "बषाऊड़ी" और "नीतरयो नीर" राजस्थानी साहित्य जगत में खूब सराहना पाई। "तीजो रूप" जिसमें कुल (77) सत्तहत्तर लघु कहानियां है ग्रामीण स्त्री-पुरुष के आम जीवन की समस्याओं, संबंधों को अलग-अलग भावों, विचारों से नए-नए तरीके से परखती है। कहानी "इज्जत" सचेष्ट मन। स्थिति दर्शाती है तो समाज में फैली झूठी परंपराओं पर स्पष्ट विरोध करते हुए वर्तमान जीवन स्थिति का आभास कराती है। "सापता", "पुत्र", "नाचोगा", "चानणो", "लाय", "दरद" जैसी कहानियां जीवन के हर-क्षण को नये अनुभव के साथ प्रस्तुत करती है। दैनिक जीवन से जुड़ी समस्याएं यथार्थ के साथ भोगकर गहरी सोच में डूबोती है। ये लघु-कहानियां किसान के जीवन-दर्शन को प्रतिबिंबित करती है। "दानी", "चरचा", "भांड", मूषाई", "बरसी", "सैंसकार", "तीजो रूप", "चेलो", "आस", "सरद", "अपरलो", "भागी" जैसी कहानियां सामाजिक विसंगतियों पर करारा जवाब देती है। शिक्षा के बावजूद ग्रामीण भोलेपन को रेखांकित करती हैं कहानी "तीजो रूप"।

कहानी ग्रंथ का मुख पृष्ठ आकर्षक होने के साथ-साथ राजस्थानी पहचान बनाने व देखते ही दिल में लोक आनंद से आह्लादित करता है। कहानियों की भाषा में समाहित गूढ़, वाक्यांश, ठेठ ग्रामीण बोल-चाल के शब्द, सहज, सरल अपने-आप में अनूठापन लिए अपनी मायड़ भाषा के विभिन्न रंग बिखेरती है।

लोक-मानस के चितेरे अनुभवी अध्येता और गहरी सोच रखनेवाला लेखक ने लोक-जीवन के पथ चलते पथिक की तरह जीवन-मर्म हृदयंगम कर अपने लेखन को जन-मन को लौटाया है। पुस्तक की छपाई उत्कृष्ट है। शैली सहज, सुबोध है। पाठकों को प्रेरणा-पाथेय प्राप्त मिलेगी। निःसंदेह यह पुस्तक सभी को लोक-चेतना जाग्रत कर लोक-शिक्षण को आगे बढ़ाने का माध्यम भी बन सकती है।

डॉ. कृष्णा आचार्य
रा.बा.उ.मा.विद्यालय, लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर

फ़्ने तालीम और नफ़्सियात

लेखक : अकमल नईम सिद्दीकी, प्रकाशक : मौलाना आजाद पब्लिकेशन, जोधपुर, संस्करण : 2014 पृष्ठ सं. : 80 मूल्य : ₹ 100.00

यह पुस्तक स्कूल व्याख्याता उर्दू के पाठ्यक्रमानुसार सम्पादित की गई है। वैसे शिक्षा एवं शिक्षा मनोविज्ञान पर उर्दू में पुस्तकें उपलब्ध हैं लेकिन वे राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन के पाठ्यक्रमानुसार नहीं लिखी गई हैं। इसलिये एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी जिसमें फ़्ने-तालीम औ नफ़्सियात (शिक्षा कला और शिक्षा मनोविज्ञान) पर से सम्बन्धित समस्त सामग्री उपलब्ध हो। इसी के ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए एक छोटी सी पुस्तक लिखी गई है। इस पुस्तक में समस्त सामग्री अति संक्षेप में व्यवस्थित ढंग से पेश कर दी गई है। इससे छात्रों को बहुत लाभ होगा। यद्यपि इतने बड़े पाठ्यक्रम को मात्र अस्सी पृष्ठों में नहीं समोया जा सकता, इस लिये लेखकों ने मुख्य बिन्दु लिखना ही उचित समझा है। इन बिन्दुओं को याद करके हो सकता है परीक्षा में प्रश्नों को हल कर सकें मगर इतनी कम और अति संक्षिप्त सामग्री से शिक्षा एवं शिक्षा मनोविज्ञान की समझ पैदा नहीं हो सकती। पुस्तक को निम्न छः अध्यायों में विभाजित किया गया है-

1. तदरीसो- इक्तिसाब में नफ़्सियात की अहमियत (अध्ययन व अध्यापन में मनोविज्ञान का महत्त्व)
2. सीखने वाले की नश्वनुमा (विद्यार्थियों का विकास)
3. तदरीसो-इक्तिसाब (अध्ययन व अध्यापन)
4. ज़हनी तन्दरूस्ती (मानसिक स्वास्थ्य) तसव्वुर (परिकल्पना)
5. सिने बुलूग में तदरीस की हिकमते-अमली
6. (किशोर अवस्था में अध्यापन की योजना)

इत्तिला व मवासिलात, तकनीक और फ़्ने तालीम का इन्तिमाम (सूचना, तकनीक एवं शिक्षा का अनुकूलन)

पुस्तक के अध्ययन से साफ़ जाहिर होता है कि हिन्दी या अंग्रेजी में उपलब्ध परीक्षा सामग्री को उर्दू में रूपान्तरित किया गया है, और इस रूपान्तरण में लेखक काफी हद तक कामयाब भी हुए हैं। लेकिन कई स्थानों पर शब्दावली बड़ी अजीब हो गई है, जिस कारण उर्दू में इस विषय पर लिखी गई पुस्तकों का लेखकों के सामने न होना भी हो सकता है या कोई और कारण रहा हो। बहरहाल लेखकों ने Terms लिख दी हैं जिस से छात्रों को यकीनी तौर पर लाभ होगा। लेकिन कुछ Terms का सहीह उर्दू अनुवाद नहीं हो सका है। जिस से छात्रों में भ्रम की स्थिति पैदा हो सकी है। जैसे Psychology of Society का अनुवाद नफ़्सियाते समाज के बजाए समाजी नफ़्सियात होना चाहिये। कुछ और मिसाले देखिए-

किरदार का तामीरी का तमाम पर कारोबार यहां कारोबार के स्थान इन्हिसार लाया

जा सकता है (पृ. 12) तालिबे इल्म के किरदार की वज़ाहत (पृ.15) वज़ाहत के स्थान पर तफ़हीक की जरूरत है। मुतनासिब शख्सियात (पृ. 15) मुतनासिब की जत्रा मुतवाज़िन मोजूं है। Problem का अनुवाद दुश्वारी (पृ. 27) के बजाए मसअला होना चाहिये। Insight का अनुवाद इन्किशाफ के बजाए दर्क या दाख़्ली बसीरत मुनासिब होगा (पृ. 28) Factor का अनुवाद अनासिर के स्थान पर अवामिल किया जाना चाहिये था। (पृ. 30) Teaching Learn Correction का अनुवाद दर्सों शक्तिसाब के अमन में में तअल्लुक और रक्त की जरूरत के बजाए तदरीस एवं इक्तिसाब का रब्ते-बाहमी ज़्याद मुनासिब है। (पृ.33) Group Factor Theory का अनुवाद मजमउल अमिल नजरिया किया है इसके स्थान पर गिरोही अवमिल का नज़रिया किया जा सकता है। (पृ.49) Vocational का अनुवाद हएफ़ती के स्थान पर पेशा वाराना किया जाए तो बहतर है। (पृ.54) Multimedia का कसीरूल वसीत अनुवाद भी बड़ा अजीब सा लगता है। इसको कसीर ज़राए इब्लाग किया जा सकता है। (पृ.56)

इसके अलावा इमला की ग़लतियां भी राह पा गई हैं, शायद प्रूफ रीडिंग सही तरीके से न हो पाई हो। बहरहाल इन सब के बावजूद यह पुस्तक कुछ न होने से कुछ होना बहतर है के मिस्दाक स्वागत योग्य है। आशा है कि इसके दूसरे एडीशन में राह पा गई गलतियों को नहीं दोहराया जाएगा एवं विषय वस्तु को और तफ़सील के साथ पेश किया जाएगा। वस्तु को और तफ़सील के साथ पेश किया जायेगा। किताब देखने में बहुत खूबसूरत है और अच्छे काग़ज़ पर छापी गई है।

डॉ. मोहम्मद हुसैन
अध्यक्ष, उर्दू विभाग, डूंगर महाविद्यालय बीकानेर

भारतीय संस्कृति के उन्नायक

लेखक : डॉ. सत्यकाम, **प्रकाशक** : यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा, **संस्करण** : 2012 **पृष्ठ सं.** : 160 **मूल्य** : ₹250.00

डॉ. सत्यकाम की समीक्ष्य कृति ''भारतीय संस्कृति के उन्नायक'' रंग-बिरंगे और सुवासित पुष्पों का एक चित्ताकर्षक गुलदस्ता है। डॉ. सत्यकाम का विषय चयन अति विस्तारित है। एक ओर उन्होंने वैदिक काल के मंत्रदृष्टा ऋषि दार्म्य से अपनी पुस्तक को प्रारंभ किया है तो दूसरी ओर अधुनातन विभूति शहीद प्रतापसिंह बारहठ की जीवनी को चित्रित किया है। पुस्तक का शीर्षक पूर्वतः संगत है क्योंकि विषयवस्तु में उन सभी महापुरुषों को प्रतीक रूप में समाहित करने का प्रयास किया गया है, जिनका भारतीय संस्कृति में योगदान है। इस प्रकार काल को दृष्टि से पुस्तक वैदिक, पौराणिक, ईसा पूर्व एवं ईस्वी संवतों तक विस्तृत है।

काल के साथ ही विषयवस्तु पर विचार करें तो डॉ. सत्यकाम ने समाज, परिवार, राष्ट्र, राजनय, शासन, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान, धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, प्रशासन, मायावरी, क्रांति और बलिदान की कथाओं को अपनी पुस्तक में समावेशित करके जीवन के सभी पक्षों को बाल-सुलभ कराने का सफल प्रयास किया है।

इन कहानियों के माध्यम से लेखक ने जिन जीवन मूल्यों को प्रतिपादित किया है, उनमें से कतिपय का यहां उल्लेख करना प्रासंगिक होगा-संयम-साधना-अनुशासन और लक्ष्य बेध, सत्यमेव जयते, बाल साहस, राम राज्य हमारा आदर्श, निष्काम कर्मयोग, करूणा, अहिंसा, आदर्श राजनय, अर्थनियोजन में सदाचार, नैतिकता, वात्सल्य, अस्पृश्यता निवारण, विवेक, बालिका शिक्षा, पाखंड-खंडन, यतो धर्मस्ततो जय, सत्यशोधक समाज, स्त्री शिक्षा के भारतीय आदर्श, स्वातंत्र्य, वेदांत चिन्तन, इदं राष्ट्राये-इद न मम्, श्रम शक्ति की राष्ट्र निर्माण में भूमिका, 1916 से बीजारोपित निःशुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, सर्वोदय-भूदान-जीवन दान, शहीदों की चित्ताओं पर लगेंगे, हर बरस मेले, सम्पूर्ण क्रांति, समाजवाद -राष्ट्रवाद, भाषा विज्ञान, जय जवान-जय किसान, परमाणु शक्ति, इतिहास, किसान आन्दोलन, अनाम उत्सर्ग की प्रेरणा देते नींव के पत्थरों के जीवन चरितत्र अर्थात क्या कुछ नहीं है-इस पुस्तक में जीवन के जिस क्षेत्र में भी जिस किसी व्यक्ति ने भारतीय संस्कृति की उन्नति में स्वयं को स्वाहा किया, उस प्रत्येक व्यक्ति को स्मरणांजली अर्पित करने का स्तुत्य प्रयास लेखक ने किया है किन्तु ऐसा करने पर स्वाभाविक ही अगणित समसामयिक महापुरुषों को समावेशित करना संभव नहीं होता। इसलिए डॉ. सत्यकाम ने वैदिक तथा पौराणिक युग से ऋषि दार्म्य, अष्टा वक्र, श्रीराम, श्रीकृष्ण, भरत और फिर गौत्तम बुद्ध को समाहित करते हुए ऐतिहासिक युग में प्रवेश कर लिया। इस कालखंड से आचार्य चाणक्य तथा सम्राट अशोक महान् को पुस्तक में स्थान देकर डॉ. सत्यकाम मध्य युग में प्रवेश कर लेते है। मध्ययुग में वे संत-साहित्यकार और भक्ति काल की, जो कि भारत का पुनर्जन्म काल माना जाता है, कहानियों को मनोरंजक शैली से हृदयाग्राही ही स्वरूप में प्रतिष्ठित करते है। इसी युग में राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और रानी दुर्गावती को भारतीय शौर्य तथा स्वाभिमान के प्रतीक रूप में चित्रित करते हैं।

आधुनिक युग में प्रवेश करने के बाद तो डॉ. सत्यकाम की लेखनी अविश्रान्त प्रवाहमान हो जाती है। आधुनिक युग की 44 विभूतियों को अपनी पुस्तक में स्थान देकर उन्होंने हमारे समक्ष युग बोध को बहुआयामी रूप से साकार कर देने का सफल प्रयास किया है। डॉ. सत्यकाम किसी सीमा में नहीं बंधे, जहां भी उन्हें अग्निबीज के दर्शन हुए, जहां भी उन्हें मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव दिखाई दिया, जहां भी उन्हें राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर प्राणों के दर्शन हुए, वहीं रुक कर उनकी लेखनी ने राष्ट्र की पवित्र श्रद्धा, उन बलिदानी वीरों के लिए समर्पित की है। वे एक ओर श्रीमती इन्दिरा गांधी और पं. जवाहर लाल नेहरु के राष्ट्रीय योगदान को स्मरण करते है तो वही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी की अमिट राष्ट्रनिष्ठा के प्रति प्रणन्त होते हैं। एक ओर महात्मा गांधी तो दूसरी ओर जयप्रकाश नारायण और डॉ. राममनोहर लोहिया के व्यक्तित्व पर वे प्रकाश डालते है। दादाभाई नौरोजी, मैडम कामा की अर्थनीति व देशभक्ति तो डॉ.स.राधाकृष्णन की शिक्षा और दर्शन को देन भी उन्होंने उल्लिखित की है। इस प्रकार 63 महापुरुषों की जीवन यात्राओं के सार को कहानी और लेख की मिश्रित विधा में प्रस्तुत करके लेखक ने एक ऐसी पुस्तक की रचना की है जो हमें हमारे अतीत से वर्तमान तक के गौरव से परिचित कराती है। पुस्तक में कुछ ऐसे चरित्र भी हैं जिनके नाम

विख्यात हैं पर उनकी जीवनी अल्पज्ञात है। इन चरित्रों को स्थान देना सराहनीय है।

यह पुस्तक महापुरुषों के जीवनकाल में झाँकने का अवसर देती है, इस प्रकार यह पाठक में स्वाध्याय की प्यास जगाती है। स्वाध्याय की प्यास का जग जाना, पुस्तकों को पढ़ने की रुचि जाग्रत हो जाना आधुनिक युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मेरे मन में भारतीय संस्कृति के उन्नायक नामक इस पुस्तक से पाठकों में अपने देश, समाज, सभ्यता और संस्कृति के अध्ययन के प्रति अनुराग का बीजारोपण होगा। पुस्तक मत-मतान्तरों से उल्लित और सर्वस्पर्शी जीवनदृष्टि को लेकर लिखी गई है, तदर्थ लेखक साधुवाद के पात्र है। यह भी हर्ष का विषय है कि स्वयं लेखक के तीन पूर्वजों ने आजादी के लिए जेल यात्रा की।

यह सत्य है कि भारतीय संस्कृति के उन्नायकों की एक अनन्त श्रृंखला है, इसलिए लेखक के समक्ष चयन की गुरु गंभीर समस्या रही होगी तथापि थोड़ा गंभीर प्रयास करके भविष्य में वे अपने चयन को अधिक तर्क संगत बना सकते हैं। पुस्तक की साज-सज्जा को और अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है। पुस्तक का मूल्य उचित है। पुस्तक पुस्तकालयों, बालकों, महिलाओं सहित सभी वर्ग-आयु के पाठकों में देशभक्ति के भाव जगाने वाली है। लेखक का प्रयास सफल है।

-जानकी नारायण श्रीमाली
अधि-विधि एवं शिक्षा स्नातक
ब्रह्मपुरी चौक, मौहल्ला, चूनगरान, बीकानेर

सांवत सतसई

लेखक : सांवतराम कासणियां 'प्रेमी', **प्रकाशक :** कासणियां प्रकासण, मुन्नी आश्रम के पास, मेड़ता सिटी (नागौर), **संस्करण :** 2014 **पृष्ठ सं. :** 88 **मूल्य :** ₹ 250.00

भारतीय वाङ्मय में 'सतसई' लिखने की सुदीर्घ परंपरा रही है। सतसई का शाब्दिक अर्थ सात सौ है। इस काव्य में अधिकांशतः दोहा छंद का प्रयोग ही देखने का मिलता है, चाहे वह बिहारी रचित सतसई हो अथवा राजस्थानी में सूर्यमल्ल मिश्रण रचित 'वीर सतसई'। यह अलग बात है कि वीर सतसई अधूरी कृति है और इसके दोहों की संख्या तीन सौ से अधिक नहीं है। 'सतसई' काव्य की इसी श्रृंखला में सांवतराम कासणियां 'प्रेमी' ने राजस्थानी भाषा में ही 'सांवत सतसई' की रचना की है, जो उनके सामाजिक सरोकारों और शिक्षा-जगत से जुड़े अनुभवों की सहज-सरल अभिव्यक्ति है। इसमें दोहों की संख्या 704 है, जो सतसई की सम्पूर्णता की साख है।

छंदशास्त्र में दोहे की अपनी महत्ता है और इसका प्रभाव इतना प्रबल है कि लोक-व्यवहार में बात-बात पर इसे उद्धृत किया जाता है। बिहारी की सतसई के दोहों के गांभीर्य और व्यंग्य-व्यंजना को लेकर रचे गये दोहे से हम सभी परिचित हैं, लेकिन दोहे की महत्ता को लेकर राजस्थानी का यह दोहा भी उतना ही लोकप्रिय है :

छोटी तुक रौ दूहरौ, गीत-कवित रौ भूत।
जैसे हरि बलि छळण रौ, रच्यौ 'ज बावन रूप।।

राजस्थानी छंदशास्त्र में दोहे के अनेक भेद बताए गए हैं-दोहा, सोरठ, बड़ा दोहा, तूंबेरी दोहा, खोड़ा दोहा, चोटिया दोहा, चूडाळ दोहा इत्यादि। परंतु दोहे का शुद्ध और सर्वमान्य रूप तो पहले और तीसरे चरण में 13-13 तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राओं का ही है। यह एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है, जिसकी गेयता और लयात्मकता के लिए लघु-गुरु के प्रयोग का विशेष महत्व है।

कवि सांवतराम कासणियां प्रस्तुत पुस्तक में 'मंडाण' शीर्षक के अंतर्गत राजस्थानी में दोहों के चार प्रकार बताते हुए लिखते हैं- ''म्हारौ लगाव दूहा, सोरठा अर कुंडळिया सूं बचपण सूं ई रयौ अर म्हैं ईं सतसई री रचणा कीनी।'' परन्तु पुस्तक के प्रथम दोहे के प्रथम चरण (संकट हरौ मां शारदा) में ही 14 मात्राएं अखरती हैं। चरण का प्रारंभ इस प्रकार भी किया जा सकता था- 'संकट हर मां शारदा'। राजस्थानी में दोहों के कई भेद हैं किंतु इस सतसई को अद्योपांत पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है कि श्री कासणियां ने शुद्ध दोहे का ही प्रयोग किया है।

सतसई के प्रारंभ में कवि ने मां शारदा के साथ अपनी जन्मभूमि से जुड़े लोक देवी-देवताओं और संतो-भक्तों की महिमा में भी कुछ दोहे रचे हैं, यथा :

मीरां दासी किसन री, नाच-नाच गुण गाय।
कासी जावै द्वारका, मथुरा दौड़ी जाय।।

कवि श्री कासणियां ने अपनी इस सतसई में नीति के पक्ष में अनेक दोहों की रचना की है वहीं अनीति और अत्याचार करने वालों पर भी व्यंग्य-बाण बरसाये हैं :

हंसा हा सो उड गिया, बुगला बैठा आय।
संत बण्या तीरां खड़ा, चुग-चुग मैंढ़क खाय।।

श्री कासणियां का काव्य-चिंतन समाज में शिक्षा के गिरते स्तर के साथ युवा पीढ़ी में धूम्रपान और मद्यपान के बढ़ते प्रचलन को लेकर भी प्राजंल रूप से दृष्टिगोचर होता है और वे इसकी भर्त्सना करने से नहीं चूके हैं :

भणबा जावै छोकरा, जेबां गुटका लेय।
गुरुजन बणग्या गोठिया, आधा-आधा लेय।।
छाछ राबड़ी भूलग्या, पीवण लग्या सराब।
गहणौ-गांठौ बेचियौ, हालत करी खराब।।

कवि ने राजस्थान की वन-सम्पदा, यहां की प्राकृतिक छटा और भौगोलिक स्थिति का भी अपने दोहों में प्रतीक और उपमा के रूप में उपयोग किया है :

कैर कुमटिया खेजड़ी, गूलर और पलास।
चैत फूलड़ा फूटरा, खिलै न बारहों मास।।

बारहमास में राजस्थान में मनाए जाने वाले तीज-त्यौहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं को भी श्री कासणियां ने 'सांवत सतसई' में बखूबी उकेरा है। सतसई के इन दोहों में सम्पूर्ण राजस्थान का मनोहारी चित्रण तो हुआ ही है, राजस्थानी भाषा की मरोड़-मठोठ और मिठास भी मिलता है। राजस्थानी में 'बैण सगाई' अलंकार विशिष्ट माना जाता है। प्रस्तुत सतसई में इसका अलंकरण यत्र-तत्र सहज रूप से हो गया है। कवि की इसके लिए कोई प्रतिबद्धता दृष्टिगत नहीं होती।

दोहों में मात्रा और लघु-गुरु के प्रयोग में कहीं-कहीं दिखाई देती त्रुटियों के साथ संख्यात्मक त्रुटियां भी रही हैं। दोहा संख्या 264 और 698 की अदला बदली हो गई है। यह भूल कम्प्यूटर अथवा प्रेस की भी हो सकती है। अगले पृष्ठ पर राजस्थानी में पुस्तक का शीर्षक 'सांवत सतसई' और द्वितीय पृष्ठ पर अंग्रेजी में Rajasthani dooha भी अखरता हैं इसमें दो राय नहीं कि विद्वतद्वय देवकिशन राजपुरोहित और जहूरखां मेहर ने अपने दो आखरों से काव्य की महत्ता को उजागर करते हुए 'सांवत सतसई' के चार चाँद लगा दिए हैं। प्रौढ़ कवि श्री कासणियां की काव्य-प्रतिभा को प्रणाम।

-शंकरसिंह राजपुरोहित, राजस्थानी समालोचक
राजपुरोहित रैवास, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर

प्रतिध्वनि

स्वामी विवेकानन्द और राजस्थान

भारत वर्ष के उत्कर्ष में राजस्थान के अवदान को लेकर अक्सर चर्चा सुनने में आती है। ऐसे उदाहरण दिल को सुख व सुकून देते हैं। राजस्थान के लिए यह बात आज ही नहीं, सदियों से चली आ रही है। वस्तुत: ब्रिटिश काल में तत्कालीन राजपूताना की देशी रियासतों ने यह परम्परा स्थापित की थी। एशिया के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना एवं उसके विकास में बीकानेर रियासत के 21वें महाराजा गंगासिंह के योगदान को आप शिविरा में पढ़ चुके हैं। (देखिए प्रतिध्वनि, शिविरा माह जुलाई 2014) अब बात जयपुर राज्य के शेखावाटी प्रान्त में स्थित खेतड़ी के राजा अजीतसिंह की करते हैं। राजा अजीतसिंह बड़े विद्याप्रेमी थे। गणित एवं विज्ञान उन्हें बहुत प्रिय थे। दर्शन और आध्यात्म में उनकी गहरी रुचि थी। उनके स्वामी विवेकानन्द के साथ मित्रवत सम्बन्ध थे। वे दोनों हम उम्र जो थे। विवेकानन्द महीनों उनके यहां रहे थे। उनकी घनिष्ठता बेमिशाल थी यहां तक कि राजा अजीतसिंह ने ही उन्हें विवेकानन्द नाम रखने का सुझाव दिया था, उनकी मित्रता एवं आत्मीयता को बताने के लिए निम्न दृष्टान्त पर्याप्त होंगे–

1. स्वामी जी के विश्व धर्म सम्मेलन, शिकागो में जाने के लिए सभी प्रकार की व्यवस्थाएं खेतड़ी नरेश अजीतसिंह द्वारा की गई थी। इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने स्वयं यह कहा है–"What little I have done for the improvement of India would have not been done if Rajaji had not met me." यदि राजाजी (अजीतसिंह) मुझे नहीं मिलते तो कदाचित जो थोड़ा बहुत मैं भारत माता के लिए कर पाया, उसे नहीं कर पाता।
2. स्वामी विवेकानन्द अपने आध्यात्मिक बल एवं स्वाध्याय से जब विश्व में भारत की वेदान्त पताका फहराने में व्यस्त थे, तभी उन्हें देश में अपनी माँ की चिन्ता रहती। विवेकानन्द जैसे संस्कारी पुत्र का अपनी मातुश्री के लिए चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। एक तरफ माँ, दूसरी तरफ देश और तीसरे स्वयं का आर्थिक दृष्टि से सम्बलवान न होना। लक्ष्मी और सरस्वती का मेल कम ही जगह देखने का मिलता है। ऐसे में क्या करते युवा विवेकानन्द! महाराजा अजीतसिंह को बस पता लगने भर की देर थी। उन्होंने स्वामीजी को चिन्तामुक्त करते हुए उनकी माँ के लिए प्रति माह 100 रुपये की सहायता शुरू कर दी। वे बराबर उनकी सार सम्भाल भी करते/करवाते एक पुत्र की भाँति। यह उल्लेखनीय है कि स्वामी जी की माँ के लिए खेतड़ी रियासत की ओर से यह मासिकवृति विवेक बाबू के असमय परलोकगमन के बाद भी तब यथावत जारी रही जब तक उनकी माँ जीवित रहीं।

खेतड़ी नरेश महाराजा अजीत सिंह का जन्म 16 अक्टूबर 1861 को हुआ था। इस प्रकार वे स्वामी विवेकानन्द के हमउम्र थे। अजीतसिंह विद्वत्जनों के पारखी व आश्रयदाता थे। विवेकानन्द को वे आध्यात्मिक एवं मानसिक उन्नति का भण्डार मानते थे और स्वयं के लिए जब-तब यह खुराक उन्हीं से ही प्राप्त किया करते थे। वे जब कभी अवसाद में होते तो विवेकानन्द उसे दूर करते। एक बार की बात है। जयपुर राजघराने की ओर से अजीतसिंह को सत्ताच्युत करने के लिए एक षड़यन्त्र रचा गया। अजीतसिंह इससे परेशान थे। तभी स्वामी विवेकानन्द ने अपने मित्र का उत्साह बरकरार रखने के लिए बहुत सुन्दर पंक्तियां लिखकर उन्हें भेजीं। उन्होंने लिखा, "Who on earth possess the Power to put the Raja of Khetri down? The devine mother is at his elbow!" अर्थात इस पृथ्वी पर खेतड़ी नरेश को नीचा दिखाने की ताकत किसमें है जबकी योगमाया ब्रह्माणी माता की शक्ति उनके साथ है।

स्वामी विवेकानन्द और महाराजा अजीत सिंह का सम्पर्क निरन्तर बना रहता था। वस्तुत: **लक्ष्मी (अजीतसिंह)** और **सरस्वती (विवेकानन्द)** के इस मणिकांचन योग से ही शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भारत को इतनी गरिमा और उच्च स्थान प्राप्त हो सका। इस कल्पना से ही सिहरन होती है कि यदि अर्थ व्यवस्था नहीं हो पाती तो सरस्वती पुत्र विवेकानन्द कैसे उस विश्व मंच पर पहुँच पाते जिसमें भारतीय दर्शन का परचम लहराते हुए उन्होंने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया और वह हिलोर आज भी कायम है। जब हम भारत को विश्व गुरु की बात करते अथवा सुनते हैं तो जो छवि प्रथमत: नयनमण्डल में उभरकर आती है वह मोहक छवि विवेकानन्द की ही होती है, किसी और की नहीं। उन्हें यह उच्च स्थान दिलाने में राजस्थान का योगदान जानकर हमारे दिल में गौरवानुभूति होनी ही चाहिए। आखिर राजस्थानवासी होने के कारण हम उसके हकदार जो हैं।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा खेतड़ी नरेश को लिखी एक अत्यन्त भावपूर्ण पद्यमाला यहाँ प्रस्तुत है जिसका हिन्दी अनुवाद शिविरा के इसी अंक में ''इस माह का गीत'' स्तम्भ में दिया गया है–

Hold on Yet A While, Brave Heart

(Written to the Rajaji Bahadur of Khetri)

If the sun by the cloud is hidden a bit
If the welkin shows but gloom
Still hold on yet a while, brave heart!
Tne Victory is sure to come.
No winter was but summer came behind,
Each hollow crests the wave,
They Push each other in light and shade,
Be steady than and brave.
The duties of life are sore indeed,
And its pleasures fleeting vain,
The goal so shadowy seems and dimd,
Yet plod on through the dark, brave heart
With all thy might and main.
Not a work will be lost, and no struggle vain,
Though hopes belighted, powers gone,
Of thy loins shall come the heirs to all?
Then hold on yet a while, brave soul,
No good is e'er undone.
Though the good and wise in life are few,
Yet theirs are the reins to lead;
The masses know but late the worth,
Heed none and gently guide.
With thee are those who see afar,
With thee is the Lord of might,
See blessings hover on thee great soul,
To thee may all come right.

स्वामी विवेकानन्द द्वारा लिखित एवं राजा अजीतसिंह को भिजवाई गई यह पद्यमाला बुझे दिलों में उत्साह की चिनगारी प्रज्वलित कर जोश व उमंग की तरंगे प्रवाहित करने वाली है। खेतड़ी संग्रहालय में संजोए 'विवेकानन्द समग्र' हम राजस्थानियों के लिए मानसिक एवं आध्यात्मिक खुराक बनना चाहिए। राजा अजीतसिंह की शानदार विरासत के रुप में हम करोड़ों राजस्थानी हैं। हमें विवेकानन्द की उपर्युक्त काव्य भेंट को उनके आशीर्वाद के रूप में अपने हृदय में संजोना और तद्नुकूल आचरण करना चाहिए। विवेकानन्द जी अब हमारे मध्य नहीं है, लेकिन विवेकानन्द विचारधारा व परम्परा कायम है जो चिरजिन्दा रहेगी।

इस उज्ज्वल परम्परा का अनुगमन करने से हमारा प्रान्त भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं अपितु ज्ञान व विज्ञान की दृष्टि से देश का नम्बर वन अग्रिम प्रान्त बन सकेगा। इससे हमें विवेक के साथ आनन्द की अनुभूति होगी और हम सही मायने में विवेकानन्द बन सकेंगे। शिविरा के सुधि पाठकों को नव वर्ष 2015 के लिए हार्दिक बधाई एवं कोटि-कोटि शुभकामनाएं !

–ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी 2015 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © कार्यकारी सम्पादक : ओमप्रकाश सारस्वत, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

शिविरा, जनवरी, 2015
चित्र समाचार

बीकानेर

शिक्षा निदेशालय, बीकानेर का स्थापना दिवस 16 दिसंबर 2014 को समारोहपूर्वक मनाया गया। (बाएं) सम्मानित मंच एवं उपस्थित कार्मिक तथा (दाएं) समारोह में पुरस्कृत कर्मचारी समारोह की मुख्य अतिथि सुश्री सिद्धी कुमारी, माननीया विधायक, बीकानेर (पूर्व), विशेष सलाहकार प्रारंभिक शिक्षा श्री अरविन्द विश्नोई एवं आयोजकों के साथ।

जोधपुर

रा.उ.मा.विद्यालय, बेटवासिया (जोधपुर) को टी.वी. भेंट करते हुए श्री गजेन्द्रपाल सिंह भाकर एवं प्राप्त करते हुए प्रधानाचार्य श्री गिरधारी राम विश्नोई।

बूंदी

रा.बा.उ.मा. विद्यालय में एसबीबीजे एवं अंकित निम्बार्क की ओर से जरूरतमंद छात्राओं को जर्सियां वितरित करते माननीय विधायक श्री अशोक डोगरा, मैनेज श्री जी.एम. देवधाणी एवं प्रधानाचार्या श्रीमती तेज कंवर।

अलवर

राजकीय बालिका उ.मा. विद्यालय, बड़ौद (अलवर) में आयोजित आत्मरक्षा शिविर और एसयूपीडब्ल्यू शिविर में रंगोली बनातीं छात्राएं।

अजमेर

राजकीय आदर्श उ.मा. विद्यालय, चांपानेरी अजमेर के एसयूपीडब्ल्यू शिविर को संबोधित करते हुए अतिथि।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

मीरा बाई का मन्दिर, मेड़ता सिटी (नागौर)

एक प्रसिद्ध धार्मिक पद में कहा गया है-मीरा जनमी मेड़ते, परणाई चित्तौड़। इस प्रकार भक्त शिरोमणि मीरा बाई का जन्म नागौर के मेड़ता स्थान पर हुआ था। मेड़ता शहर में मीरा बाई का भव्य मन्दिर बना हुआ है। मेड़ता शहर के लगभग हृदय स्थल पर बने इस मन्दिर को चारभुजा नाथ मन्दिर के नाम से भी पहचाना जाता हैं। इस मन्दिर का निर्माण मीरा बाई के पितामह ने करवाया था। इस मन्दिर के प्रति जनमानस में अपूर्व आस्था एवं विश्वास हैं। मेड़ता शहर में स्थित इस भव्य मीरा मन्दिर के साथ ही मेड़ता से 32 किलोमीटर दूर अवस्थित भवाल माता का मन्दिर भी अतिशय श्रद्धा व भक्ति का स्थान हैं। जायल तहसील के गोठ मांगलोद गांव में स्थित दधिमाता का मन्दिर भी जन-जन की श्रद्धा व सम्मान का स्थल है। ये सभी मन्दिर स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं। मेड़ता शहर में स्थित मीरा म्यूजियम भी दर्शनीय स्थान हैं।

सौजन्य : डॉ. सुधीर रूपाणी, प्राध्यापक (भूगोल), आई.ए.एस.ई., बीकानेर मो. 9001024365